ॐ

❀ श्रीवीतरागाय नमः ❀

श्रीज्ञान थोकड़ा संग्रह

चौथा भाग

संग्रह कर्त्ता—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोदान सेठिया,

मोहल्ला मरोटियोंकी गवाड़,

बीकानेर, राजपुताना (देश मारवाड़)।

Bhairodan Sethia,

MOHALLA MAROTIAN

Bikaner Rajputana.

MARWAR J. B. RY.

कीमत अमोल (अमूल्य)

प्रथमावृत्ति १००० प्रति

वीर संवत् २४४८

विक्रम संवत् १९७८

ई० १९२१

PRINTED AT THE
"CHITRAGUPTA PRESS."
BY RAMSAHAI VARMA
147 Cotton Street, Calcutta.

॥ शुद्धि-पत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
छ	७	ज्ञांन	ज्ञान
छ	९	सविस्तर	सविस्तार
ह	११	थित	स्थिति
ड	७	सागरोमनी	सागरोपमनो
१२	९	अननाध्यवसाय	अनाध्यवसाय
१३	१५	आने	अने
१४	१३	स्रोनी	स्त्रीनी
१८	६	परमात्मा	परआत्मा
२४	१३	छं	छूं
३३	११	कर्य्य	कार्य्य
३८	८	तकथा	तथा
३८	१६	व्यापर	व्यापार
४०	६	मव	भाव
४१	११	असंख्यता	असंख्याता
४६	५	नयकी	नयको
६१	१८	आ श्रावक	ये श्रावक
६२	५	विद्वान	विद्वान से
७३	१२	आत्मके	आत्माके
७४	८	सम्यक्तत्वादि	सम्यक्त्वादि
८४	१५	हेत्वभासके	हेत्वाभास
१०६	४	आकाशवंत्	आकाशवत्
१०७	९	वर्णायादि	वर्णादि
११०	१३	वग्ग	वर्ण
१२५	१०	जाह	जाय
१२८	४	अवल	अचल
१५२	१२	उटरो	ऊंटगे
१६२	२	न्यायवादी	न्यायवादी
१६४	१३	न्ययवादी	न्यायवादी

नोट:—हेडिंग और नोट के लाईन छोड़ कर पंक्ती (ओली) देखो ।

॥ अनुक्रमणिका ॥

नय ।

निक्षेपा ४ पन्ना, ५-६६ से ७५

७ नय उपर दृष्टान्त।

॥ श्रीगौतमाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञानीको सदा, वन्दु वे कर जोड़ ।
गुरु मुखसें धारण करो, अपनी जिद्को छोड़ ॥
जिन वचन तहमेव सत्य, समभाव नहीं तांण ।
जतनासें वाचो, सही, येही प्रभुकी वांण ॥

सूचना ।

यह पुस्तक यत्नसें रक्खे । आदिसे अन्त तक वाचे ।

उघाड़े मुख तथा चिरागके चानणों नहीं वाचें; पद, अक्षर, ओछो, अधिको, आगो, पाछो, तथा कानो मात, मिंडी, ह्रस्व, दीर्घ, अशुद्ध, टूटी भाषामें लिख्यो हुयो विद्वान कृपाकर शुधार लेवें संग्रह-कर्ताकी यही नम्र विनती है ।

श्रीवीतरागाय नमः

मंगला चरण ।

चतुर्विंसति जिणाणं सगण धराणं,
स मुनिवर परिकराणं ॥
त्रिकाल त्रिकाल मस्तकेन वन्दामि,
णमो अरि हंताणं ॥
णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवझायाणं ॥
णमोलोए सव्व साहुणं,
एसो पञ्च णमो कारो,
सव्व पावप्पणासणं, मंगलाणंच
सव्वेसिं पढमं हवई मंगलं ॥

॥ दोहा ॥

अरिहंत तारण तिरणको,
ध्यान धरो मन सुद्ध ॥
द्वादस गुण उद्धारतां,
प्रगटे परं सुबुद्ध ॥ १ ॥

अष्ट करम घण दग्ध कर,
प्रगट्यो पूरण ब्रह्म ॥
अष्ट गुणो सम्पन्न है,
निय(निज) गुण आतम रम्म॥२॥
आचारज आराधतां,
निर्मल अप्पा (आत्मा) थाय ॥
छत्तीस आठ गुण सम्पदा,
सेव्यां शुद्ध मति थाय ॥ ३ ॥
उपाध्याय शुद्ध पाठ सुं,
पठन क्रियाना जाण ॥
गुण पच्चीसें पुरीया,
विमल बुद्धि विज्ञान ॥ ४ ॥
रत्नत्रय साधन थकी,
जे साधे शिव पंथ ॥
सत्तावीस गुण साधतां,
सेवो गुरू निग्रन्थ ॥ ५ ॥
ज्युं अंजन संजोगसे,
नयन रोग मिट जाय ॥

त्युं पांचो पद समरतां,
मिथ्या तिमिर पुलाय ॥ ६ ॥
शुद्ध उपदेशक शुद्ध गुरु,
सेव्यां उपजे ज्ञान ॥
पत्थरकी प्रतिमा करे,
गुरु कारीगर जान ॥ ७ ॥
ज्युं साधु संगति थकी,
शुद्धरे आत्म ज्योत ॥
अनुभव दीपक हाथमें,
निज घर होय उद्योत ॥ ८ ॥
भारी करमी जीव को,
धर्म वचन न सुहाय ॥
ज्युं ज्वर व्यापित देहमें,
अरुची अन्नकी थाय ॥ ६ ॥
तिम मिथ्यात्व ज्वर जोर से,
न हलै अनुभव ज्ञान ॥
विषय कषाय मिथ्यात थी,
होय सुमत की हान ॥ १० ॥

जेहनी भव थिति घट गई,
तेहने छे उपदेश ॥
भारी करमी जीव को,
लगे नहीं लव लेश ॥ ११ ॥

॥ अथ गाथा ॥

नाणं च दंसणं चेव,चरित्तं च तवो तहा ।
एय मग्गमणपत्ता, जीवा गच्छंति सुगई ॥ १ ॥

॥ व्याख्या ॥

नाण कहिए सम्यक ज्ञान ।१। द० दर्शन कहिए तत्व श्रद्धा, शुद्ध सम्यक् सर्दहणा ॥ २ ॥ च० व्रती चारित्र कहिए, आश्रव रूंधवो ।३। त० तप कहिए इच्छानि रोधन ।४। ए० ४ मार्ग नें विषें मण् प० अनुप्राप्त कहिए केडे । पहुंत्या थकां । जी० । जीव गच्छंति जाइ सुग इ० भली गति ते मोक्ष गमण प्रतें इत्यर्थः

ज्ञानंच १ दंसणं चेव २ चारित्रयुत्त तपोतथा।
मोक्ष मार्ग स्यनेतारं,जिणे भणिया चत्रु विधा१।

॥ हिवें सिष्य प्रश्न करेंछें ॥

अहो स्वामीजी मोक्ष मार्गना पोचावणहार। ४ कह्या। ते मांहिं प्रथम ज्ञान कह्यो ते स्यूं, ग्यान थी पहिला दर्सन कह्यो जोईजें। दर्शन पूर्वक ग्यान कह्योछें, पहिला दर्सन होय तो, पछें ग्यान थाय, नादंसणिस्सनाणं। इति वचनात्। पहिला दर्शन क्यूं न कह्यो। इम पूछ्यां थकां गुरु कहेंछें। अहो सिष्य ए तो सत्यछें परं व्यवहारनय करी, प्रथम ज्ञान कह्यो। जीवादि पदार्थनो जाणपणो थाय, ते विवहार ज्ञान, अनें जीवादि पदार्थनो। अविपरीतपणें, सर्द्दहिवो ते दंसण। तेजीवादि ६। पदार्थ। अविपरीतपणें सरदह्या। पछे निश्चें ज्ञान थाय, ते निश्चें ज्ञान तो सुद्ध सर्दहणाथी होय ते माटें प्रथम दर्शन पछें ज्ञान इम कह्यो। अनें विव-

हार ज्ञान विना सुद्ध सर्दणा न होय, तें माटें पहिला ज्ञान पछें दर्शन कह्यो। विवहारे प्रथम ग्यान पछें दर्शन। पछें चारित्र पछें तप इम कह्या, निश्चेनयें प्रथम दर्शण थी गुण रूपश्रेणि चढवो कह्यो, इत्युत्तरं। मोक्षमार्ग४ मांहिं॥ पहिला ज्ञान कह्यूं, ते ग्याननो अर्थ। संक्षेप पणें कहेंछें।

॥ गाथा ॥

तछपंचविहंनाणंसुय ॥१॥ अभिणिवोहियं। २। ऊहिनाणं चतइयं मणनाणं च केवलं ।१। जिणें करी वस्तुनो स्वरूप जाणिए ते ग्यान कहिए, ते ग्यानका पांच भेद केहा। सुयं०। श्रुतज्ञान ।१। आभिनिवोधिक ते मति ग्यान ।२। अवधी ज्ञान। ३। मनपर्यव ज्ञान ४। केवल ज्ञान ।५।

॥ हिवें अर्थ कहें ॥

सांभलयां थी प्रगटें ते श्रुत ग्यान ॥ तेहना १४ भेद ॥ आपणेंइ विकल्पेंकरी। स्वमेयव प्रगटें

ते मति ग्यान। तेहना २८ भेद प्रभवप्रत्यय तथा कर्मनें चयोपसमें करी मर्यादा द्रव्य चेत्र काल भावना थाय, ते मर्याद वरतो अवधी ज्ञान। तेहना ६ भेद मनपर्याय जाणें ते मन पर्यव ज्ञांन ॥ अढ़ी द्वीप वासी सन्नीपंचेंद्री पर्यासना मनोगत भाव जाणें। ते मन पर्यव ज्ञांन, तेहना २ भेद। विमुलरुजु सर्वजाणें, ते केवल ज्ञान। तेहना १ भेद। इम ५ ज्ञानना इकावन भेद कह्या नंदी सूत्रें। सविस्तर पणें घणा भेद पिण कह्या।

॥ यतः ॥

ज्ञानं पंच विधं प्रोक्तं श्रुत ज्ञानं विसेपन जेन श्रवणमात्रेण, प्राप्यतेपरमंपदं ।१। मति ज्ञान १ श्रुत ज्ञान २। अवध ३। मनपर्याव ४।

केवल ५। मंतेपू। श्रुतज्ञानंविसेपत ।१। ज्ञान ५ मांहिं श्रुत ज्ञान मुख्य छें विसेप छें।

सिष्य पूछें श्रुतज्ञान विसेष किम इम पूछां गुरु उत्तर कहे छें।

संविवहारक श्रुतज्ञानछें उपदेस समुदेस अज्ञा॥ इत्यादिक श्रुतज्ञानमें लाभे॥ स्वयस्वरूप परस्वरूप, कहवाने समर्थ। श्रुतज्ञानही छें॥ अणजोग व्याख्यान श्रुतज्ञान नोहीज छें॥ अणु जोगद्वारे। चत्तारि नाणाइ ठवनाइ ठप्पयाज्ञान।४।स्थापवा योग्यछें, स्वउपगार छें। उपदेस रूपनथी,जे मति ज्ञान प्रमुपं ४ ज्ञानथी, परजीवनें उपगार कीधो न जाय, तिण वास्तें परउपगारी। श्रुतग्यानहीज छें॥ जेश्रुतग्यान सूणतां परम मुक्त पद पामियें ते श्रुत ज्ञान मुक्तिनो मोटो निमत्त कारण छें, निकट कारण

छे श्रुत ज्ञान थी सुणतां जीवने शुद्ध रुचि शुद्ध श्रद्धा, शुद्ध प्रतीत उपजे छे वले आत्मानो भव निजपर ज्ञान श्रुत ज्ञान सुणतां हीं प्रगट हुवे छै तेहीज परमपदनेहीज परम विवेक छै इहां कारण ने विषे कार्य नो उपचार किधो छे मोक्ष नो कारण श्रुत ज्ञान छै वले जिण श्रुत ज्ञान विषे षट द्रव्य नव पदार्थ सत (सात) भंगी सत नय च्यार प्रमाण च्यार निक्षेपा इत्यादि अनेक विचार भाव भेदनी परूपणा छैं तें सूणतां विवेक उपजे दसवीकाले कह्यो।

सोच्चा जाणइ कहनाणं सोच्चा जाणइ पावगं उभयं पिजाणइ सोच्चा जसेयंतं समायरे।

॥ उक्तंच ॥

श्रुत्वा धर्मं विजानाति श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिं श्रुत्वा ज्ञान मवाप्नोति श्रुत्वा मोक्षंच

गच्छति तिण वास्ते श्रुत ज्ञान नो उद्यम अवश्य करवो श्रुत ज्ञान नो संयोग जीवनें पामवो अत्यंत दुर्लभ छे।

॥ उतराध्ययन त्रीजे अध्ययनें गाथा कही॥

माणुस्संविग्गहंलद्धुं । सूइधम्मस्सदुल्लहा ।
जंसूंच्चापडिवज्जंति । तवखंतिमहिसयं ॥१॥

इम जाणी अहो भव्य जीव श्रुत ज्ञान सुणवानो तथा भणवानो उद्यम अवश्य कीजे श्रुत ज्ञान नो संयोग पामीने पूर्वें पुडरीकादि गणधर घणा जीव तरया तथा वर्त्तमान काले महाविदेह क्षेत्रामें वीस तीर्थंकरनी वाणी सांभल ने घणा जीव तरे छे अनागत काले श्रीपद्मनाभ तीर्थंकरनी वाणी द्रढपइन्न प्रमुख सांभली घणा जीव तीरसी (तरस्ये) आज पिण जे श्रुत ज्ञान ने भणस्यें सांभलस्ये अंतरंगे श्रद्धा रुचि

प्रतीत करसे ते सूलभ बोधि हुसे परंपरायें मुक्ती पद पामसे ।

॥ उत्तराध्ययन गाथा ३६ मां ॥

जिणवयणे अणुरत्ता। जिणवयण जेकरंति भावेण अमलाअसंकिलठा । ते हुंति परित्त संसारी ॥ १ ॥

इत्यादि विस्तार श्रुत ज्ञान नो मुख्यता पणो वतायो ते श्रुत ज्ञान सम्यग दृष्टिने होवे छे मिथ्यात्वी ने श्रुत अज्ञान होवे छे ते कारणे सम्यक्त प्रगट थावानो निमत्त कारण श्रुतज्ञान सुत्र सिद्धांतनो सांभलवो छे ते सम्यक्त नो निमत्त कारण जाणवो जे भणी श्रुत ज्ञान नो विचार भाषा रूप संक्षेप पणे कहिए छे तिहां प्रथम तो ज्ञान जीवने छे ते जीव किण प्रकारे भ्रमण करे छे ते कहेछे जीवाभिगम सूत्र नें अनुसारे नित्य भ्रमण दिखावे छे जीव अनादियो छे तिहां प्रथम घर जीव नो निगोद छे जे निगोद

मांहि परिभ्रमण करतां अनंत काल चक्र वीत-
जाय जद पृथवी (१) अप (२) तेउ (३) वायु
(४) वनांस्पती प्रत्येक (५) बेंद्री (६) तेंद्री (७)
चोरिंद्री (८) पंचेंद्री (९) तिर्यंच (१०) नारकी
(११) देवता (१२) मनुष्य (१३) इत्यादि ८४
लष्य जोनमें ४ गतिमें ८ कर्म ने वसी पड्यो
नाना रूप धरतो जन्म जरा रोग सोग विजोग
मरण इत्यादि दुखे पीड्यो परिभ्रमण करे छे
किवारे नरक वेदना किवारे परवस्यनी वेदना
किवारे गर्भावासमें किवारे भूख किवारे तृषा
किवारे छेदण भेदण वंधण इत्यादि दुख अनु-
भवतां इम भ्रमण करता अनंत काल गमायो
अनंत पुद्गल परावर्तन किधा निज गुण भूल्यो
पर गुण राच्यो आप आपरो भेद ना पिछाण्यो
जिम मद्य पान कियां व्यामोहप्रव्यलता मूढता
उपजे तिम अनादि मिथ्यात्व पणे गहिलवत
स्वगुण भुल्यो निज अवस्था थी विकल थई रयो

छे सो काल लवधी पामीने जीव को ई त्रिक-रण करेछे प्रथम यथा प्रवृत्ति करण ॥१॥ वीजो अपूर्व करण ॥२॥ तीजो अनिवृत्ति करण ॥३॥

॥ हिवे अर्थ कहे छे ॥

तिहांयथा प्रवृत्ति करण यो कहीए जे ८ कर्म ते मांहि ज्ञानावरणी (१) दर्सनावरणी (२) वेदनीकर्म (३) अंतरायकर्म (४) ए ४ कर्मनी स्थिती तीस कोड़ा कोड़ सागरोमनी छे ते ३० कोड़ा कोड़ी मांहि २६ कोड़ा कोड़ि स्थिति भोगवी १ कोड़ा कोड़ सागरोपम नी स्थिति रहे अने नाम कर्म अर गोत्र दोय कर्मनी २० कोड़ा कोड़ सागरोपम नी थित छे तेमाहिं उगणवीस कोड़ा कोड़ खपावे एक कोड़ा कोड़ि सागर रहे, मोहनी कर्मनी सीत्तर (७०) कोड़ा कोड़ी सागरोपम नी स्थिती छे ते मांहि उगणहत्तर कोड़ा कोड़ी सागर खपावे १ कोड़ा कोड़ि सागर रहे इम सात कर्मनी स्थिती एक

एक कोड़ा कोड़ि सागर रहे तिस प्राणियारे उदा-
सीनता रूप परिणाम थाय छे संसार ना दुख
थी उद्वेग पामे छे वैराग्य रूप थाय छे पुद्गलीक
सुख थी मन उभग्यो नथी ए सुख नी अभि-
लाषा धरे छे आत्मीक सुख नो विवेक न थयो
एहवी अवस्था मिथ्यात्वी ने पण थाय छे. ते
यथा प्रवृत्ति करण कहिए ए प्रथम करण सर्व
जीवाने अणंतवार थाय छे।

॥ हिवे बीजो अपूर्व करण कहे छे ॥

ते जो एक कोड़ा कोड़ी सागरोपमनी
थिती रहीथी ते मांहि थी मुहर्त्त नी स्थिती
ओछी करने खपावे बाकी स्थिती आण राखे
१ मुहर्त्त नी स्थिती बाकी रहे अनादि
मिथ्यात्व अणंतानु बंधी स्थिती मुहूर्त्त प्रमाणे
रहे बाकी खपावे तद [तव] हेय उपादेय
वांछा रूप अपूर्व करण कहीजे हेय अज्ञान
उपादेय ज्ञान ए वांछा रूप एहवो जे परिणाम

अपूर्व कहतां पहिला कदेन आव्यो एहवो जे परिणाम ते अपूर्व करण ए बीजो करण सम्यक्त योग्य जीव ने थाय।

॥ हिवे तीजो अनिवृत्ति करण ते कहे छे ॥

जे मुहुर्त रूप स्थिती मिथ्यात्व नी रहि हुंती ते खपावे अने निर्मल शुद्ध सम्यक्त पामें मिथ्यात्व नो उदय मिट्यो तव जीवउपसम सम्यक्त पावे ते अनंतानुवंधी की चोकड़ी [४] मिथ्यात्व मोहनी [५] मिश्र मोहनी [६] सम्यक्त मोहनी [७] ए सात प्रकृत्ति उपसमावे तो उपसम सम्यक्त कहीए अने एहीज सात प्रकृती खपावे तो चायक सम्यक्त कहीए अने ६ प्रकृति नो अण उदय थाय जे उदह आवेसो खपावे और सत्ता में है सो उपसमावे सम्यक्त मोहनी नो उदय हे ते चयोपसम सम्यक्त कहीए एहवा जे सम्यक्तवंत परिणाम ते अनिवृत करण

कहीए इण अनिवृत करण कीधो सूं गंठी भेद थावे ते गंठी भेद यो कहीए, मिथ्यात्व रूप जो गंठी अनादि नी छे ते गांठ नो भेद किधो तिहां आवस्यक नीयुक्ति मांहे।

॥ जागंठीतापढं ॥ १ ॥ गंठीसमछेउभवं बीउ ॥ २ ॥ अनियट्टिकरणं । पुणसम्मत्त ॥ पुरपंड़े जीव ॥ १ ॥ उसरसूद दुल्लिपंच । विज्झादवणदवो । पणयइयमिछत्तस्स अण् देए ॥ छवसमसम्मंलहइजीवो ॥ १ ॥

इम मिथ्यात्व नो उदय मिट्यां जीवने सम्यक्त गुण प्रगट थावे जे शुद्ध सद्दयण रूप जे सम्यक्त नाना प्रकार छे पर इहां मूल ठाय नय छे विवहार सम्यक्त (१) बीजो निश्चय सम्यक्त (२) ए २ सम्यक्त छे तिहां विवहार सम्यक्त यो कहीए-देव अरिहंत (१) गुरू साधु शुद्ध मार्ग प्ररूपक (२) धर्म केवली भाषित (३) ए ३ तत्वने ओलखे सेवे, कुगुरु कुदेव कुधर्म ने

सेवे नहीं आगम सप्त नय च्यार प्रमाण च्यार निक्षेपा द्रव्य क्षेत्र काल भाव सामान्य (१) विशेष (२) ए निश्चे [१] विवहार [२] एवं सर्व पूर्वोक्त वचन शुद्ध आगम परूपे सद्दहने विवहार सम्यक्त कहीए ए पूर्वोक्त सम्यक्ती नो विवहार छे ए व्यवहार सम्यक्त अभव्यने पिण संभवे छे ए विवहार आराध्यां विनां उपरली थेवे किम जावे ते व्यवहार सम्यक्त कहीये ए पुन्यनो कारण छे तथा धर्म प्रगट करवानो कारण छे एहवी रुचि ज्ञान विना घणा जीवा ने उपजे एहवो सम्यक्तनो व्यवहार जीवने अनंतीवार पाम्यो छे नवमां पूर्व नी त्रीजी वत्थु लगी अभव्यो जीव भणे छे अने परूपे छे पिण अंतरंग आत्म स्वभाव नो ओलखी शुद्ध सद्दहणा पिण ना पावे ते व्यवहार सम्यक्त कहीजे ।

॥ निश्चे सम्यक्त कहे ॥

निश्चेदेव आत्मा हीज छे सिद्ध सरूपी आत्मा तथा देवने आत्माही देव जाण (१) संग्रह सत्तगवेषना निश्चे गुरु आपणी आत्मा हीज छे जिम गुरु उपदेश देवे तिम आत्माने आत्मा उपदेश देवे छे। ज्ञान आत्मा द्रव्य आत्मा नो भिन्न नहीं छे निश्चय गुरु आत्मा (२) निश्चे धर्म आपणो स्वभाव निज गुणमें रमणतां मगनता निश्चे धर्म आत्मा (३) ए निश्चय सम्यक्त ए मोक्ष नो कारण छे निज स्वभाव आत्मा स्वरूप ओलख्यां विना कर्मक्षय ना होवे एहवी जे शुद्ध सद्दहणा ते निश्चय सम्यक्त जाणीजे एतावता आंपणा स्वरूप ज्ञानादि गुण स्वभावमें रमे कामोदय उत्पन्न विभवसे विरक्त थावे ते निश्चय सम्यक्त कहीए।

॥ अत्र हेतु दृष्टांत कहे ॥

जिम राजा वक्र सिक्षित अश्वारूढ़ थइने भीलाना वन ने विषें जाय पड्यो भील पकड़ीने आपणे घरे लेई बैठायो तो राजा आपणे मंदिर तथा चित्रसभा मृगांची इत्यादि वस्त्र ने भूले नहीं तिम जीव कर्म रूप भीलाने वस पड्यो परं निज घर ज्ञानादि निज परणित आत्माने भवने (परणित आत्म भवने) भूले नहीं ए सम्यक्त होय तेहने ज्ञान होय।

नादंसणिस्सनाणं सम्यक्त तो ज्ञानवंतने होय अज्ञानीने सम्यक्त ना होय ते भणि ज्ञान नो स्वरूप ओलखावे छे ते ज्ञान दोय प्रकार छे एक व्यवहार ज्ञान बीजो निश्चे ज्ञान तिहां प्रथम व्यवहार ज्ञान कहे छे जिण (जैन) धर्मना शास्त्र जैन आगम नो भणवो अनुयोग कहीए विस्तार व्याख्यान ते अनुयोग तीन, धर्म कथानुंयोग (१) चरणानुयोग (२) करणा-

णुयोग (३) ए तीन व्याख्या जिणागमना (जिण आगमना) तथा अन्य मतिरा शास्त्र वेदांत जोतिष्य प्रमुख ते पण भणवानी रूप करे छे परूपे भणे भणावे अंतरंग भाव पिण प्रकाशे सत नय च्यार निक्षेपा च्यार परमाण सुं शुध उपदेशें ए व्यवहार ज्ञान कहीजे व्यवहार ज्ञान अभव्य ने पिण संभवे छे ।

॥ हिवे निश्चय ज्ञान कहे छे ॥

निश्चय ज्ञान द्रव्यानु योग षट द्रव्यना द्रव्य गुण पर्याय नो जाण पणो ते षट द्रव्य मांहि पांच द्रव्य अजीव छे अनात्म अने हय छे, पर स्वरूप जाणी छोडवा योग्य छे,(हि--छोडणे जोग छे) ते पुद्गलादि छोडवा, ज्ञेय रूप छे जाणवा (ज्ञे--जाणने जोग छे) अने एक जीव द्रव्य नो सरूप निज गुण उपादेय छे (उपादेय--आदरणे जोग छे) ते निश्चे करी, जीव—सिद्ध समान मोक्षमें (१) मोक्ष नो

कारण (२) मोक्ष करणहार (३) मोक्ष रूप (४) सच्चिदानंद एहवो, जे अनुभाव रूप, जे आत्मा तेहीज निश्चे ज्ञान । ज्ञान आत्मामें भिन्न नहीं आया से विन्नाया, विन्नायासे आया इति वचनात् तेहनें मूल मिथ्यात्व मोहनी-उदय नहीं आत्मा नो उजल पणो ते ज्ञान, जिम सूर्य्य विमान नो निज गुण तेज पणो अभ्र पटल थी ढक्यो निस्तेज थयो अभ्र पटल दुर हुयो जाज्वलमान तेज प्रगट्यो, जिम ज्ञाना वरणी रूप अभ्र पटल दुर हुवां मिथ्यात्व मो-हिनी खपायां निश्चे ज्ञान कहीजे, निश्चे ज्ञान निश्चे सम्यक्तवंत ने हुवे व्यवहार ज्ञान व्यव-हार सम्यक्तवंत ने होवे इति ज्ञान कह्यो ।

हिवे ज्ञान नो विस्तार कहे छे उतरा-ध्ययन सूत्रमें २८ मां अध्ययनमें कह्यो ॥

नाणेण जाणइभावे दंसणेणयसद्दहे

न्वरित्तं एनगिएहाइ तत्रेणपरिसूजइ ॥ १ ॥ इति वचनात् ज्ञानने कहिए, पदार्थ ना जाण छव द्रव्य कहिए पदार्थ सर्व लोकमें छव ही पदार्थ छे।

॥ उतराध्ययन २८ मांध्ययनमें गाथा ॥

धम्माधम्मागसा । कालोपोग्गलजंतवो। एसलोगोत्तिपन्नतो । जिणेहिंवरदंसहं ॥१॥ इम कह्यो धर्मास्तिकाय (१) अधर्मास्तिकाय (२) आकाशास्तिकाय (३) काल (४) पुद्गलास्ति काय (५) जीवास्तिकाय (६) एषट द्रव्यने लोक कह्यो ए षट द्रव्य लोकमां छे ते षट द्रव्यने जिण वीतराग वरप्रधान ज्ञाने करी देखीने गुण पर्याय करी जाणे स्वद्रव्य स्वगुण स्वपर्याय आचरण करे ते निश्चे ज्ञान ॥ उतराध्ययन २८ मांध्ययन में कह्यो ॥ एयंपंच विंह नाणं दव्वाणाय गुणाणाय पज्जवाणांचसव्वेसिं नाणं-नाणीहिं देसियं ॥१॥ अथ ए मतिज्ञान आदि

पांच ज्ञाने करी द्रव्य गुण पर्याय सर्व द्रव्यने जाणे ते ज्ञानी कहीए ।

सुत्रकी गाथा अकालमें भणी होय अकालमें सीखी होय छपाइ होय ज्ञानादी की असातना कीनी होय अक्षर पद आगो पाछो ओछो अधिको अशुद्ध लीख्यो होय जांणते अजांणते दोष लाग्यो होय तस्समिच्छमि दुक्कडं ।

सेवं भंते सेवं भंते

॥ इति ॥

म्वरित्ते एनगिएहाइ तवेणपरिसूजइ ॥ १ ॥ इति वचनात् ज्ञानने कहिए, पदार्थ ना जाण छव द्रव्य कहिए पदार्थ सर्व लोकमें छव ही पदार्थ छे ।

॥ उतराध्ययन २८ मांध्ययनमें गाथा ॥

धम्माधम्मागसा । कालोपोग्गलजंतवो । एसलोगोत्तिपन्नतो । जिणेहिंवरदंसहं ॥१॥ इम कह्यो धर्मास्तिकाय (१) अधर्मास्तिकाय (२) आकाशास्तिकाय (३) काल (४) पुद्गलास्ति काय (५) जीवास्तिकाय (६) एषट द्रव्यने लोक कह्यो ए षट द्रव्य लोकमां छै ते षट द्रव्यने जिण वीतराग वरप्रधान ज्ञाने करी देखीने गुण पर्याय करी जाणो स्वद्रव्य स्वगुण स्वपर्याय आचरण करे ते निश्चे ज्ञान ॥ उतराध्ययन २८ मांध्ययन में कह्यो ॥ एयं पंच विह नाणं दव्वाणय गुणाणय पज्जवाणंचसव्वेसिं नाण-नाणीहिं देसियं ॥१॥ अथ ए मतिज्ञान आदि

पांच ज्ञाने करी द्रव्य गुण पर्याय सर्व द्रव्यने जाणे ते ज्ञानी कहीए ।

सुत्रकी गाथा अकालमें भणी होय अकालमें लीखी होय छपांइ होय ज्ञानादी की असातना कीनी होय अक्षर पद आगो पाछो ओछो अधिको अशुद्ध लीख्यो होय जांणते अजांणते दोष लाग्यो होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

सेवं भंते सेवं भंते

॥ इति ॥

(४) द्रव्य क्षेत्र काल भाव (५) द्रव्य ने भाव (६) कारण कार्य (७) निश्चय व्यवहार (८) उपादान निमित्त (९) च्यार प्रमाण (१०) गुण अने गुणी (११) सामान्य विशेष (१२) ज्ञे ज्ञान ज्ञानी (१३) उत्पात व्यय ध्रुव (१४) अध्यय आधार (१५) आवीर भाव ओभाव (१६) मुख्यता अने गौणता (१७) उत्सर्ग अने अपवाद (१८) आतमा तीन (१९) ध्यान च्यार (२०) अनुयोग च्यार (२१) जागरना तीन।

॥ १ ॥ नय

नय किसको कहते हैं ?

वस्तुके एक देशको जाननेवाले ज्ञानको नय कहते हैं।

॥ नय सात ॥

(१) नैगम नय (२) संग्रह नय (३) व्यवहार नय (४) ऋजुसूत्र नय (५) शब्द नय (६) सम-

भिरूढ़ नय (७) एवंभूत नय।

नैगमनय किसको कहते हैं ?

दो पदार्थोंमेंसे एकको गौण और दूसरेको प्रधान करके भेद अथवा अभेदको विषय करनेवाला ज्ञान नैगम नय है तथा पदार्थके संकल्पको ग्रहण करनेवाला ज्ञान नैगम नय है जैसे--कोई आदमी रसोइमें चावल लेकर चुनता था, किसीने इससे पूछा कि क्या कर रहे हो, तब उसने कहा के भात बना रहा हूं, यहां चावल और भातमें अभेद विवक्षा है, अथवा चावलों में भातका संकल्प है।

संग्रह नय किसको कहते हैं ?

अपनी जातीका विरोध नहीं करके अनेक विषयोंका एक पनेसे जो ग्रहण करे, उसको संग्रह नय कहते हैं, जैसे--जीवके कहनेसे चारों गतिके सब जीवोंका ग्रहण होता है।

व्यवहार नय किसको कहते हैं ?

जो संग्रह नयसे ग्रहण किये हुए पदार्थोंको विधिपूर्वक भेद करे, सो व्यवहार नय है जैसे--जीवके भेद त्रस और स्थावर आदि करना।

ऋजूसुत्र नय किसको कहते हैं ?

भूत भविष्यतकी अपेक्षा न करके वर्तमान पर्याय मात्रको जो ग्रहण करे, सो ऋजूसुत्र नय है।

शब्द नय किसको कहते हैं ?

लिंग, कारक, वचन, काल, उपसर्गादिक के भेदसे जो पदार्थ को भेदरुप ग्रहण करे, सो शब्दनय है, जैसे--दार, भार्या, कलत्र ये तीनों भिन्न २ लिंगके शब्द एकही स्त्री पदार्थके वाचक हैं, सो यह नय स्त्री पदार्थको तीन भेद रुप ग्रहण करता है, इसी प्रकार कारकादिकके दृष्टांत जानने।

समभिरुढ़ नय किसको कहते हैं ?

लिंगादिकका भेद न होने पर भी पर्याय शब्दके भेदसे जो पदार्थको जो भेद रुप ग्रहण करै, जैसे---इन्द्र शक्र, पुरन्दर ये तीनों एकही लिंगके पर्याय शब्द देवराजके वाचक हैं, सो यह नय देवराजको तीन भेदरुप ग्रहण करता है ।

एवंभूत नय किसको कहते हैं?

जिस शब्दका जिस क्रिया-रुप अर्थ है, उसी क्रियारुप परिणमे पदार्थको जो ग्रहण करै, सो एवंभूत नय है, जैसे--पुजारीको पुजा करते वक्तही पुजारी कहना ।

॥ २ ॥ निक्षेपा च्यार ४ ।

निक्षेप किसको कहते हैं?

युक्तिकरके सुयुक्तमार्ग होते हुए कार्यके वशसे नाम स्थापना द्रव्य और भावमें पदार्थके

स्थापनको निक्षेप कहते हैं।

निक्षेपके कितने भेद हैं?

चार हैं—नाम निक्षेप, स्थापना निक्षेप, द्रव्य निक्षेप, भाव निक्षेप।

नाम निक्षेप किसको कहते हैं?

जिस पदार्थमें जो गुण नहीं है, उसको उस नामसे कहना। जैसे--किसीने अपने लड़केका नाम हाथी सिंह रक्खा है। परन्तु उसमें हाथी और सिंह दोनोंके गुण नहीं है।

स्थापना निक्षेप किसको कहते हैं?

साकार अथवा निराकार पदार्थमें वह यह है, इस प्रकार अवधान करके निवेश करनेको स्थापना निक्षेप कहते हैं जैसे—सतरंजके मोहरोंको हाथी घोड़ा कहना।

द्रव्य निक्षेप किसको कहते हैं?

जो पदार्थ आगामी परिणामकी योग्यता

रखनेवाले हो, उसको द्रव्य निक्षेप कहते हैं--- जैसे राजाके पुत्रको राजा कहना।

भाव निक्षेप किसको कहते हैं ?

वर्तमान पर्याय संयुक्त वस्तुको भाव निक्षेप कहते हैं---जैसे राज्य करते हुए पुरुषको राजा कहना।

॥३॥ द्रव्य, गुण, पर्याय।

द्रव्य---जीव द्रव्य, अजीव द्रव्य (धर्मस्ती काय आदि छव द्रव्य) सदा काल शासता।

गुण---ज्ञानादि।

पर्याय--- पलटे, पलटण स्वभाव।

॥४॥ द्रव्य क्षेत्र काल भाव।

द्रव्य---जीव अजीव।

क्षेत्र---आकाश प्रदेश।

काल---समय आवलका।

भाव---वर्ण, गंध, रस, स्पर्श।

॥५॥ द्रव्यने भाव ।

द्रव्यः---जीव शासतो द्रव्य छै, भाव--जीव अशासतो द्रव्य छै।

॥६॥ कारण कार्य ।

जैसे कोइ मनुष्यको रत्नाकर द्वीप जाणा है, मार्गमें चालता समुद्र आयो जब जहाजमें बैठना सो कारण और रत्नाकर द्वीप जाणा कार्य।

॥७॥ निश्चयने व्यवहार ।

निश्चयमें तेल बले छै, व्यवहारमें दीयो बले छै ।

निश्चय नय किसको कहते हैं ?

वस्तुके किसी असली अंशके ग्रहण करनेवाले ज्ञानको निश्चय नय कहते हैं जैसे मिट्टीके घड़ेको मिट्टीका घड़ा कहना।

व्यवहार नय किसको कहते हैं ?

किसी निमित्तके वशसे एक पदार्थको दूसरे पदार्थरूप जाननेवाले ज्ञानको व्यवहारनय कहते हैं। जैसे--मिट्टीके घड़े को घीके रहनेके निमित्त घीका घड़ा कहना।

व्यवहार नय या उपनयके कितने भेद हैं ?

तीन हैं--- सद्भूत व्यवहार नय, असद्भूत व्यवहार नय, और उपचरित व्यवहार नय अथवा उपचरिता सद्भूत व्यवहार नय।

सद्भूत व्यवहार नय किसको कहते हैं ?

एक अखंड द्रव्यको भेदरूप विषय करने वाले ज्ञानको सद्भूत व्यवहार नय कहते हैं। जैसे--जीवके केवल ज्ञानादिक वा मतिज्ञानादिक गुण हैं।

असद्भूत व्यवहार नय किसको कहते हैं?

जो मिले हुए भिन्न पदार्थोंको अभेद--रूप ग्रहण करै, जैसे--यह शरीर मेरा है अथवा मिट्टीके घड़ेको घीका घड़ा कहना।

उपचरित व्यवहार अथवा उपचरित असद्भूत व्यवहार नय किसको कहते हैं?

अत्यन्त भिन्न पदार्थोंको जो अभेद--रूप ग्रहण करै, जैसे--हाथी, घोड़ा, महल, मकान मेरे हैं इत्यादि।

निश्चयके कितने भेद हैं?

दो हैं---एक द्रव्यार्थिक नय दूसरा पर्यार्थिक नय।

द्रव्यार्थिक नय किसको कहते हैं?

जो द्रव्य अर्थात् सामान्यको ग्रहण करै।

पर्यार्थिक नय किसको कहते हैं ?

जो विशेषको (गुण अथवा पर्यायको) विषय करै।

द्रव्यार्थिक नय और पर्यार्थिक नयके भेद।

इसमें तर्कवादी श्रीमान् सिद्धसेन दिवाकर तीन द्रव्यार्थिक नय मानते हैं, जिसका नाम--नेगम (१) संग्रह (२) व्यवहार (३) ए तीन मानते हैं, और सिद्धांत वादी श्रीजिनभद्र गणि खमासमण द्रव्यार्थिक नय च्यार मानते हैं, जिसका नाम--नेगम (१) संग्रह (२) व्यवहार (३) रूजुसुत्र (४) ए च्यार मानते हैं, अपेक्षासें दोनु महापुरूषोंका मानणा सत्य है। कारण रूजुसुत्र नय प्रणाम ग्राही हैं और वर्तमान काल और भाव निक्षेप माननेवाला है। इसलिये पर्यार्थिक नय मानी गई है, और दूसरी

अपेक्षासें रूजुसुत्र नय शुद्ध उपयोग रहित होनेसे द्रव्यार्थिक नय मानी गई है तत्व केवलि गम्य ।

॥ व्यवहार नय कोई च्यार कहते हैं जैसे—नेगम नय, संग्रह नय, व्यवहार नय, रूजुसुत्र नय, ए ४, कोई तीन कहते हैं जैसे—नेगम नय (१) संग्रह नय (२) व्यवहार नय (३) ए तीन ए, अपेक्षा वचन है अपनी गरजमें ना आवेतो शंका ना लावे तत्व केवलि गम्य तमेव सच्चम् ।

॥८॥ उपादान निमित्त ।

उपादान शिष्यको निमित्त गुरुको मिल्यो जब ज्ञानकी प्राप्ति हुई ।

॥९॥ च्यार प्रमाण ।

(१) प्रत्यक्ष प्रमाण (२)आगम प्रमाण (३) अनुमान प्रमाण (४) ओपमा प्रमाण ।

प्रमाण ते कोने कहीए, सम्यक् ज्ञान–ते संशय; विपरीत अने अनध्यवसाय ए त्रण दोष रहित होय तेहने प्रमाण कहीए, संशय

कहेतां छीप (सीप) जमीन उपर पड़ी छे ते निश्चय कर्या विना कहे के ते चांदी देखाय छे अथवा छीप छे तेनो निर्णय न करे ते, विपरीत केहतां एम बोलेके छीप तो समुद्रमां होय, अहां क्यांथी होय? मांटे चांदी छे, एम नक्की करी वेसे ते।

अनाध्यवसाय केहतां निर्णय कर्या विना बोले के अन्य जन थी आपणे सुं काम छे, शुं मतलब छे ए त्रण दोष रहित होय तेने सम्यक ज्ञान अथवा प्रमाण नय कहीए।

हवे प्रमाण नयना वे भेद--प्रत्यक्ष अने परोक्ष।

प्रत्यक्ष-प्रति कहेतां सामे अक्ष कहेतां आंख आत्मानो सामे आत्मा सिवाय वीजानी सहायता विना वस्तुना स्वरूपने जाणे तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहीए, तेना वे भेद--देशथकी आने सर्वथकी।

देशथकी ते अवधि ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान।

सर्वथकी ते केवल ज्ञान, केवल दर्शन, तथा इंद्रीओ ए करी वस्तुना स्वरूपने जाणे, तेने व्यवहारमां प्रत्यक्ष प्रमाण कहीए, तेना पांच भेद, श्रोतेंद्रि वीगेरे ।

परोक्ष केहतां, बीजानी सहायत थी वस्तुना स्वरूपने जाणे तेने परोक्ष कहीए, तेना त्रण भेद अनुमान, आगम अने ओपमा ।

अनुमान प्रमाण आगे लिखासे ते मुजब जाणवुं. अने आगमना बे भेद लौकिक, अने लोकोत्तर ।

लौकिक आगम केहतां मिथ्यात्वी, अव्रती, अज्ञानी, आप आपना, स्वछन्दा चारीपणाथी परुपे ते। चार वेद, आढ़ार पुराण, चोसठ स्त्रीनी कला, बोंतेर पुरुषनी कला, ज्योतिष, निमित, आदि अनेक लखी परुपे, तेने लौकिक आगम कहीए ।

हवे लोको ... कोने ... जे

उत्पन्न, नाण, दंसण धरा, अरहा जीन केवलीके जेनी अर्थरुप परुपेली द्वादशांगी वाणी तथा गणधर महाराजनी गुथेली पाठरुप द्वादशांगी वाणी जेना त्रण भेद--अत्तागमे, अणंतरागमे, परमपरागमे ।

अत्तागमे कहेता तीर्थंकर महाराजनी अर्थरूप वाणी ते अने अणंतरागमे कहेतां गणधर महाराज बोले ते ।

परमपरागमे कहेतां बीजा शिष्य बोले ते ।

वली अत्तागमे कहेतां बीजा शिष्य बोले ते।

परंपरागमे कहेतां आगल बोले ते ।

हवे उपमा प्रमाणना त्रन भेद, कींचित, प्राय, अन्योन्यः ।

किंचित ते कोने कहीए, उदाहरण--जेमके सरसवना दाणा जेवो मेरू पर्वतः द्वारका देवलोक जेवी वीगेरे वगैर ।

बीजुं प्रायः ते कोने कहीए, गाय रोक्त सरखी ।

सर्वथकी ते केवल ज्ञान, केवल दर्शन, तथा इंद्रीओ ए करी वस्तुना स्वरूपने जाणे, तेने व्यवहारमां प्रत्यक्ष प्रमाण कहीए, तेना पांच भेद, श्रोतेंद्रि वीगेरे।

परोक्ष केहतां, बीजानी सहायत थी वस्तुना स्वरूपने जाणे तेने परोक्ष कहीए, तेना त्रण भेद अनुमान, आगम अने ओपमा।

अनुमान प्रमाण आगे लिखासे ते मुजब जाणवुं अने आगमना बे भेद लौकिक, अने लोकोत्तर।

लौकिक आगम केहतां मिथ्यात्वी, अव्रती, अज्ञानी, आप आपना, स्वछन्दा चारीपणाथी परुपे ते। चार वेद, अढ़ार पुराण, चोसठ स्त्रीनी कला, बोंतेर पुरुषनी कला, ज्योतिष, निमित, आदि अनेक लखी परूपे, तेने लौकिक आगम कहीए।

हवे लोकोत्तर आगम कोने कहीए के जे

उत्पन्न, नाण, दंसण धरा, अरहा जीन केवलीके जेनी अर्थरुप परुपेली द्वादशांगी वाणी तथा गणधर महाराजनी गुथेली पाठरुप द्वादशांगी वाणी जेना त्रण भेद--अत्तागमे, अणंतरागमे, परमपरागमे ।

अत्तागमे कहेता तीर्थंकर महाराजनी अर्थरूप वाणी ते अने अणंतरागमे कहेतां गणधर महाराज वोले ते ।

परमपरागमे कहेतां बीजा शिष्य बोले ते ।

वली अत्तागमे कहेतां बीजा शिष्य वोले ते।

परंपरागमे कहेतां आगल वोले ते ।

हवे उपमा प्रमाणना त्रन भेद, कींचित, प्राय, अन्योन्यः ।

किंचित ते कोने कहीए, उदाहरण--जेमके सरसवना दाणा जेवो मेरू पर्वतः द्वारका देव-लोक जेवी वीगेरे वगैर ।

बोजु प्रायः ते कोने कहीए, गाय रोझ सरखी ।

त्रीजुं अन्यो अन्य ते कोने कहीए, जो के जीन मार्गतो नथी मानता पण व्यवहारमां उपचार-रुप कहेवा माटे तीर्थंकर सरखा ।

उपमा ते कोने कहीए उदाहरण---जेमके कटोरो समुद्र जेवो तेमां समुद्र उपचीत अने कटोरो उपमा ।

॥१०॥ गुण अने गुणी ।

गुण ज्ञानादि--गुणी जीव ।

॥११॥ सामान्य विशेष ।

सामान्य केहता वर्ण---विशेष केहता पांच वर्ण ।

॥१२॥ ज्ञे, ज्ञान, ज्ञानी ।

ज्ञें केहता जगतका घटपटादिक पदार्थ ।
ज्ञान केहता जाणपणुं ।
ज्ञानी केहता चेतन (जीव) ।

॥१३॥ उत्पात, व्यय, ध्रुव ।

(उपनेवा, विगमेवा, ध्रुवेवा)

उत्पात केहता--उत्पन्न होना, (८४ लाख जीवाजुनरी उपजणो)

व्यय कहता--विनाश होना।

ध्रुव केहता--नित्यता शाश्वता श्रीसिद्धभगवान शाश्वता जाणना।

॥१४॥ अधे आधार।

अधे सो घटपटादिक जगतकी वस्तु,	अध्यय, वस्तु अने
आधार-पृथ्वी,	आधार भाजन,

॥१५॥ आवीरभाव, त्रोभाव।

आवीरभाव केहता-नजदीक,	जैसे,--घासमें घी दूर पण
त्रोभाव केहता-दूर,	दूधमें घी नजदीक है।

॥१६॥ मुक्ता अने गुणता।

(मुख्य अने गुण)

मुक्ता केहता-लोक मांहे दीखती हुई वस्तु जैसे--सेन्यापति।

गुण केहता--वस्तुको निज स्वरूप, जैसे--सेन्या।

॥१७॥ उत्सर्ग अने अपवाद ।

उत्सर्ग केहतां--तीनगुप्ति
अपवाद केहतां--पांच सुमती

॥१८॥ आत्मा तीन ।

स्वआत्मा--ने दमन करे।
परमात्मा की रक्षा करे।
परमात्मा का भजन करे।

॥१९॥ ध्यान च्यार (४) ।

पदस्थ ध्यान, पंड़िस्थ ध्यान, रूपस्थ ध्यान, रूपा अतीसे ध्यान।

॥२०॥ अनुयोग च्यार (४)

द्रव्याणुंयोग, गुणतानुं योग, चरणकरणाणुं योग, धर्मकथानुं योग,

॥२१॥ जागरना तीन (३) ।

धर्म जागरना, अधर्म जागरना, कुटुम्ब जागरना ।

॥ अथ सात नय स्वरूप ॥

(१) नैगम (२) संग्रह (३) व्यवहार (४) ऋजुसुत्र (५) शब्द (६) समभिरुढ़ (७) एवं-भूत, अब इन्होंका भेद कहते हैं ।

(१) नैगमनय तीन प्रकारसे वर्णन किया गया है, जैसे कि भूत नैगम (१) भावि नैगम (२) वर्त्तमान नैगम (३) अतीत कालकी वार्त्ता को वर्त्तमान कालमें स्थापन करके कथन करना जैसे कि दीपमालाकी रात्रीको श्रीभगवान वर्द्धमान स्वामी मोक्ष गत हुए हैं इसका नाम भूत नैगम नय है । अपित्तु भावी नैगम इस प्रकारसे है जैसे कि अर्हंत् सिद्ध ही है क्यों कि वे निश्चय ही सिद्ध होंगे सो यह

भावि नैगम है, और वर्तमान नैगम यह है कि जो वस्तु निष्पन्न हुई वा नहीं हुई उसको वर्तमान नैगम अपेक्षा इस प्रकारसे कहना जैसे के तंडुल पक्ते हैं अर्थात् ओदनः पच्यते, चावल पक रहे हैं सो इसका नाम वर्तमान नैगम नय है।

(२) संग्रह नय भी दो प्रकारसे वर्णन किया गया है जैसे कि सामान्य संग्रह (१) विशेष संग्रह नय (२) अपित्रु सामान्य संग्रह इस प्रकारसे है जैसे कि सर्व द्रव्य परस्पर अविरोधी भावमें है अर्थात् सर्व द्रव्योंका परस्पर विरोध भाव नहीं है, अपित्रु विशेष संग्रह में यह विशेष है कि जैसे कि जीव द्रव्य परस्पर अविरोधी भावमें है क्योंकि जीव द्रव्यमें उपयोग लक्षण वा चेतन-शक्ति एक सामान्य ही है सो सामान्य द्रव्योंमें से एक विशेष द्रव्यका वर्णन करना उसीका ही नाम संग्रह नय है।

(३) व्यवहार नय भी दो प्रकारसे ही कथन किया है, जैसे कि १ सामान्य संग्रह-रूप व्यवहार नय जैसे कि द्रव्य दो प्रकार का है यथा जीव द्रव्य (१) अजीव द्रव्य (२) अपितु २ विशेष संग्रह-रूप व्यवहार इस प्रकारसे है जैसे कि जीव-संसारी (१) और मोक्ष (२) क्योंकि संसारी आत्मा कर्म-संयुक्त है और मोक्ष आत्मा कर्मोंसे रहित है इसलिए ही उनके नाम अजर, अमर, सिद्ध, बुद्ध, पारंगत, परंपरागत, मुक्त इत्यादि हैं जीव द्रव्यके दोय भेद यह व्यवहार नयके मतसे ही है, इसी प्रकार अन्य द्रव्योंके भी जाण लेणे।

(४) ऋजुसुत्र नय भी दो भेदसे कहा गया है, यथा जो समय समय पदार्थोंका नूतन पर्याय होता है और पूर्व पर्याय व्यवच्छेद हो जाता है उसीका ही नाम सुक्ष्म ऋजुसुत्र नय है, अपितु जो एक पर्याय आयु

पर्यन्त रहता है उस पर्यायकी संज्ञाको लेकर शब्द ग्रहण करे जाते हैं उसका नाम स्थूल ऋजुसुत्र नय है जैसे की नरभव (१) देवभव (२) नारकीभव (३) तिर्यंचभव (४) यह भव यथा आयु प्रमाण रहते हैं, इसीवास्ते मनुष्य (१) देव (२) तिर्यंच (३) नारकी (४) यह शब्द व्यवहार करनेमें आता है।

(५) शब्द नयके मतमें एकार्थी हो, या अनेकार्थी हो, शब्द शुद्ध होने चाहिए, जैसेके दारा, भार्या, कलत्र अथवा जल, अप यह सर्व शब्द एकार्थी पंचम नयके मतसे सिद्ध होता है अर्थात् शुद्ध शब्दोंका उच्चारण करना इस नयका मुख्य कर्त्तव्य है।

(६) समभिरूढ़ नय विशेष शुद्ध वस्तु पर ही स्थित है जैसे की गौ अथवा पशु जो पदार्थ जिस गुणवाला है उसको वैसे ही मानता है यह समभिरूढ़ नयका मत है, तथा जिस पदार्थ

में जिस वस्तुकी सता है, उसके गुण कार्य ठीक ठीक मानते वेही समभिरूढ़ नय है ।

(७) एवंभूत नयके मतमें जो पदार्थ शुद्ध गुण कर्म-स्वभावकी प्राप्त हो गये हैं उसको उसी प्रकारसे मानना उसीका ही नाम एवं-भूत नय है, जैसे कि इदंती इन्द्रः अर्थात् ऐश्वर्य करके जो युक्त है वही इन्द्र है यही एवंभूत नय है ।

॥ पाठान्तर ॥

"सात नय स्वरूप"

॥१ नेगम॥

नैगम कहतां नदीकी धारा, प्रवाह सरीखो गम अने नेगम एक अंश मात्र, जे वस्तु नो गुण प्रगट हुवै, तेहने सम्पूर्ण पणों वस्तु ने मानें सो नैगम नय कहीजे, ते नेगम नय का ३ भेद, भूत नेगम (१) भविष्यत नेगम (२) वर्तमान नेगम (३) जो अतीत कालके विषें जो पदार्थ

हुवा, अरू वांही वर्तमानकी सीन्या कहणेसे भूत नेगमनय कहिए, जैसे कोइ दीवालीके दिन कहे आज श्री वीर्द्धमान स्वामी मोक्ष गया असो कहणो (१) हवे भविष्यत नेगम, आगामी कालके जो पदार्थ होणहार है ते वर्तमानमें कहणो, जैसे उतराध्ययन १६ में अध्यायनें, ग्रहवासी वसतां जुवराया दमीसरे असो कह्यो ते भविष्यत नेगम नय कहीजे (२) हवे वर्तमान नेगमनय, जे वस्तु करणी मांड़ी, किंचित् नीपजी, तिसकूं सम्पूर्ण पणें कहणी, जैसे चोको देतो (लीपतो) देखी तथा रसोइकी सामग्री भेली करता देखी पूछ्यो सुं करे छे तव कह्यो रसोइ करुं छं असो कहणो (३)।

॥ पाठान्तर ॥

नेगमनयना ३ भेद---गया कालनु वर्तमान कालमां आरोपण---जेम तिर्थकरादिक वर्णाव, वर्तमान कालनु वर्तमान ॥

आरोपण---जेम एक रसोइयो रसोइनी सामग्री एकठी करी अने कोइ पूछे के सुं करे छे त्यारे जवाब आप्यो के रसोइ करूं छुं, ए जु आवता कालनुं वर्तमान कालमां आरोपण--जेम मृगापुत्र युवराज कहेतां आवता कालमां मुनिराज थावाना छे छतां भगवाने युवराज ठुमीसरे कही बोलाव्या। वली नेगम नयना त्रण भेद--अंश, आरोपण अने विकलय हवे अंश कहेतां नीगोदमां जीव छतां सिद्ध कहे अने चौदमा गुणठाणा वालाने संसारी माने आरोप कहेतां आरोप करीने वस्तु माने जेमके शेत्र ज (रमवानी बाजी) मां लाकड़ाने कल्पे के आ हाथी, घोड़ो, उंठ वगेरे, विकलय कहेतां कल्पना करीने माने। वली नेगम नयना २ भेद (१) सामान (२) विशेष, सामान कहेतां वस्तुना द्रव्य आश्री स्थिर स्वभाव माने। विशेष कहेतां वस्तुना उत्पात व्यय, अने ध्रुव आश्री स्वभाव माने। बाकी अणुयोगद्वार सुत्र प्रमाणे जाणवुं।

॥ २ संग्रह नय ॥

संग्रहनय वालो, सामान माने विशेष नहीं माने तीन कालरी वात माने, निक्षेपा ४ माने, संग्रह संग्रह वस्तुको ग्रहण करे, एक शब्दमें अनेक वस्तु ग्रहण करे जैसे वनको वन कहे वनमें वस्तु अनेक है (जैसे किसीने कहा के वनहे संग्रह नय वालो वनमें जीतनी वस्तु है उसकुं एक वन शब्दमें ग्रहण करे) अथवा कोइ साहुकारने अनुचर याने दासको कहा दांतण लावो तब वह दांतण लाया, झारी, काच, कंघी, सुरमा, मिसी, पाग, रुमाल, पोशाक, अलंकार इत्यादिक अनेक वस्तु लाया।

संग्रह नयका दोय भेद है (१) सामान संग्रह, (२) विशेष संग्रह। हवे सामान संग्रह-- जो अजीव द्रव्य मांहे मांही अविरोध है।

अचेतन गुण अपेक्षा, सामान्य गुण सर्व द्रव्यमां है।

अजीव द्रव्यमें औसो कहणो--ते संग्रह सामान्य पणें कहीजे।

हवे विशेष संग्रह--जो परजातीका द्रव्य कुं छोडीकरी, स्वजाति स्वद्रव्यकों संग्रह करियें सो विशेष संग्रह कहीए।

॥ ३ व्यवहार नय ॥

व्यवहार नय वालो, समान्य सहित विशेष माने, तीनकालकी वात माने, निक्षेपा ४ माने, व्यवरो करे तेने व्यवहार कहिए जैसे--- व्यवहार में कोयल काली है निश्चयमें वर्ण पांच है।

व्यवहार में वगलो भोलो है, निश्चयमें वर्ण पांच है। व्यवहारमें सुवो हरो है निश्चय में वर्ण पांच है।

॥ ४ ऋजुसुत्र नय ॥

ऋजुसुत्र नय वालो, सामान नहीं

माने विशेष माने, वर्तमान काल री बात माने, निक्षेपो (१) भाव माने, पराइ वस्तु को आपणे निरर्थक पणे जाणे, जैसे---आकाशमें फुल (कुसुम) लागा तो कहे निरर्थक, जिसपर किसीने कहा सौ वर्ष पहले सोनेकी वृष्टि हुइ थी तो कहे, निरर्थक, सौ वर्ष पीछे सोनेकी वृष्टि हुसी तो भी कहे निरर्थक, वर्तमान काल को मुख्य करके वस्तुको माने, वर्तमान परिणाम भावको ग्रहण करे ।

साहुकारकी बेटेकी वहुको दृष्टांत ।

जैसे कोई साहुकार अपने घरमें समायिक लेके बैठा था, उस वख्त अन्य पुरुषने आकर साहुकारकी बेटेकी वहुसे पुछा के बाई तेरा सुसरा कहां है तब वह बोली मेरा सुसराजी पसारीके यहां सूंठ मिरच खरीदने के लिए गये हैं, वो वहां जाकर साहुकारको तलाश किया परन्तु सेटजी वहां नहीं मिले, तब वह

वापिस आकर साहुकारकी वेटेकी वहुसे पुछा के सेठजी वहां तो नहीं हैं। वताव कहां गये हैं, तव उसने कहा के मेरा सुसराजी मोचीके यहां जूता खरीदनेके लिए गये हैं तव वह पुरुष वहां जाकर भी तलाश किया तो भी सेठजी नहीं मिले तव वह पीछा आकर वोला वाइ सेठजी तो वहां भी नहीं है, इतनेमें सेठजीकी समायिक आगइ और सेठजी समायिक पाड़-करके उस मनुष्यसे वात चीत करके उसको तो सीखदी और आप फिर अपनी वेटेकी वहुसे कहा के हे वहु तू जानती थी के मैं समायिक लेकर घरमें वैठा था, फेर बिचारा उस आदमी को नाहक तकलीफ क्यों दी, तव वहुने कहा के आपका मन दोनों ठिकाने गया के नहीं? तव सेठजी वोले हां गया था, ऐसे चौथी ऋजुसुत्र नय वालो वर्तमान कालमें जैसा परिणाम (परणाम) हुवे वैसीही वात माने।

॥ ५ शब्द नय ॥

शब्दनय----शब्द नय वालो शब्द पर आरुढ होकर सरीखा शब्दका एक ही अर्थ करे, शब्द नय वालो सामान नहीं माने विशेष माने, वर्तमानकालकी बात माने निन्क्षेपो एक भाव माने, वस्तुमें लिङ्ग भेद नहीं माने जैसे-शक्रेन्द्र, देवेन्द्र, पुरेन्द्र, शचीपति यह सबको एक माने अर्थात् पर्याय अर्थ को भेद नहीं माने।

॥ ६ समभिरुढ नय ॥

समभिरुढ नय----सामान्य नहीं माने, विशेष माने वर्तमान कालकी बात माने निन्क्षेपो भाव माने, लिङ्गमें भेद माने, सरीखा शब्दका अर्थ अलग अलग करे, जैसे-शक्र सिंहासन पर देवताकी परिषदामें परिवार सहित बैठा है उस वख्त शक्रेन्द्र माने, और हाथमें वज्र लिया वैरी देवता का पुरको हटाते

हुवे को पुरेन्द्र माने ; और देवता की सभामें बैठ कर देवता का न्याय (इन्साफ) करते वख्त देवेन्द्र माने ; और देवियोंकी सभामें नृत्यादि विलास करते हुवेको शचीपति माने ।

॥ ७ एवं भूत नय ॥

एवं भूत नय----सामान्य नहीं माने, विशेष माने वर्तमान काल की वांत माने निक्षेपो एक भाव माने, सरीखा शब्दको उपयोग सहित जुदा जुदा अर्थ ग्रहण करे जैसे- शक्रेन्द्र शक्र आशन पर बैठा हुवा अपनी शक्तिसे जबरदस्ती उपयोग से वैरी देवता को आण मनावे उस वख्त शक्रेन्द्र माने ; पुरेन्द्र वैरी देवताके ऊपर हाथमें वज्र लिये खड़ा है, उपयोग सहित वैरी देवताके पुरको विदारे उस वख्त पुरेन्द्र कहिये ; देवेन्द्र देवताकी सभा में बैठा हुवा उपयोग सहित न्याय (इन्साफ) करे उस वख्त देवेन्द्र माने ; शचीपति इन्द्रा-

णीयोंकी सभामें बैठा हुआ उपयोग सहित रंग, राग, नाटक देखे उस वख्त शचीपति कहिये।

सात नयका २ भेद।

व्यवहार नय और निश्चय नय।

ए दोनु हीं की खप रांखणी, एकसुं कार्य्य न थाय।

॥ विलोवणा को दृष्टांत ॥

(भेरने के नेतरे परसे)

जैसे नेतरा (डोर) सामान्य दोनु हाथसे दोय तरफ डोर ग्रहे, तेमांहि एक तरफ डोर खेंचै और एक तरफ डोर ढीली छोडे तो कार्य्य सिद्ध होवे अने दोइ तरफ ढीला छोडे तथा दोनुहीं खेंचे तथा दोनु हाथोंसे छोडे तो कार्य्य सिद्ध नहीं हुवे, तथा एक डोरने

खेंचे अने दुजीने हाथसे छोड डाले तो भी कार्य्य सिद्ध थाय नहीं । इण दृष्टांते करी दोय नय मांही कीणही ठिकाणे निश्चय नयकी मुख्यता कीजै अने व्यवहार नयकी गुणता कीजै ।

अने किणही ठीकाणे व्यवहार नय की मुख्यता कीजै अने निश्चय नयको गुणता किजै तो सम्यक्त प्रकाश थाय अने एक नय माने बीजी न माने तथा एकसाथ दोनु खेंचे या एकसाथ दोनुं ढीली छोडे तो सम्यक्त-रुप मोक्ष कर्य्य सिद्ध ना हुवै, इसलिए शुद्ध सम्यक्तवंत ने सर्व नय प्रमाण करीजे ।

इसपर एक अंधे पांगलेका दृष्टांत; जैसे-- अंधेके कंधेपर पांगलो बैठे पांगलो बतावे अंधो चले दोनु मिल्या मारग ओलंघे, इसी तरह निश्चय और व्यवहार नय दोनोंको साथ मान्या कार्य्य सिद्ध होवे ।

हवे सात नय समझवाके लिये ।

वसतीके ऊपर दृष्टान्त पहलो ।

विशेष नैगम नय वालो सामान्य नैगम नयवालाने पूछे, के हे भाई तुम्हे कहां रहो छो जब वो बोल्यो के लोकमें रहुं छूं, लोक तो तीन हैं ; ऊंचो लोक, निचो लोक, त्रीछोलोक ; तुम किस लोकमें रहते हो, तो कहेके मैं त्रिछा लोकमें रहता हूं ; त्रिछा लोकमें तो असंख्याता द्वीप समुद्र है उसमेंसे किस द्वीपमें ? तो वो बोल्योके मैं जम्बू द्वीप में रहता हूं ; जम्बू द्वीपमें क्षेत्र बहुत है उसमें से किस क्षेत्रमें ? तब बोल्यो के भरतक्षेत्रमें ; भरतक्षेत्रमें दो खंड है तुम किस खंडमें रहते हो ? तब वो बोल्यो मैं दक्षिण खन्डमें रहता हूं ; दक्षिण खन्डमें तो देश घणा हैं तुम किस देशमें रहते हो तब वो बोल्यो के मैं मगध देशमें रहता हूं ; मगध देशमें तो नगर बहुत है तुम किस

नगरमें रहते हो? मैं पुन्डलीपुर नगरमें रहता हूं; पुन्डलीपुरमें तो पाड़ा बहुत है तुम किस पाड़ेमें रहते हो? तब बोल्योके देवदत्त ब्राह्मण के पाड़ेमें रहता हूं; देवदत्त ब्राह्मणके पाड़ामें तो घर बहुत है तुम किस घरमें रहते हो? तब वो बोल्यो के म्हारा निज आवास घरमें रहता हूं; यहां तक तो नैगम नय और व्यवहार नय वाले को मत। अब संग्रह नयवालो क़हे के निज आवास घरमें तो बहुत जगह है तब वो कहे के म्हारा साथिया (विस्तरा) प्रमाणे रहता हूं (सोता हूं) अब ऋजुसुत्र नय वालो कहे के ऐसा मत कहो, कहो कि मेरी आत्मा ने आकाश प्रदेश अवगाहिया उतनीही जगह में रहता हूं; अब शब्दादिक तीन नय

(शब्द नय, समभिरूढ़ नय, एवंभूत नय) वाला कहे कि ऐसा मत कहो, क्योंकि आत्मा जीव है और अजीव है, जीव तो सुक्ष्म निगोद

है और अजीव हाड मांस लोही है, ऐसा कह्यो कि म्हारा उपयोग आत्मा में रहता हूं ।

॥ पाठान्तर ॥

वस्तीके ऊपर दृष्टांत दुजो ।

वसी रह्यो उस पर नय ७ देखाड़े छै जिम किणही पुरुषने पुछ्यो तूं किहां वसे छै? तिवारे बोल्यो हूं लोकमें वसु छुं, ए वचन नेगम नय नो छै; परन्तु नेगम शुद्ध अशुद्ध दोय छै, जेने लोकमें वसतो कह्यो, ए अशुद्ध नेगम जाणवो, वले तेहनेज पुछ्यो लोक तो तीन छै, स्वर्ग (१) मर्त्त (२) पाताल (३), तूं किस लोकमें वसे छै? तेवारे थोड़ीसी शुद्ध नेगम नय वालो कहे छै, हूं मर्त्त लोकमें वसुं छूं, ए शुद्ध नेगम नयनो वचन छै वले पुछ्यो तिरछा लोक में असंख्याता द्वीप समुद्र छै, तूं किसा द्वीप समुद्रमें रहे छै? तेवारे बोल्यो हूं जम्बु

द्वीपमें वसु छु, एभी शुद्ध नेगम नय नो वचन छै; वले पुछ्यो जम्बु द्वीपमें क्षेत्र भरत प्रमुख घणा छै, तूं किस क्षेत्रमें वसे छै? तिवारे वोल्यो हूं मगध देशमें वसुं छुं, एभी शुद्ध नेगम नय नो वचन छै; वले पूछ्यो मगध देशमें नगर (ग्राम) घणा छै, तूं किसा नगर (ग्राम) में वसे छै? तिवारे वोल्यो, पांडलपुरं नगरमें वसुं छुं; पांडलपुर नगरमें तो घणा पाड़ा छै, तूं किसे पाड़ेमें वसे छै? तिवारे वोल्यो हूं अमुके पाड़े वसुं छुं, एभी शुद्ध नेगम नयनो वचन छै; वले पुछ्यो के पाड़ामें घर घणा छै; तूं किसे घरमें रहे छै? तिवारे वोल्यो अमुका घरमें मध्यसाला प्रमुख है जिसको नाम लिधो, एभी शुद्ध नेगम नयनो वचन छे; वले पुछ्यो घरमें जागा घणी छै तूं किसी जागामें वसै छै? तिवारे वोल्यो अमुकी जागामें वसुं छुं, जिस जागा ढोलीया प्रमुख है जिस

जागाको नाम लिधो ए वचन अत्यंत विशुद्ध नेगम नय रो जाणवो; यहां सुधी, नेगम नयनो वचन छै--शुद्ध, अशुद्ध नें विकल्प जाणवा इति नेगम ॥१॥ वले पूछ्यो घरमें जागा घणी छै, तूं किसी जागामें रहे छै? तेवारे बोल्यो जिस जागा ढोलीयो प्रमुख बिछावणो रहे छै, इतरी जागामें रहुं छुं, ए संग्रह नयनो वचन जाणवो; जे भणी ढोलीया, तकथा बिछावणा तथा शरीर जागा रूधे छै, ते सर्व आपण में संग्रह्या ते भणी संग्रह नयनो वचन छै, इति संग्रह ॥२॥ हवे वले पूछ्यो ढोलीया प्रमुख, बिछावणामें क्षेत्र (जागा) घणा छै, तूं किसा क्षेत्र (जागा) में रहे छै? तिवारे बोल्यो शरीर अवगाहणा प्रमाणे क्षेत्र (जागा) में रहुं छुं ए व्यवहार नय रो वचन छै, जेनें ढोलीया प्रमुखनी रूधी जगा टाल दिधी जीवनो व्यापर वर्ते हालण चालण रो, तेतली जागा लिधी इति

व्यवहार नय ॥३॥ वले पुछ्यो असंख्यात प्रदेश शरीर अवगाहणा प्रमाण क्षेत्रमें धर्मास्ति (१) अधर्मास्ति (२) पुद्गलास्ति (३) प्रमुखनी पण अवगाहणा छै तूं किसी अवगाहणांमें वसे छै ? तिवारे बोल्यो हुं चेतन गुणमें वसुं छुं, ते चेतना छै ते म्हारो गुण छै, अने धर्म अधर्म ना अचेतन स्वभाव छै ते मांही म्हारो गुण नथी, इण न्याये चेतन गुणमें वसुं छुं, ए ऋजुसुत्र नयनो वचन छै ॥४॥ वले पूछ्यो चेतनागुण नी प्रर्याय अनन्ती छै, ज्ञान चेतना, अज्ञान चेतना, इत्यादि चेतना छै, तूं किसी चेतनामें वसे छै ? तिवारे बोल्यो हुं ज्ञान चेतनामें वसुं छुं, यहां अज्ञान मिथ्या दृष्ट प्रमुख अशुद्ध चेतना टाली, ए शब्द नयनो वचन छै ॥५॥ वले पूछ्यो ज्ञान चेतना गुणनी प्रर्याय अनंती छै, तू किसा ज्ञान चेतना गुणमें वसे छै ? मत्य आदि

ज्ञानना भेद घणा, तूं किसी चेतन ना गुणमें वसे छै ? तिवारे बोल्यो आत्म-स्वरूपमें बसु छुं, आत्म नुं भव ज्ञान, चेतन गुणमें बसु छुं, यहां व्यवहार नय टली, निश्चय ज्ञान चेतन गुणमें बतायो, ए संमभिरूढ नयनो वचन छै ॥६॥ वले पुछ्यो आत्मा नुं भव चेतन गुणमां तो हानि वृद्धि घणी छै, भाव अपेक्षा घणा स्थानक छै, तूं किसे ठिकाने वसे छै? तिवारे बोल्यो जे हूं शुद्ध क्षायक भाव अवस्था निज स्वरुप सच्चीदानन्द शुक्ल ध्यान-रूप अतीत यहवो जे सिद्ध-रूप, अवस्था ने ठिकाने वसुं छुं, ए एवंभूतनय रो वचन छै ॥ ७ ॥

॥ पाठान्तर ॥

वस्तीके ऊपर दृष्टांत तीजो ।

सात नयों का वर्णन, जैसे कि किसी पुरुष

ने अमुक व्यक्तिको प्रश्न किया कि आप कहां पर वसते हैं तो उसने प्रत्युत्तरमें निवेदन किया कि मैं लोकमें वसता हूं यह अशुद्ध नैगम नयका वचन है, इसी प्रकार प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि, प्रियवर लोक तो तीन हैं जैसे कि स्वर्ग (१) मर्त्त (२) पाताल (३) आप कहां पर रहते हैं क्या तीनों लोकमेंही वसते हैं ? व्यक्ति उत्तर दियो कि नहींजी मैं तो मनुष्य लोकमें वसता हूं यह शुद्ध नैगम नय है ; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि मनुष्य लोकमें असंख्यता द्वीप समुद्र है, आप कौनसे द्वीपमें वसते हैं ? व्यक्ति उत्तर दिया कि जम्बु द्वीप नामके द्वीपमें वसता हूं, यह विशुद्धतर नैगम नय हैं ; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि महाशयजी जम्बु द्वीपमें तो महाविदेह आदि अनेक क्षेत्र हैं, आप कौनसे क्षेत्रमें निवास करते हैं ? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं भरत क्षेत्र

में वसता हूं, यह अतिशुद्ध नैगम नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि प्रियवर भरत खण्ड में छव (पट) खण्ड हैं, आप कौनसे खण्डमें निवास करते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं मध्य खण्डमें वसता हूं, यह विशुद्ध नैगम नय हैं; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि मध्य खण्डमें अनेक देश है, आप कौनसे देशमें वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं मगध देशमें वसता हूं, यह अति विशुद्ध नैगम नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि मगध देशमें अनेक ग्राम (नगर) है; आप कौनसे ग्राम (नगर) में वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया मैं पाटलिपुरमें वसता हूं यह अति विशुद्धतर नैगम नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि महाशयजी पाटलिपुरमें अनेक मोहल्ला है, तो आप कौनसे मोहल्ला (प्रतोली) में वसते हैं? व्य[illegible] उत्तर-

बहुलतर विशुद्ध नैगम नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि एक मोहल्लामें अनेक घर है, तो आप कौनसे घरमें वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं मध्य घर (बीचघर) में वसता हूं; यह विशुद्ध नय है यह सर्व उत्तरोत्तर शुद्ध-रूप नैगम नयके ही वचन है, वले प्रश्न-कर्त्ता प्रश्न किया कि मध्य घरमे तो महान् स्थान है आप कौनसे स्थानमे वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं स्व-शय्यामे वसता हूं, यह संग्रह नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि शय्यामें भी महान् स्थान है आप कहां पर रहते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि असंख्याता प्रदेश अवगाह-रूप में वसता हूं, यह व्यवहार नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि असंख्याता प्रदेश अवगाह-रुपमें धर्म, अधर्म आकाश पुद्गल इनके भी महान् प्रदेश है, आप क्यां सर्वमे ही

वसते है? व्यक्ति उत्तर दिया कि नहींजी मैं तो चेतन गुण स्वभावमें वसता हूं; यह ऋजुसुत्र नयका वचन है, वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि चेतन गुणकी पर्याय अनंती है जैसे कि ज्ञान चेतना, अज्ञान चेतना, आप कौनसे पर्यायमें वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं तो ज्ञान चेतनामें वसता हूं; यह शब्द नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि ज्ञान चेतना कि भी अनंत पर्याय है, आप कहां पर वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि निज गुण परिणत निज स्वरूप शुक्ल ध्यान पूर्वक ऐसी निर्मल ज्ञान स्वरूप पर्यायमें वसता हूं, यह समभिरूढ़ नयका वचन है; वले प्रश्नकर्त्तो प्रश्न किया कि निज गुण परिणत निज स्वरूप शुक्ल ध्यान पूर्वक पर्यायमें वर्धमान भाव अपेक्षा अनेक स्थान हैं, तो आप कहां पर वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन,

शुद्ध स्वरूप, निज रूप में वसता हूं यह एवंभूत नयका वचन है।

॥ दृष्टांत दुजो पायली ऊपर ॥

कोइ सुथार हाथमें वसोली (कवाड़ी) लेकर जा रहा था, किसीने पुछा, भाई कहां जाते हो? उसने कहा पायली काटने को; जब वह लकड़ी काट रहा था तब किसीने पुछा भाई क्या काटते हो? तब उसने कहा पायली (ए नेगम नयका मत) जब वह बनानेको बैठा तब किसीने पुछा, क्या बनाते हो? बोल्या के पायली, जब बनके तैयार होगइ तब किसीने पुछा, के यह क्या है? उसने कहा पायली; ऐसे नेगमनय और व्यवहार नय वालोंका मत; संग्रहनय वालो कहे के जब उसमें धान भरोगे तबही पायली कही जायगी।

हवे ऋजुसुत्र नय वालो कहे के जब उसमें धान भरके एंक दो तीन गिनोगे तबही वह पायली कही जायगी।

हवे शब्द नय आदि (शब्दनय, संभिरूढ़ एवंभूत नय) तीन नयवाले कहे के जब उसमें धान भरके उपयोग सहित गिनोगे तवही पायली कही जायगी।

॥ दृष्टांत तीजो सामायिक ऊपर ॥

सामायिक शब्दों पर सात नयकी वर्णन।

(१) नैगमनयके मतमें सामायिक करनेके जब परिणाम हुवे तवही सामायिक माने।

(२) संग्रहनयके मतमें सामायिकका उपकरण लेकर स्थान प्रतिलेखन जब किया गया तवही सामायिक माने।

(३) व्यवहारनयके मतमें सावध (सावज) जोगका जब परित्याग (पचखान) किया तवही सामायिक माने।

(४) ऋजुसुत्रनयके मतमें जब मन, वचन, कायाके जोग शुभ वर्तन लगे तवही सामायिक माने।

(५) शब्दनयके मतमें जव जीवको वा अजीवको सम्यक प्रकारसे जाण लिया फिर अजीवसे ममत्व भावको दूर कर दिया तव ही सामायिक माने ।

(६) समभिरूढ़नयके मतमें शुद्ध आत्माका नामही सामायिक हैं, (केवल ज्ञानने सामायिक माने) ।

(७) एवंभूतनयके मतमें शुद्ध-आत्मा शुद्ध-उपयोग युक्त सामायिक वाला होता है, ऐसा माने ।

॥ पाठान्तर ॥

॥ सामायिक पर सात नय ॥

(१) नैगमनय वालो सामायिक करनेका परणाम होनेसे सामायिक मानें ।

(२) संग्रह नयवालो सामायिकका उपकरण से सामायिक मानें ।

(३) व्यवहार नयवालो सामायिक दंडक उच्चारण करणेसे सामायिक मानें।

(४) ऋजुसुत्रनय ४८ मिनिट सामायिकमां परिणाम राखे तो सामायिक मानें।

(५) शब्दनय वालो क्षायिक समकीतवालाने सामायिक मानें।

(६) समभिरूढ़नय वालो केवल ज्ञानने सामायिक मानें।

(७) एवंभूतनय वालो सकल कर्म रहित सिद्धोंकुं सामायिक मानें।

॥ दृष्टांत चौथो धर्म ऊपर ॥

सात नयसे माना हुवा धर्म-शब्द सिद्ध करते हैं; नैगम नय एक अंशमात्र वस्तुके स्वरुपको देखकर सब वस्तुको ही स्वीकार करता है, जैसे कि नैगमनय सर्व मतोंके धर्मों को ठीक मानता है, क्योंकि नैगमनयका मत

है, कि सर्व धर्म मुक्तिके साधनकेवास्ते ही है ॥१॥ और संग्रहनय जो पूर्वज पुरुषोंकी रूढ़ी चली आती है उसको ही धर्म कहता है, क्यों कि उसका मन्तव्य है, कि पूर्व पुरुष हमारे अज्ञान नहीं थे, इसलिये उन्हींकी परंपराके ऊपर चलना हमारा धर्म है। इस नयके मतमें कुलाचारको ही धर्म माना है ॥२॥ व्यवहार नयके मतमें धर्मसे ही सुख उपलब्ध होता है और धर्म ही सुख करनेवाला है, इस प्रकारसे धर्म माना है, क्योंकि व्यवहार बाहिर सुख-रूप करणीको धर्म माना है ॥३॥ ऋजुसूत्र नय वैराग्य-रूप भावको ही धर्म कहता है। सो यह भाव मिथ्यात्वीको भी हो सकता है। अभव्यवत् ॥४॥ शब्दनय शुद्ध धर्म सम्यक्त पूर्वक ही मानता है, क्योंकि सम्यक्त ही धर्म का मूल है। सो यह चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीवोंको धर्मी कहता है ॥५॥ संभिरूढ़ नयके

(३) व्यवहार नयवालो सामायिक दंडक उच्चारण करणेसे सामायिक मानें।

(४) ऋजुसुत्रनय ४८ मिनिट सामायिकमां परिणाम राखे तो सामायिक मानें।

(५) शब्दनय वालो क्षायिक समकीत-वालाने सामायिक मानें।

(६) समभिरूढ़नय वालो केवल ज्ञानने सामायिक मानें।

(७) एवंभूतनय वालो सकल कर्म रहित सिद्धोंकुं सामायिक मानें।

॥ दृष्टांत चौथो धर्म ऊपर ॥

सात नयसे माना हुवा धर्म-शब्द सिद्ध करते हैं; नैगम नय एक अंशमात्र वस्तुके स्वरुपको देखकर सब वस्तुको ही स्वीकार करता है, जैसे कि नैगमनय सर्व मतोंके धर्मों को ठीक मानता है, क्योंकि नैगमनयका मत

है, कि सर्व धर्म मुक्तिके साधनकेवास्ते ही है ॥१॥ और संग्रहनय जो पूर्वज पुरुषोंकी रूढ़ी चली आती है उसको ही धर्म कहता है, क्यों कि उसका मन्तव्य है, कि पूर्व पुरुष हमारे अज्ञान नहीं थे, इसलिये उन्हींकी परंपराके ऊपर चलना हमारा धर्म है। इस नयके मतमें कुलाचारको ही धर्म माना है ॥२॥ व्यवहार नयके मतमें धर्मसे ही सुख उपलब्ध होता है और धर्म ही सुख करनेवाला है, इस प्रकारसे धर्म माना है, क्योंकि व्यवहार वाहिर सुख-रूप करणीको धर्म माना है ॥३॥ ऋजुसुत्र नय वैराग्य-रूप भावको ही धर्म कहता है। सो यह भाव मिथ्यात्वीको भी हो सकता है। अभव्यवत् ॥४॥ शब्दनय शुद्ध धर्म सम्यक्त पूर्वक ही मानता है, क्योंकि सम्यक्त ही धर्म का मूल है। सो यह चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीवोंको धर्मी कहता है ॥५॥ संभिरूढ़ नयके

मतमें जो आत्मा सम्यग् ज्ञान-दर्शन-चारित्र-युक्त उपादेय वस्तुओंको ग्रहण और हेय त्यागने योग्य पदार्थोंका परिहार, ज्ञेय जानने योग्य पदार्थोंको भली प्रकार जानता है पर गुणसे सदैव काल ही भिन्न रहनेवाला ऐसा जो आत्मा मुक्तिका साधक है, उसको ही धर्मी कहता है ॥६॥ एवंभूत नयके मतसे जो शुद्ध आत्मा कर्मोंसे रहित शुक्ल-ध्यान-पूर्वक जहांपर घातिय कर्मोंसे रहित आत्मा, ऐसे जानना कि आघातिये कर्म नष्ट हो रहे हैं उसका ही नाम धर्मी है ॥७॥

पाठान्तर।

॥ धर्म ऊपर सात नय उतारते हैं ॥

(१) नैगमनय वालो धर्म नामने धर्म माने।

(२) संग्रहनय वालो कुल आचारने धर्म माने।

(३) व्यवहारनय वालो पुण्यकी करनीनें धर्म मानें ।

(४) ऋजुसुत्रनय वालो अनित्य भावनें धर्म मानें (एणे भवी अभवी दोनो कुं मान्या)।

(५) शब्दनय वालो क्षायक समकित कुं धर्म मानें ।

(६) समभिरूढ़नय वालो स्वसत्ता परसत्ता जीवादी जाणके पर वस्तुका त्याग स्व-वस्तुमें रमण करनेवाले कुं धर्म मानें । अर्थात् क्षपक श्रेणी वाला कुं धर्म मानें ।

(७) एवंभूतनय वालो सकल कर्म-रहित सिद्ध अवस्था कुं धर्म मानें ।

॥ दृष्टान्त पांचमां बांण ऊपर ॥

(१) नैगमनय वालो किसी आदमी कुं बाण लागो तब बाणका दोप निकाले ।

(२) संग्रहनय वालो बांण फेंकने वालेका दोष निकाले।

(३) व्यवहारनय वालो ग्रह-गोचरका दोष निकाले।

(४) ऋजुसुत्रनय वालो आपना कर्मका दोष निकाले।

(५) शब्दनय वालो आपना जीव सुख दुःख बांध्या इस वास्ते जीवका दोष निकाले।

(६) समभिरुढ़ नय वालो भवितव्यता (ज्ञानीने ऐसाज भाव देखा था) ऐसा माने।

(७) एवंभूतनय वालो जीवने तो सुख दुःख है नहीं जीव सदा सुखी सच्चिदानन्द निर्मल आत्मा है ऐसा माने।

॥ दृष्टान्त छठो राजा ऊपर ॥

(१) नैगमनय वालो हाथ पगमें शुभ लक्षण वा शुभ रेखा देखीने राजा माने।

(२) संग्रहनय वालो राजकुलमें उत्पन्न होनेसे राजा माने ।

(३) व्यवहारनय वालो युवराज कुं राजा माने ।

(४) ऋजुसुत्रनय वालो राजकार्यमें उपयोग प्रवर्त्तने से राजा माने ।

(५) शब्दनय वालो राजतख्त ऊपर बैठे-हुयेको राजा माने ।

(६) समभिरूढ़नय वालो राज अवस्थाकी पर्याय प्रवर्तन-रूप कार्य करनेसे राजा माने ।

(७) एवंभूतनय वालो पुर्ववत् राजाकी सब लोक आज्ञा परमाण करे, उपयोग सहित राज भोगवे उसकुं राजा माने ।

॥ दृष्टान्त सातमो जीव ऊपर ॥
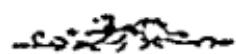
किसीने प्रश्न किया कि सातनयके मतसे जीव किस प्रकारसे सिद्ध होता है ? तो उसका

उत्तर यह है कि, सात नय जीवको इस प्रकार से मानते हैं, जैसे कि नैगमनयके मतसे गुण पर्याय-युक्त जीव माना है और जो शरीरमें धर्मादि-द्रव्य हैं वे भी जीव संज्ञक कही है ॥१॥ संग्रह नयके मतसे असंख्यात प्रदेश-रूप जीव द्रव्य माना गया है, जिसमें आकाश द्रव्यको वर्जके शेष द्रव्य जीवं-रूपमें ही माने गये हैं ॥२॥ व्यवहारनयके मतसे जिसमें अभिलाषा, तृष्णा, वासना है उसका ही नाम जीव है, इस नयने लेश्या योग इन्द्रियें धर्म इत्यादि जो जीवसे भिन्न है, इनको भी जीव माना है, क्योंकि जीवके सहचारी होनेसे ॥३॥ ऋजुसुत्रनयके मतसे उपयोग-युक्त जीव माना गया है। इसमें लेश्या योगादिकको दूर कर दिया है ; किन्तु उपयोग शुद्ध ज्ञान-रूप अशुद्ध अज्ञान दोनोंको ही जीव माना है ; क्योंकि मिथ्यात्व मोहनी-कर्म-पूर्वक जीव सिद्ध कर

दिया है ॥४॥ और शब्दनयके मतसे जो तीन कालमें शुद्ध उपयोग-पूर्वक है वही जीव है; अपित्र (इसलिये) सम्यक्त मोहनी-कर्मकी वर्गना इस नयने शुद्ध उपयोग अर्थ ग्रहण कर लिया ॥५॥ समभिरूढ़नयके मतसे जिसकी शुद्ध-रूप सत्ता है और स्व-गुणमें ही मग्न है; ज्ञायक सम्यक्त पूर्वक जिसने आत्माको जान लिया है उसका नाम जीव है, इस नयके मतमें कर्म संयुक्त ही जीव है ॥६॥ एवंभूतनयके मतसे शुद्ध-आत्मा, केवल-ज्ञान, केवल-दर्शन-संयुक्त, सर्वथा कर्म रहित, अजर-अमर, सिद्ध-बुद्ध, पारगत इत्यादि नाम-युक्त सिद्ध आत्माको ही जीव माना है ॥७॥ इस प्रकार सातनय जीव को माना है ।

॥ दृष्टान्त आठमो सिद्ध ऊपर ॥

सिद्ध शब्दका वर्णन---नैगम नयके मतमें

जो आत्मा भव्य हैं वे सर्वही सिद्ध हैं, क्योंकि उनमें सिद्ध होनेकी सत्ता है ॥१॥ संग्रहनयके मतसे सिद्ध संसारी-जीवोंमें कुछ भी भेद नहीं है, केवल सिद्ध आत्मा कर्मोंसे रहित हैं; संसारी जीव कर्मोंसे संयुक्त है ॥२॥ व्यवहार नयके मतसे जो विद्या सिद्ध हैं व लब्धि-संयुक्त हैं और लब्धि द्वारा अनेक कार्य सिद्ध करते हैं, वेही सिद्ध हैं ॥३॥ ऋजुसुत्रनय जिसको सम्यक्त प्राप्त है और अपनी आत्माके स्वरूपको सम्यक्त प्रकारसे देखता है, उसका ही नाम सिद्ध है ॥४॥ शब्दनयके मतसे जो शुक्लध्यान पर आरूढ़ है और कष्टको सम्यक प्रकारसे सहन करना, गज सुखमालवत्, उसका ही नाम सिद्ध है ॥५॥ संभिरूढ़ नयके मतसे जो केवल-ज्ञान, केवल-दर्शन, सम्पन्न १३ वें व १४ वें गुणस्थानवर्ती जीव हैं उनकाही नाम सिद्ध है ॥६॥ एवंभूतनयके मतसे जिसने सर्व

कर्मोंको दूर कर दिया है, केवल-ज्ञान केवल-दर्शन संयुक्त लोकाग्र में विराज मान हैं, ऐसे सिद्ध-आत्माको ही सिद्ध माना गया है, क्योंकि सकल कार्य उसीका ही आत्माके सिद्ध हैं ॥७॥

इत्यादिक सर्व पदार्थ ७ नयकरी प्रमाण कीजै ।

ए ७ नय माने ते सम्मदृष्टि। एक नय माने और छव नय न माने, दोय नय माने और पांचनय न माने, ऐसे जावत छव नय माने और एक नय न माने ते मिथ्या दृष्टि।

॥ दुजो निक्षेपा द्वार ॥

निक्षेपाका च्यार भेद (१) नाम (२) स्थापना (३) द्रव्य (४) भाव।

(१) नाम निक्षेपाका तीन भेद (१) यथार्थ नाम (२) अयथार्थ नाम (३) अर्थशून्य नाम।

(१) यथार्थ नाम उसको कहिये जैसा जिसका नाम वैसा उसमें गुण होय जैसे जीव को नाम हंस जीव को नाम चैतन्य, जीवको नाम आत्मा, जीवको नाम प्राणी भूत इत्यादि जीवको विनय, जीवको वेदना। जो नाम है वैसा उसमें गुण है।

(२) अयथार्थ नाम उसको कहिये जिसमें ...सा गुण न होय जैसे ... माणक-

लाल, पन्नालाल, हीरालाल मोतीलाल, फूसाराम, धूलीराम ; वाईजातमें, केसरवाई कस्तुरीवाई इत्यादि ।

(३) अर्थ शून्य नाम उसको कहिये जिसका अर्थ न होय जैसे--छींक, उवासी, खांसी, हांसी, गाय की रम्भावना वाजिंत्रको शब्द वगैरे इसका कुछ अर्थ नहीं होता है ॥

(२) स्थापना निक्षेपका दोय भेद (१) सद्भाव स्थापना (२) असद्भाव स्थापना।

(१) सद्भाव स्थापना किसको कहिये ? सरीखी मूर्ति, सरीखो आकार (च्यार भूजाकी मूर्त्ति च्यार भूजाको आकार) पोठीयाकी मूर्ति और पोठीयाको आकार।

(२) असद्भाव स्थापना किसको कहिये ? कोई गोलमटोल पत्थर लेकर उसको सिन्दुर तवक, मालीपाना लगाकर कहे कि ये म्हारा भेरु जी है, अथवा कोई पांच पचेटा (पांचीका)

रखकर कहेके ये म्हारी सीतला माता है।

सद्भाव स्थापना का १० भेद।

(१) कंठक मेवा (कष्टकी) (२) चित्तक (चित्रकी) (३) पोतक मेवा (पोत चीडकी) (४) लेपक मेवा (मांडणेकी) (५) पुरी मेवा (भरत) (६) वेड़ी मेवा (छेद कोरके कोरणी करे) (७) गंठी मेवा (डोर प्रमुखमें गांठ लगाय कर) (८) संघाह मेवा (किसी वस्तुका संयोग मिलाय कर) (९) अखेवा (अकस्मात् कोई वस्तु पडनेसे आकार वन जाय तथा चावल जमायके) (१०) वराडेवा (वस्त्र, शंख) ये दश सद्भाव स्थापना,

असद्भाव स्थापनाका दस भेद पूर्व कह्या मुताबिक।

एवं वीस हुवे ये वीस एक जीव आश्री

और ये ही वीस वहू जीव आश्री एवं चालीस हुया जैसे कि सद्भाव स्थापना एक जीव आश्री १० वहू जीव आश्री १० ए वीस असद्भाव स्थापना; एक जीव आश्री १० वहू जीव आश्री १० ए वीस; एवं ४० प्रकारकी स्थापना।

(३) द्रव्य निक्षेपाका दोय भेद (१) आगम (२) नो आगम।

आगम केहता:---शब्दादिक का अर्थ उपयोग रहित शून्य-चित्त से करे, शास्त्र भणे पण अर्थ न समझे।

नोआगमरा तीन भेद (१) जाणग शरीर (२) भव्य शरीर (३) जाणग भव्यव्यक्ति-रक्त शरीर।

जाणगशरीर केहता--कोई एक श्रावक आवसक प्रतिक्रमणका जाण काल प्राप्त हुयो उसका शरीरको देखके कहे के आ श्रावक आवसक जानता था, आवसक करता था

यथा दृष्टांत,—घी कुम्भ आश्रित अने मधु कुम्भ आश्रित ए घी का घट (घड़ा) था मधुका घट था।

भव्य शरीर कहता--- जैसे किसी श्रावक के पुत्र जन्मा, उसीको किसी विद्वान देखके कहा के ए आवसक करेगा, भणेगा और जाणेगा, जैसे घी कुम्भ भविष्यति मधु कुम्भ भविष्यति, घीका घट होगा, मधुका घट होगा।

जाणग भव्यव्यक्ति-रक्त शरीरका तीन भेद (१) लौकिक (२) लोकोत्तर (३) कुपरावचन।

लौकिक केहता—जैसा कोइ राजेश्वर, तलवर, मांडवी, कौडवी, शेठ, सेनापति आदि, प्रात समय स्नान मञ्जन करके राजसभामें जावे (अर्थात् नित आवश्यक कार्य करवा जोग करै जिसको लौकिक द्रव्य आवश्यक कहा जाता है)।

लोकोत्तर—जेइमें (जे लोकोमें) समण गुण मुक्का, (जे साधु गुण रहित जोग)।

छकाय निराणुकंपा—छव कायकी दया रहित।

हयाइव उदंमा—घोड़े जैसा उन्मत्त (तोफानी)।

गयाइव निरंकुश—हाथी जैसा निरंकुशी याने अंकुश रहित।

घट्टा—शरीरकी सुश्रपा करे।

मठा (मठालंवी) तिपुठा— तप-रहित।

पाडुरपट पउरणा---स्वच्छ वस्त्रके धारी।

जिणाणं—आणा आण रहित, जिण आज्ञा विराधिक भगवानकी आज्ञा रहित।

उभय कालं आवसग ठाव ति---दोनों वक्त प्रतिक्रमण करे।

ए लोकोत्तर द्रव्य आवसग है उसको लोकोत्तर द्रव्य आवसक कहीजे।

छव कायकी अनुकंपा, उभयकालो आवसक ठयंती (छकायनिरणुकंपा जिणाणमणाणाए उभओकालं आवसक ठयंति जिसको लोकोत्तर द्रव्य आवसक कहा जाता है ।

कुपरावचन केहता—कोई चखचिरिआ (वाकलके वस्त्र पहननेवाले), चरमखंडीया (मृगादिका चर्म रखने वाले), पांडुरंगा (भगवा वस्त्र पहनेवाले) पासदंता, इन्द्रसभामें, खंधसभामें, यक्षसभामें, भूतसभामें जावे सुवहमें उठ करके, स्नान करके, धूप-दीप करके, तीलक छापा करके पीछे भोजन करे उसको कुपरावचन द्रव्य आवसक कहते हैं ।

चोथो भावनिक्षेपाका दोय भेद—(१) आगमथकी (२) नोआगमथकी ।

आगमथकी कहता---शब्दादिक के अर्थ उपयोग सहित करे ।

नोआगमथकीरा ३ भेद---(१) लौकिक

(२) लोकोत्तर (३) कुपरावचन ।

लौकिक कहता---जो कोई रायवां, तलवर, माडंबी, कोड़बी, इब्भसेठी सेनापति सवेरे तो उपयोग सहित भारत और रामको रामायण, सांभले, उसको लौकिक भाव आवसक कहते हैं।

लोकोत्तर कहता--जो कोई साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका, तइमने, तहचित्ते, तहलेशाय, तहभ्रुसियं (अध्यवसाय) दोय वखत आवसक प्रतिक्रमण (आवसक ठयंती) शुद्ध उपयोग सहित करे, उसको लोकोत्तर भाव आवसक कहते हैं।

कुपरा वचन कहता---कोई चखचिरिया, चरमखंडिया, पांडुरगा, पासडंता सवेरमें उठ कर स्नान करे, धूप-दीप करे, तिलक छापा करे और ओंकार शब्द उपयोग सहित पोपण करके भोजन करे उसको कुपरावचन भाव आवसक कहते हैं।

यह ४ चार निक्षेपा नव तत्व ऊपर उतारते हैं ।

॥ १ जीव-तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपे--जीव ऐसा नाम, सो नाम निक्षेपो, अजीवका नाम जीव रखे तो भी नाम निक्षेपाके अनुसारसे उसे जीव ही माना जाय ।

(२) स्थापना निक्षेपे---चित्राम प्रमुखकी स्थापना करे सो स्थापना निक्षेपो ।

(३) द्रव्य निक्षेपे---षट द्रव्यमेंसे जो जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशवंत हैं सो द्रव्य-निक्षेपो ।

(४) भाव निक्षेपे--(१) उदय, (२) उपशम, (३) क्षायक, (४) क्षयोपशम, (५) प्रणामिक ।

इन ५ भावमें प्रवर्त्ते सो भाव निक्षेपो इन पांच भाव निक्षेपेकी ५३ प्रकृति।

(१) उदय भावकी २१ प्रकृति---

गति ४, लेश्या ६, कषाय ४, वेद ३, असिद्ध १, अन्नाणी १, अवृति १, मिथ्यात्वी १, यह २१ प्रकृति।

(२) उपसम भावकी २ प्रकृति---

उपशमसम्यक्त और उपशमचारित्र ये दोय।

(३) क्षायककी ६ प्रकृति---

दानांतराय आदि पांच अंतरायका क्षय ५, केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १, क्षायक सम्यक्त १, क्षायिकचारित्र १, यह नव।

(४) क्षयोपशमकी १८ प्रकृति---

ज्ञान ४ पहला, अज्ञान ३, दर्शन ३ पहला, अंतराय ५, और क्षयोपशमचारित्र १, क्षयोपशमसमकित १, संयमासंयम १, यह अठारह प्रकृति।

(५) प्रणामिकको ३ प्रकृति---
(१) भव्य प्रणामि (२) अभव्य प्रणामि
(३) जीव प्रणामि।
यह पांच भाव निच पेकी ५३ प्रकृति हुई।

अब पांच भावके भेद :—
(१) उदय भावके २ भेद--(१) उदय और (२) उदयनिष्पन्न।
पहला—उदय सो तो आठ कर्मोंका जाणना।

दूसरा—उदयनिष्पन्नके दोय भेद—
जीव उदय, अजीव उदय।

जीव उदयके २१ भेद—
गति ४, लेश्या ६, कषाय ४, काया ६, वेद ३, मिथ्यात्व १, अव्रत १, अज्ञाणी १, असन्नी १, अहारथा १, संसारथा १, असिद्धा १, अकेवली १, यह २१ भेद।

अजीव उदयके ३० भेद—
शरीर ५, शरीरके प्रणमें पुद्गल ५, वर्ण

५, गंध २, रस ५, और स्पर्श ८, यह ३० भेद।

(२) उपशम भावके २ भेद---

उपशम और उपशमनिष्पन्न।

उपशम--८ कर्मोंको ढके हुये को जाणना।

उपशमनिष्पन्न के ११ भेद—

कषाय ४, रागद्वेष १, दर्शनमोह १, चारित्रमोह १, दर्शनलब्धि १, चारित्र लब्धि १, छद्मस्थ १ और वीतरागी १, यह ११ भेद।

(३) क्षायक भावके २ भेद---

क्षय और क्षयनिष्पन्न।

(१) क्षय—आठ कर्मोंका क्षय।

(२) क्षय निष्पन्नके ३७ भेद---

ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ६, वेदनी २, मोहनी ८ (क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, दर्शनमोह, चारित्रमोह), ४ गतिका आयुष्य, नाम २, गोत्र २, अंतराय ५, यह

३७ प्रकृतिको चीण करे सो चायक भावके चय निष्पन्न।

चयोपसमके २ भेद—

(१) चयोपशम, (२) चयोपशम निष्पन्न।

चयोपशम---८ कर्मोंका चयोपशम।

(२) चयोपशम निष्पन्न के ३० भेद—

ज्ञान ४, अज्ञान ३, दर्शन ३, दृष्टि ३, चारित्र ४, पहला, लब्धी ५, पंच इन्द्रीकी चरिताचरित्र१, श्रावकपणा १, आचार्य्यपद १, दानादिक लब्धी, ५ (पूर्वधर आचार्य्य द्वादशांगी जाण) यह ३० भेद।

प्रणामिक भावके २ भेद---

सादीय और अणादीय।

सादीयके अनेक भेद---

जैसे---जूना सूरा, जूना घीया, जूना तंदूल, अजो, अजरूखा, गंधर्व, नागराय, उल्कापात, दिशिदाहा, गर्जारव विजली, निग्घाय, बाल-

चन्द्र, यक्षचिन्ह, धुंवर, ओस, रजघात, चन्द्रग्रहण, सूर्य्यग्रहण, चन्द्रप्रतिवेश, प्रतिचन्द्र, प्रतिसूर्य्य, इन्द्र धनुप, उदकमच्छ, अमोह, वर्षाद, वर्षकी धारा, ग्राम, नगर, पर्वत, पाताल, कलशा, नरकवास, सात नरक, भवन, सुधर्मादेवलोक, जावत इस्सी पभारा; मुक्त सिला, प्रमाणु पुद्गल जावत अनंत प्रदेशी खंध, इन सबको शादीय प्रणामिक कहना।

अब अणादीय प्रणामिकके अनेक भेद जैसे---धर्मास्ति, अधर्मास्ति, जाव, अधासमय लोक, अलोक, भव सिद्धिय, अभव सिद्धिय इत्यादि इति ५ भाव, इन भावोंमें प्रणाम प्रवर्त्ते तव भाव निक्षेपे जीव तत्वपर लागु होता है।

॥ २ अजीव तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपेसे अजीव ऐसा नाम

सो नाम निक्षेपो, (२) स्थापना निक्षेपसे अजीवकी स्थापना कर अजीवका स्वरूप बतावे सो स्थापना निक्षेपो, (३) द्रव्य निक्षेपसे धर्मास्तिका चलण, अधर्मास्तिका स्थिर, अकाश का अवकाश; कालका वर्तमान, पुद्गलका वर्णादि इत्यादि द्रव्यका स्वभावसो द्रव्य निक्षेपो, (४) भावनिक्षेपसे पूर्वोक्त पांचही द्रव्यके सद्भाव-रूप गुण है उसे भाव निक्षेपो कहते हैं ।

॥ ३ पुण्य तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपसे पुण्य ऐसा नाम सो नाम निक्षेपो, (२) स्थापना अक्षरादि स्थापे सो स्थापना निक्षेपो (३) द्रव्य निक्षेपे शुभ प्रकृतिकी वर्गणा जीव प्रदेशके साथ प्रणमे सो द्रव्य निक्षेपो, (४) भाव निक्षेपसे पुण्य प्रकृतिके उदयसे जीव हर्ष आह्लाद साता वेदे

सो भावनिक्षेपो।

॥ ४ पाप तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपेसे पाप ऐसा नाम सो नाम निक्षेपो (२) स्थापना निक्षेपेसे अक्षरादि स्थापके बतावे सो स्थापना निक्षेपो, (३) द्रव्य निक्षेपेसे अशुभ कर्मकी वर्गणा द्रव्यपणें प्रगमें सो द्रव्य निक्षेपो, (४) भाव निक्षेपेसे पापके उदयसे जीव दुःख वेदे सो भाव निक्षेपो।

॥ ५ आश्रव तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपेसे आश्रव ऐसा नाम सो नाम निक्षेपो, (२) स्थापना निक्षेपेसे अक्षरादि स्थापना सो स्थापना निक्षेपो (३) द्रव्य निक्षेपेसे मिथ्यात्वादि प्रकृति तथा नाम और मोह कर्मकी प्रकृति आत्मके साथ लोली-भूत हो कर कर्म शक्ति सहित पुद्गल ग्रहण

करे उन प्रयोगसे पुद्गलका द्रव्याश्रव यह द्रव्य निक्षेपो, (४) भाव निक्षेपेसे मिथ्यात्वादिक प्रकृतिका उदय होय जीवके भाव परिणाममें सो भाव निक्षेपो ।

॥ ६ संवर तत्व ॥

(१)नाम निक्षेपे संवर ऐसा नाम सो नाम निक्षेपो (२) स्थापना निक्षेपे से अक्षरादि स्थापे सो स्थापना निक्षेपो (३) द्रव्य निक्षेपेसे सम्यक्त्वादि व्रत धारकर आश्रव रोके सो द्रव्य निक्षेपो (४) भाव निक्षेपेसे आत्माका अकंपपणा देशथकी तथा सर्वथकी होय सो भाव निक्षेपो ।

॥ निर्जरा तत्व ॥

(१-२) नाम और स्थापना तो पूर्ववत् (३) द्रव्य निक्षेपेसे जीवके प्रदेशसे कर्म पुद्गल

खिरे सो, (४) भाव निक्षेपेसे आत्मा निर्मल हो कर ज्ञान लब्धी क्षयोपशम लब्धी, क्षायक लब्धी इत्यादि लब्धी प्रगटे सो भाव निक्षेपो ।

॥ ८ बंध तत्व ॥

(१-२) नाम और स्थापना पूर्ववत्, (३) द्रव्य निक्षेपेसे कर्म वर्गणाके पुद्गल आत्मप्रदेशसे बंधे सो, (४) भाव निक्षेपेसे मद्यपान जैसी, बंधकी छाक चढ़े सो भाव निक्षेपो ।

॥ ९ मोक्ष तत्व ॥

(१-२) नाम और स्थापना पूर्ववत्, (३) द्रव्य निक्षेपेसे जीवका निर्मल पणा, (४) भाव निक्षेपेसे आत्माके निज गुण क्षायिक समकित केवल ज्ञान सो भाव निक्षेपो ।

इति ४ निक्षेपा ९ तत्व ऊपर उतारया सो समास ।

॥ तीजो द्रव्य, गुण, पर्याय ॥

द्रव्य केहता---(१) जीव द्रव्य (२) अजीव द्रव्य।

गुण केहता--ज्ञानादिक।

पर्यायका दोय भेद—

(१) आत्मभावी (२) कर्मभावी।

आत्मभावी केहता—ज्ञान, दर्शन अने चारित्र।

कर्मभावी केहता--नरकादिक च्यार गति।

॥ चोथो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव ॥

द्रव्य केहता—षट द्रव्य (छव द्रव्य)

क्षेत्र केहता—लोक अकाश प्रदेश।

काल केहता—समय आवलकादिक जाव पुद्गल परावर्तन सुधी।

भाव का तीन भेद—

(१) स्वभाव (२) गुण (३) पर्याय, स्वभाव तो वस्तुको स्वभाव, गुण जाण पणो, पर्याय पलटे।

॥ पांचमो द्रव्य ने भाव ॥

द्रव्यथी जीव शाश्वतो छै।

भावथी जीव अशाश्वतो छै, जैसे किसी भमरे ने काष्ट कोर्यु ते कोरनीमें कक्को [क] कोराणो पण भमरो नहीं जाणेके में कक्को [क] कोर्यु, स्वभावे कक्को [क] कोराणो, कोई पंडित पुरुष आवी कक्को [क] देख्यो और कके [क]

की पर्याय ओलखी ने कह्यो के यह ककाे [क] अक्षर छै, भमरेके लिये द्रव्य ककाे [क] है और पंडित के लिए भाव ककाे [क] है।

॥ छठो कारण कार्य ॥

कारण है सो कार्यकुं प्रकट करनेवाला है, जैसे कुंभार घट बनाना चाहे तो दंड, चक्रादि होनेसे घट वन सकता है; जैसे किसी साहुकार को रत्नद्वीप जाणा है, बीचमें समुद्र आया तब नावमें बैठकर रत्नद्वीप जा सकता है, रत्नद्वीप जाना ए कार्य है और नाव कारण है।

॥ सातमो निश्चय, व्यवहार ॥

निश्चयमें अग्नि बले, व्यवहारमें घर बले।

निश्चयमें तेल जले, व्यवहारमें दीपक जले ।
निश्चयमें आप आवे है, व्यवहारमें गाम आयो ।
निश्चयमें पाणी चूवे, व्यवहारमें घर चूवे ।
निश्चयमें पाणी पड़े, व्यवहारमें परनाल पड़े ।
निश्चयमें वैल चाले, व्यवहारमें गाडी चाले ।
निश्चयमें जीव जीवे, व्यवहारमें जीव मरे ।

आठमो उपादान, निमित्त ।

उपादान गायको, निमित्त गवालियेको, जब दूधकी प्राप्ति हुई ।

उपादान दूधको, निमित्त खटाइ (जावण) को, जब दहीकी प्राप्ति हुई ।

उपादान दहीको, निमित्त विलोवणेको, जब माखनकी प्राप्ति हुई ।

उपादान माखनको, निमित्त अग्निको जब घी की प्राप्ति हुई।

उपादान मट्टीको, निमित्त कुम्हारको, जब घड़ेकी प्राप्ति हुई।

उपादान शिष्यको, निमित्त मिल्यो गुरुको, जब ज्ञानकी प्राप्ति हुई।

उपादान भव्य जीवको, निमित्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तपको, प्राप्ति हुई मोक्षकी।

॥ नवमो प्रमाण द्वार ॥

(श्रीजैन सिद्धान्त प्रवेशिकासे उद्धृत)।

प्रमाण किसको कहते हैं ?

सच्चे ज्ञानको प्रमाण कहते हैं।

प्रमाणके कितने भेद हैं ?

दो भेद हैं, एक प्रत्यक्ष और दूसरा परोक्ष।

प्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

जो पदार्थको स्पष्ट जाने

प्रत्यक्षके कितने भेद हैं?

दो भेद हैं—एक सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष दूसरा पारमार्थिकप्रत्यक्ष।

सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

जो इन्द्रिय और मनकी सहायतासे पदार्थको एकदेश स्पष्ट जाने।

पारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

जो बिना किसीकी सहायताके पदार्थको स्पष्ट जाने।

पारमार्थिकप्रत्यक्षके कितने भेद हैं?

दो भेद हैं—एक विकलपारमार्थिक दूसरा सकलपारमार्थिक।

विकलपारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

जो रूपी पदार्थोंको बिना किसीकी सहायताके स्पष्ट जाने।

विकलपारमार्थिकप्रत्यक्षके कितने भेद हैं?

दो भेद हैं—एक अवधिज्ञान दूसरा मनःपर्ययज्ञान।

अवधिज्ञान किसको कहते हैं?

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी मर्यादा लिये जो रूपी पदार्थको स्पष्ट जाने।

मनःपर्ययज्ञान किसको कहते हैं ?

द्रव्यक्षेत्रकालभावकी मर्यादा लिये हुए जो दूसरेके मनमें स्थित हुए रूपी पदार्थको स्पष्ट जानै।

सकलपारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं ?

केवल ज्ञानको।

केवलज्ञान किसे कहते हैं ?

जो त्रिकालवर्त्ती समस्त पदार्थोंको युगपत् (एकसाथ) स्पष्ट जाने।

परोक्षप्रमाण किसे कहते हैं ?

जो दूसरेकी सहायतासे पदार्थको स्पष्ट जानै।

परोक्ष प्रमाणके कितने भेद हैं ?

पांच हैं—स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम।

स्मृति किसको कहते हैं ?

पहिले अनुभव किये हुए पदार्थके याद करनेको स्मृति कहते

प्रत्यभिज्ञान किसको कहते हैं ?

स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थोंमें जोड़रूप ज्ञान प्रत्यभिज्ञान कहते हैं। जैसे—यह वही मनुष्य है, जिसे देखा था।

प्रत्यभिज्ञानके कितने भेद हैं ?

एकत्वप्रत्यभिज्ञान, सादृश्यप्रत्यभिज्ञान आदि अनेक भेद हैं

एकत्वप्रत्यभिज्ञान किसको कहते हैं ?

स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थमें एकता दिखाते हुए जोड़रूप ज्ञानको एकत्वप्रत्यभिज्ञान कहते हैं। जैसे—यह वही मनुष्य है, जिसे कल देखा था।

सादृश्यप्रत्यभिज्ञान किसको कहते हैं ?

स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थमें सादृश्य दिखाते हुए जोड़रूप ज्ञानको सादृश्यप्रत्यभिज्ञान कहते हैं। जैसे—यह गौ गवयके (रोझके) सदृश है।

तर्क किसको कहते हैं ?

व्याप्तिके ज्ञानको तर्क कहते हैं।

व्याप्ति किसको कहते हैं ?

अविनाभावसंबन्धको व्याप्ति कहते हैं।

अविनाभावसंबंध किसको कहते हैं ?

जहां २ साधन (हेतु) होय, वहां २ साध्यका होना और जहां २ साधन नहीं होय, वहां २ साधनके भी न होने को अविनाभावसंबंध कहते हैं। जैसे—जहां जहां धूम है, वहां २ अग्नि है और जहां २ अग्नि नहीं है, वहां २ धूम भी नहीं है।

साधन किसको कहते हैं ?

जो साध्यके विना न होवे। जैसे—अग्निका हेतु (साधन) धूम।

साध्य किसको कहते हैं ?

इष्ट अबाधित असिद्धको साध्य कहते हैं।

इष्ट किसको कहते हैं ?

वादी और प्रतिवादी जिसको सिद्ध करना चाहें उसको इष्ट कहते हैं।

अबाधित किसको कहते हैं ?

जो दूसरे प्रमाणसे बाधित न हो। जैसे—अग्निका ठंढापन प्रत्यक्षप्रमाणसे बाधित है, इस कारण यह ठंढापन साध्य नहीं हो सकता।

असिद्ध किसको कहते हैं ?

जो दूसरे प्रमाणसे सिद्ध न हो, उसे असिद्ध कहते हैं। अथवा जिसका निश्चय न हो, उसे असिद्ध कहते हैं।

अनुमान किसको कहते हैं ?

साधनसे साध्यके ज्ञानको अनुमान कहते हैं।

हेत्वाभासके (साधनाभास) किसको कहते हैं ?

सदोष हेतुको।

हेत्वाभासके कितने भेद हैं ?

चार हैं—असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक (व्यभिचारी) और अकिंचित्कर।

असिद्धहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

जिस हेतुके भावका (गैरमौजूदगीका) निश्चय हो, अथवा उसके सद्भावमें (मौजूदगीमें) सन्देह (शक) हो, उसको असिद्ध-हेत्वाभास कहते हैं। जैसे "शब्द नित्य है। क्योंकि नेत्रका विषय है।" परंतु शब्द कर्णका विषय है, नेत्रका नहीं हो सकता, इस कारण "नेत्रका विषय" यह हेतु असिद्धहेत्वाभास है।

विरुद्धहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

साध्यसे विरुद्ध पदार्थके साथ जिसकी व्याप्ति हो, उसको विरुद्धहेत्वाभास कहते हैं। जैसे—"शब्द नित्य है। क्योंकि परिणामी है" इस अनुमानमें परिणामीकी व्याप्ति अनित्यके साथ है, नित्यके साथ नहीं है। इसलिये नित्यत्वका "परिणामी हेतु" विरुद्ध-हेत्वाभास है।

अनैकान्तिक (व्यभिचारी) हेत्वाभास किसको कहते हैं ?

जो हेतु पक्ष सपक्ष विपक्ष इन तीनोंमें व्यापै, उसको अनैकान्तिकहेत्वाभास कहते हैं। जैसे— "इस कोठेमें धूम है। क्योंकि इसमें अग्नि है।" यहां अग्नि हेतु पक्ष सपक्ष विपक्ष तीनोंमें व्यापक होनेसे अनैकान्तिकहेत्वाभास है।

पक्ष किसको कहते हैं ?

जहां साध्यके रहनेका शक हो। जैसे ऊपरके दृष्टान्तमें कोठा।

सपक्ष किसको कहते हैं ?

जहां साध्यके सद्भावका (मौजूदगीका) निश्चय हो। जैसे—धूमका सपक्ष गीले इंधनसे मिली हुई अग्निवाला रसोई घर है।

विपक्ष किसको कहते हैं ?

जहां साध्यके अभावका (गैरमौजूदगीका) निश्चय हो। जैसे—अग्निसे तपा हुआ लोहेका गोला।

अकिञ्चित्करहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

जो हेतु कुछ भी कार्य (साध्यकी सिद्धि) करनेमें समर्थ न हो।

अकिञ्चित्करहेत्वाभासके कितने भेद हैं ?

दो हैं—एक सिद्धसाधन, दूसरा बाधित विषय।

सिद्धसाधन किसको कहते हैं ?

जिस हेतुका साध्य सिद्ध हो। जैसे—अग्नि गर्म है। क्योंकि स्पर्श इन्द्रियसे ऐसा ही प्रतीत होता है।

बाधितविषयहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

जिस हेतुके साध्यमें दूसरे प्रमाणसे बाधा आवे।

बाधितविषयहेत्वाभासके कितने भेद हैं ?

प्रत्यक्षबाधित, अनुमानबाधित, आगमबाधित, स्ववचनबाधित आदि अनेक भेद हैं।

प्रत्यक्षबाधित किसको कहते हैं ?

जिसके साध्यमें प्रत्यक्षसे बाधा आवे। जैसे "अग्नि ठण्डी है।

क्योंकि यह द्रव्य है।" तो यह हेतु प्रत्यक्षबाधित है।

अनुमानबाधित किसको कहते हैं ?

जिसके साध्यमें अनुमानसे बाधा आवे। जैसे "घास आदि कर्त्ताकी बनाई हुई है। क्योंकि—ये कार्य है।" परन्तु इसमें इस अनुमानसे बाधा आती है कि घास आदि किसीकी बनाई हुई नहीं है। क्योंकि इनका बनानेवाला शरीरधारी नहीं है। जो जो शरीर धारीकी बनाई हुई नहीं है, वे २ वस्तुएं कर्त्ताकी बनाई हुई नहीं है। जैसे—आकाश।

आगमबाधित किसको कहते हैं ?

शास्त्रसे जिसका साध्य बाधित हो, उसको आगमबाधित कहते हैं। जैसे—पाप सुखका देनेवाला है। क्योंकि यह कर्म है। जो जो कर्म होते हैं, वे वे सुखके देनेवाले होते हैं। जैसे—पुण्यकर्म। इसमें शास्त्र से बाधा आती है। क्योंकि शास्त्रमें पापको दुःख देनेवाला लिखा है।

स्ववचनबाधित किसको कहते हैं ?

जिसके साध्यमें अपने वचनसे ही बाधा आवे। जैसे—मेरी माता बन्ध्या है। क्योंकि पुरुषका संयोग होनेपर भी उसके गर्भ नहीं रहता।

अनुमानके कितने अंग हैं ?

पांच हैं। प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

सपक्ष किसको कहते हैं ?

जहां साध्यके सद्भावका (मौजूदगीका) निश्चय हो। जैसे—धूमका सपक्ष गीले इंधनसे मिली हुई अग्निवाला रसोई घर है।

विपक्ष किसको कहते हैं ?

जहां साध्यके अभावका (गैरमौजूदगीका) निश्चय हो। जैसे—अग्निसे तपा हुआ लोहेका गोला।

अकिञ्चित्करहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

जो हेतु कुछ भी कार्य (साध्यकी सिद्धि) करनेमें समर्थ न हो।

अकिञ्चित्करहेत्वाभासके कितने भेद हैं ?

दो हैं—एक सिद्धसाधन, दूसरा बाधित विषय।

सिद्धसाधन किसको कहते हैं ?

जिस हेतुका साध्य सिद्ध हो। जैसे—अग्नि गर्म है। क्योंकि स्पर्श इन्द्रियसे ऐसा ही प्रतीत होता है।

बाधितविषयहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

जिस हेतुके साध्यमें दूसरे प्रमाणसे बाधा आवै।

बाधितविषयहेत्वाभासके कितने भेद हैं ?

प्रत्यक्षबाधित, अनुमानबाधित, आगमबाधित, स्ववचनबाधित आदि अनेक भेद हैं।

प्रत्यक्षबाधित किसको कहते हैं ?

जिसके साध्यमें प्रत्यक्षसे बाधा आवै। जैसे "अग्नि ठण्डी है।

क्योंकि यह द्रव्य है।" तो यह हेतु प्रत्यक्षबाधित है।

अनुमानबाधित किसको कहते हैं ?

जिसके साध्यमें अनुमानसे बाधा आवै। जैसे "घास आदि कर्त्ताकी बनाई हुई है। क्योंकि—ये कार्य है।" परन्तु इसमें इस अनुमानसे बाधा आती है कि घास आदि किसीकी बनाई हुई नहीं है। क्योंकि इनका बनानेवाला शरीरधारी नहीं है। जो जो शरीर धारीकी बनाई हुई नहीं है, वे २ वस्तुएं कर्त्ताकी बनाई हुई नहीं है। जैसे—आकाश।

आगमबाधित किसको कहते हैं ?

शास्त्रसे जिसका साध्य बाधित हो, उसको आगमबाधित कहते हैं। जैसे—पाप सुखका देनेवाला है। क्योंकि यह कर्म है। जो जो कर्म होते हैं, वे वे सुखके देनेवाले होते हैं। जैसे—पुण्यकर्म। इसमें शास्त्र से बाधा आती है। क्योंकि शास्त्रमें पापको दुःख देनेवाला लिखा है।

स्ववचनबाधित किसको कहते हैं ?

जिसके साध्यमें अपने वचनसे ही बाधा आवै। जैसे—मेरी माता बन्ध्या है। क्योंकि पुरुषका संयोग होनेपर भी उसके गर्भ नहीं रहता।

अनुमानके कितने अंग हैं ?

पांच हैं। प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

प्रतिज्ञा किसको कहते हैं ?

पक्ष और साध्यके कहनेको प्रतिज्ञा कहते हैं। जैसे—"इस पर्वतमें अग्नि है।"

हेतु किसको कहते हैं ?

साधनके वचनको (कहनेको) हेतु कहते हैं। जैसे—क्योंकि यह धूमवान् है।"

उदाहरण किसको कहते हैं ?

व्याप्ति पूर्वक दृष्टान्तके कहनेको उदाहरण कहते हैं। जैसे—जहां २ धूम है, वहां २ अग्नि है। जैसे रसोईका घर। और जहां २ अग्नि नहीं है, वहां २ धूम भी नहीं है। जैसे तालाब।

दृष्टान्त किसको कहते हैं ?

जहांपर साध्य और साधनकी मौजूदगी या गैरमौजूदगी दिखाई जाय। जैसे—रसोईका घर अथवा तालाब।

दृष्टांतके कितने भेद हैं ?

दो हैं—एक अन्वयदृष्टान्त दूसरा व्यतिरेक दृष्टान्त।

अन्वयदृष्टांत किसको कहते हैं ?

जहां साधनकी मौजूदगीमें साध्यकी मौजूदगी दिखाई जाय। जैसे—रसोईके घरमें धूमका सद्भाव होनेपर अग्निका सद्भाव दिखाया गया।

...्यतिरेकदृष्टांत किसको कहते हैं ?

जहां साध्यकी गैरमौजूदगीमें साधनकी गैरमौजूदगी दिखाई ...ाय। जैसे—तालाव।

उपनय किसको कहते हैं ?

पक्ष और साधनमें दृष्टान्तकी सदृशता दिखानेको उपनय कहते ...। जैसे—यह पर्वत भी वैसा ही धूमवान है।

निगमन किसको कहते हैं ?

नतीजा निकालकर प्रतिज्ञाके दोहरानेको निगमन कहते हैं। ...से—इसलिये यह पर्वत भी अग्निवान है।

हेतुके कितने भेद हैं ?

तीन हैं—केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी, अन्वयव्यतिरेकी।

केवलान्वयी हेतु किसको कहते हैं ?

जिस हेतुमें सिर्फ अन्वयदृष्टान्त हो। जैसे—जीव अनेकान्त-...स्वरूप है। क्योंकि सत्स्वरूप है। जो जो सत्स्वरूप होता है, वह ... अनेकान्तस्वरूप होता है। जैसे—पुद्गलादिक।

केवलव्यतिरेकी हेतु किसको कहते हैं ?

जिसमें सिर्फ व्यतिरेक दृष्टान्त पाया जावे। जैसे—जिन्दा ...शरीरमें आत्मा है। क्योंकि इसमें श्वासोच्छ्वास है। जहां २ आत्मा ...नहीं होता, वहां २ श्वासोच्छ्वास भी नहीं होता। जैसे—चौकी ...वगैरह।

अन्वयव्यतिरेकी हेतु किसको कहते हैं ?

जिसमें अन्वयी दृष्टान्त और व्यतिरेकी दृष्टान्त दोनों हों। जैसे पर्वतमें अग्नि है। क्योंकि—इसमें धूम है। जहां २ धूम है वहां २ अग्नि होती है। जैसे रसोईका घर। जहां २ अग्नि नहीं है वहां २ धूम भी नहीं है। जैसे तालाब।

आगमप्रमाण किसको कहते हैं ?

आप्तके वचन आदिसे उत्पन्न हुए पदार्थके ज्ञानको।

आप्त किसको कहते हैं ?

परमहितोपदेशक सर्वज्ञदेवको आप्त कहते हैं।

प्रमाणका विषय क्या है ?

सामान्य अथवा धर्मी तथा विशेष अथवा धर्म दोनों अंशोंका समूहरूप वस्तु प्रमाणका विषय है।

विशेष किसको कहते हैं ?

वस्तुके किसी खास अंश अथवा हिस्सेको विशेष कहते हैं।

विशेषके कितने भेद हैं ?

दो हैं—एक सहभावी विशेष, दूसरा क्रमभावी विशेष।

सहभावी विशेष किसको कहते हैं ?

वस्तुके पूरे हिस्से और उसकी सब अवस्थाओंमें रहनेवाले विशेषको सहभावी विशेष अथवा गुण कहते हैं

क्रमभावी विशेष किसको कहते हैं ?

क्रमसे होनेवाले वस्तुके विशेषको क्रमभावी विशेष अथवा पर्याय कहते हैं।

प्रमाणाभास किसको कहते हैं ?

मिथ्याज्ञानको प्रमाणाभास कहते हैं।

प्रमाणाभास कितने हैं ?

तीन हैं - संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय।

संशय किसको कहते हैं ?

विरुद्ध अनेक कोटी स्पर्श करनेवाले ज्ञानको संशय कहते हैं। जैसे—यह सीप है या चांदी ?

विपर्यय किसको कहते हैं ?

विपरीत एक कोटीके निश्चय करनेवाले ज्ञानको विपर्यय कहते हैं। जैसे—सीपको चांदी जानना।

अनध्यवसाय किसको कहते हैं ?

"यह क्या है ?" ऐसे प्रतिभासको अनध्यवसाय कहते हैं। जैसे मार्ग चलते हुएके तृण वगैरहका ज्ञान।

॥ श्रीजैन सिद्धान्त प्रवेशिकासें जाणना ॥

॥ इति ॥

प्रमाण च्यार—(१) प्रत्यक्ष (२) अनुमान
(३) आगम (४) ओपमा ।

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणका दो भेद—इन्द्रि
प्रत्यक्ष और नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष ।

इन्द्रिय प्रत्यक्षका पांच भेद---(१) श्रु
(२)चक्षु (३) घाण (४) रस (५) स्पर्श ।

नोइन्द्रिय प्रत्यक्षका दो भेद--- देशथकी
और सर्वथकी।

देशथकी कहता---अवधिज्ञान, मनपर्यव
ज्ञान ।

सर्वथकी कहता---केवल ज्ञान ।

(२) अनुमान प्रमाणका तीन भेद—(१
पुर्व (२) शेशवं (३) दीठी शाम ।

(१) पुर्व कहता—जैसे किसी माताक
पुत्र, बहिनका भाई, स्त्रीका भर्ता, छोटी

परदेश गया और वहुत समय रहके वापिस आया, तव माता पुत्रको, वहिन भाईको, स्त्री भर्ताको, कैसे अनुमान करके पीछाणे—तीलो-करके, मीसो करके, वर्ण करके, संठान करके या कोई पुर्व चिन्ह करके ओलखे।

(२) शेशव का ५ भेद—(१) कजेणं (२) कारणेणं (३) गुणेणं (४) अव्यवेणं (५) आसरेणं।

(१) कजेणं कहता—शब्दे करी संख, तालेकरी भैरी, दुडुको करी सांड, मोर कोकाट करी, घोड़ो हणहणाट शब्द करी, हाथी गुल-गुलाट शब्द करी, रथ भणभणाट शब्द करी जाणीजे।

कारणेणं कहता—कपड़ेरो कारण तंतु, तंतुरो कारण कपड़ो नहीं; कड़ारो कारण कड़वी, कड़वी रो कारण कड़ो नहीं; घड़ानो कारण मिट्टी, मिट्टी रो कारण घड़ो नहीं;

रोटी रो कारण आटो, आटे रो कारण रोटी नहीं; सोनारो कारण कसौटी, कसोटीरो कारण सोनो नहीं।

(३) गुणेण कहता—फुलमें सुगंधरो गुण, लूणमें रसरो, सोनामें कसौटीरो, मदरामें स्वादरो, दूधमें पुष्टिरो गुण।

(४) अव्यवेण कहता—सींग करीने भैसो जाणे, सिखा करीने कुकड़ो जाणे, दंतशुल करीने हाथी जाणे, डाढे करी सुअर जाणे, चितरामरी पांख करी मोर जाणे, खुर करी घोड़ो जाणे, नखे करी वाघ जाणे, चवर करी चवरी गाय जाणे, दंता करीने चुड़ावन जाणे, पूंछे करी वंदर जाणे, केशाली करी सिंह वे पग करी मनुष्य, चोपग करी पशु, बहुपग करी कांसलेउ, (कानसुलाच या गजाइ) जाणे खांधे करी सांड जाणे, वलिया करी महोल (कुमारी कन्या) जाणे, शस्त्र करी सुभट जाणे

वेश (कांचली पहरी) करी स्त्री जाणे, खंधा करी वृक्ष जाणे, काव्य करी पंडित जाणे, एक कण सीज्योजाणी घणाकण सीज्या जाणया।

(५) आसरेण कहता—धुंआने आश्रे अग्नि, बुगलाने आसरे सरोवर, आभाविकार आसरे वृष्टि, सुशील आचार आसरे भलो कुल जाणे ।

(३) दीठी शामका दोय भेद—सामान दृष्टांत और विशेष दृष्टांत ।

सामान दृष्टांत कहता—एक मनुष्य देखी घणा मनुष्य जाणे, एक रुपैयो देखी घणा रुपैया जाणे ।

विशेप दृष्टांत कहता---घणा मनुष्यमें एक मनुष्य देखीने कहेके ए मनुष्यने में देख्यो हतो, घणा रुपैयामें एक रुपैयो देखीने कहे आ रुपैयो मेरे पास आयो हतो, अथवा (अनुमान

प्रमाणसे) तीन कालकी शुभ बात जाणे या अशुभ वात जाणे ।

॥ दृष्टांत ॥

गये कालकी वात जाणे---जैसे मुनिराज विहार करता हुआ किसी देशमें जाते जमीन कादा कीच रहीत देखी वाग वगीचा तलाव निवाण सुका देख्या, खलांमें धानका समूह थोड़ा देख्या, तव मुनीने (अनुमान प्रमाणसे) विचार किया कि इस देशमें भूतकालमें दुर्भिक्ष था।

वर्तमान कालकी वात जाणे---जैसे मुनिराजके आहार पाणीकी खप, गाममें धनाढ्य लोक और वड़ा वड़ा मकानों होनेपर भी पूर्ण गोचरी न मिलनेसे (अनुमान प्रमाणसे) जाणयाके यहां दुर्भिक्ष वर्तते हैं ।

आगम कालकी वात जाणे---जैसे मुनि-

राज विहार करता पर्वत, पहाड़ डरावना देख्या, दिशा भयंकर देखी, और आकाशमें उदगमच्छा अमोधा धनुषबाण आदि न देख्या, ऐसा अशुभ चिन्ह देखकर जाणे के यहां भविष्यमें दुकाल पड़ेगा ए अनुमान प्रमाण है ।

॥ दृष्टांत ॥

विशेष प्रकारे शुभरा ३ भेद—

१—शुभ देखे तो कांई देखे, घास-तृण धरतो भरी देखे, कुवा, बावड़ी, तलाव या देखे, बाग-बगीचा हरा देखे जद जाणे, काले वर्षा घणी हुई दीसे छै ।

२—वर्तमान काले आश्री देखे तो कांई एक मोटो नगर देखे वा गांव देखे, वान, धीणो, घणो देखे, एक पंथी प्राणी निसरो, भुख, तृषा करीने आकुल, व्याकुल थयो छै, तिण ऊपर करुणा आणी,

सुख समाधी पुछे तिणने अन्न पाणी घणो
धामे दातारो मन (देवणहार) चढतो जाणे
घणो लेवे तो भलो (चोखो) ऐम जाणे अने
इण पंथीरो मन लेवणरो नहीं, जाणे थोड़ो
लेवुं तो ठीक, मनमें घणो संतोष, जद जाणे
जे वर्तमान इण गांवमें कोई शुभ होवणहार
होवतो दीसे छे ।

३—आगमने काले आश्री देखे तो कांई
देखे गमता वायरा वाजे, दिशराती, आभा मे
बीजली थोड़ी चमके और तारा थोड़ा जड़खड़
धरती घणी धुजे नहीं, चांद सूर्य्यरा ग्रहण
मरजाद उलंघी ना हुवे, पर्वत पहाड़, रलीयावण
दीसे, जद जाणे आगमनी काले वर्षा घणी
हुवणी चाहिए ।

॥ विशेष दृष्टांत ॥

अशुभरा ३ भेद---

१---अशुभ देखेतो कांई देखे, तृण रवि

धरती देखे, तलाव, वावड़ी, वाग, वगीचा, सुका देखे, जद जाणे गये काल वर्षा थोड़ी हुई दीसे छै।

२---वर्तमान काले आथी देखे तो कांई देखे, एक मोटो नगर देखे, धन, धान, धीणांरा घणो संचो देखे, जहां एक पंथी आय निकलो भुख, तृषा करने आकुल व्याकुल थयो छै तिणने कोई वूझे नहीं अन्न, पाणी धामे नहीं, जे कोई देवेतो देवणारो मन थोड़ो अने पंथी लेवणहारको मन घणो, तेनो मन धापे नहीं तिण करीने गये काले अशुभ ओलखे, वर्तमान कालमें कोई एक अशुभ होणहार दीसे छै।

३---आगम काल आथी देखे तो कांई देखे, उकलीया सांडलीया वायरो मननें णसुहावतो, वाजे दिशाराती घणी हुई, रा घणा टूटे, धरती घणी धुजे, मरजाद ांत चांद सूर्य रा ग्रहण घणा हुवे, पर्वत

पहाड़ विहामण घणा दीसे, जद जाणे आगमने काले वर्षा थोड़ी हुसी, यह दीठी श्म विशेष दृष्टान्त अनुमान प्रमाण है।

(३) आगम प्रमाणका दो भेद—लौकिक प्रमाण और लोकोत्तर प्रमाण।

लौकिक प्रमाण कहता—(अज्ञानी मिथ्यत्वीका रच्या थका) गीता, भागवत, रामायण, वैदक शास्त्र, भारत, ४ वेद, जोतक शास्त्र, गुड़पुराण अने कुर्म पुराण, १४ विद्या, १८ पुराण, ६४ स्त्री की कला, ७२ कला पुरुषकी, इत्यादि रा जाण हुवे, मिथ्यात्वि भणे तो मिथ्यात्वमें प्रगटे, समगति भणे तो समक्तमें प्रगटे, मिथ्यात्वी कोई एक सकोमल प्रकृतिरो धणी, हियारो सरल, प्रकृतिरो भदरीक भणे अने शुद्ध विचारे, माटाने माटो जाणे, परहरे तो सुकल पखी होवे।

॥ लोकोत्तर प्रमाण ॥

लोकोत्तर आगम प्रमाण कहता—तिर्थंकर
गणधरका राच्या थका, द्वादशांग, श्री आच-
ांगजी, सुयगडांगजी, ठाणांयंगजी, भगवतीजी,
ज्ञाताजी, उपासकदशांगजी, अंतगड़दशांगजी,
अनुतरोववाइजी, प्रश्न—व्याकरणजी, विपाक-
सुत्रज, दृष्टिवाद, केवली चौदहपुर्वधारी.---
जावदशपूर्वधारीका राच्या थका आगम उसको
लोकोत्तर आगम प्रमाण कहिये।

अथवा आगम प्रमाणका तीन भेद—(१)
सुतागमे (२) अथागमे (३) तदुभयागमे।

अथवा आगम प्रमाणका तीन भेद—(१)
अतागमे (२) अणंतरागमे (३) परम्परागमे।

तिर्थंकर भगवानका अर्थ अतागमे,
गणधर महाराजका सुत्र अतागमे अने
अर्थ अणंतरागमे, गणधरके शिष्यके सुत्र

अणांतरागमे अने अर्थ परम्परागमे, गणधरके शिष्यके शिष्यको सुत्र परम्परागमे अने अर्थ परम्परागमे ।

४ ओपमाप्रमाणका दो भेद—सामोविणीहं, और वेहमोविणीहं ।

सामोविणीहंका तीन भेद—(१) किंचित सामोविणीहं (२) प्रायसामोविणीहं (३) सर्वसामोविणीहं ।

(१) किंचित सामोविणीहं केहता—मेरू पर्वत सरसु जैसो, सरसु मेरू पर्वत जैसी; समुद्र गो पद जैसो, गो पद समुद्र जैसो; सूर्य्य अग्निया जैसो, अग्निया सूर्य्य जैसो; चन्द्रमा कमल जैसो, कमल चन्द्रमा जैसो ।

(२) प्रायसामोविणीहं केहता—गौ (गउ) रोज जैसी, रोज गौ जैसो ।

(३) सर्व सामोविणीहं केहता—ओपमा न थी तांम पण कइ वतावे छै, तिर्थंकर, तिर्थंकर

सरीखो कियो, चक्रवर्ती वासुदेव वलदेव।

किंचित वेहमोविणीहं केहता—जाव वाहुलेरो नता साहुलेरो, नता साहुलेरो जाव वाहुलेरो।

प्रायवेहमोविणीहं केहता—नवाय सो नता पायसो, नता पायसो नवायसो।

सर्ववेहमोविणीहं केहता—नीच, नीच सरीखो कियो, दास काग कुत्तो।

ए तीनु अर्थ रहित है।

अथवा ओपमाका च्यार भेद—(१) छती वस्तुने छती ओपमा (२) छती वस्तुने अछती ओपमा (३) अछती वस्तुने छती ओपमा (४) अछती वस्तुने अछती ओपमा।

छती वस्तुने छती ओपमा केहता—पद्मनाभ भगवान महावीर स्वामी जैसा, भगवानरी भुजा कैसी, के नगर ना भोगल जैसी, भगवान रो हृदय कैसो, के नगर ना कवाड़ जेसो।

छती वस्तुने अछती ओपमा केहता—नारकी देवताको आउखो तथा पल्योपम सागर को आउखो छतो ओपमा अछती; जैसे कुवेको मान किणही भरयो नहीं भरे नहीं, भरसी नहीं, भरवाने समर्थ नहीं।

अछती वस्तुने छती ओपमा केहता—जेहवो खजवो तेहवो सूर्य्य, जेहवो सूर्य्य तेहवो खजवो; जेहवो गोपीचंदण तेहवो चन्द्रमा, जेहवो चंद्रमा तेहवो गोपीचंदण।

॥ दोहा ॥

पान पड़ंतो इम कहे, सुन तरुवर वनराय।
अबके विछड़े कब मिले, दूर पड़ेंगे जाय।
चलतो तरुवर इम कहे, सुन पतर एक बात।
इण घर यही रीत है, एक आवत एक जात।
पान भड़ंतो (पड़ंतो) देखने, हंसी कुंपलीयां।
मोह विती तोह वीतसी, धीरज बापरियां।
कब पतर इम बोलीयो, कब तरवर दियो जवाव।

वीर वखाणी ओपमा, अनुयोग द्वार मंझार।

अछती वस्तुने अछती ओपमा कहता—गधाना सींग कैसा के सिसीआ सरीखा, सिसीआना सींग कैसा के गधा सरीखा, घोड़ाना सींग कैसा के गधा सरीखा, गधाना सींग कैसा के घोड़ा सरीखा।

अथ नव तत्व पर चार प्रमाण उतारते हैं।

॥ १ जीव तत्व ॥

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणसे--चेतना लक्षण युक्त।

(२) अनुमान प्रमाणसे---बाल, युवा (जवान), वृद्ध तथा शास्त्रमें त्रसके लक्षण संकोचियं पसारियं इत्यादि चले सो और

स्थावरके प्रमाणके लिए अंकूरेसे लगा मनुष्यकी तरह वृद्धि पावेसो।

(३) ओपमा प्रमाणसे---जीव अरूपी आकाशवंत् पकड़ाय नहीं जीव अनादि अनंत धर्मादिकायवत् तथा तिलेपु यथा तैलं पयेपु यथा घृतं वन्हिपु यथा तेजं तनेपु यथा जीवं।

(४) आगम प्रमाणसे---

॥ गाथा ॥

कम्मकत्ता अयंजीवो कम्मछित्ता जीवगुणा-यव्वो अरूवीणिच्चअणाइ ऐयंजीवस्सलचनं।

अर्थात्--शुभाशुभ कर्मका कर्त्ता और उसका भुक्ता (भोगणे वाला) ये जीव है, ज्ञान संयम तपसे इन कर्मोंका छेदनवाला भी यही जीव हैं; जीव अरूपी किसीके दृष्टिमें नहीं आवे ऐसा नित्य इसका कभी विनाश नहीं

होता है, अर्थात् जीवका अजीव हुआ नहीं और होवेगा भी नहीं ; अणाइये अनादि है अर्थात् इसको किसीने बनाया नहीं इसलिए इसकी आदि नहीं अनादि सिद्ध है तथा एक शरीरमें एक संख्याते असंख्याते अनन्ते जीव है इत्यादि अनेक दृष्टांतसे शास्त्रमें जीव सिद्ध किया है ।

॥२ अजीव तत्व ॥

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणसे—अजीवका जड़ लक्षण जीवका प्रतिपक्षी वर्णायादि पर्याय मिलनेका विखरनेका स्वभाव देखाय सो प्रत्यक्ष प्रामाण ।

(२) अनुमान प्रमाणसे—नवा जूना पणा पर्यायका पलटने का स्वभाव तथा जीवको गति स्थिर विकाशादि साहयता करनेवाला, जैसे

जीवको सकंप देखकर अनुमानसे जाणे यह धर्मास्तिका स्वभाव है एसेही अकंपसे अधर्मास्ती पुद्गल मिलनेसे आकाशास्ती जैसे-सम्पूर्ण कटोरा दुधसे भरा है उसमें एक बिन्दू भी न समावे उसमें कितनी ही सक्कर या बतासा समाय जाय ये आकाशास्तिकाय लक्षण इत्यादि अनुमानसे अजीव को पहचाने सो अनुमान प्रमाण ।

(३) ओपमा प्रमाणसे—जैसे इन्द्र धनुष सन्ध्या राग इनका पलटा हुवे तैसे पुद्गलोंका स्वभाव पलटे पीपलका, पान कुंजर (हाथी) का कान सन्ध्याका भान (संध्याका वाण) तैसे पुद्गलोंका स्वभाव चञ्चल जाण इत्यादि अनेक ओपमासे अजीव पहचाने सो ओपमा प्रमाण ।

(४) आगम प्रमाणसे—जैसे अजीवके खंध देश प्रदेश च्यार द्रव्यके वर्णवे और पांचवे

पुद्गल द्रव्यमें प्रमाण आदि खंधका (स्कंदका) प्रवर्त्तन द्रव्य गुण पर्यायका कथन और भी एक प्रमाण की अपेक्षासे १ वर्ण, १ गंध, १ रस, २ स्पर्श, अनेक प्रमाणोंकी राशीमें पांच वर्ण, २ गंध, ५ रस, ४ स्पर्श १ यह १६ पर्याय से लगाकर जाव अनंत गुण पर्यायकी व्याख्या करनी पुद्गलके वर्णादिककी पर्याय पुद्गलसे भिन्न नहीं है जैसे मिश्री मीठी परन्तु मिठास कुछ मिश्रीसे अलग नहीं है, इसी तरह आगम प्रमाणसे पर्याय पुद्गल एकही जाणना, फक्त-बोलनेमें अलग अलग बोले जाते है। इसका विस्तार श्री भगवतीजी अंगके वीशवें शतकमें देखिये और भी द्रव्य ऊपर आगम प्रमाण इस मुजब लगाता है। धर्मास्तिकायमें खंध देश प्रदेशके द्रव्य गुण पर्याय जैसे धर्मास्ति द्रव्यसे एक द्रव्यके एक प्रदेशमें अनंत पर्याय है क्यों कि अनंते जीव और पुद्गलोंकी गतिका सहाय

करता है जिसमें भी षड़गुण हानि वृद्धि हुई है तथा उत्पात व्यय ध्रुव पर्याय करके संयुक्त है यह ही धर्मास्तिका आगम जाणना। ऐशाही अधर्मास्तिकी स्थिती सहाय और सर्व व्याख्या धर्म द्रव्य जैसी ऐसेही आकाश सदा अवकाश देनेवाला अरूपी अचैतन्य अनन्त इस तरहही काल द्रव्य अरूपी अचैतन्य अनन्त अप्रदेशी वस्तुको नवीन जीर्ण करनेका सहाय इससे एक समयमें पुद्गल परावर्त्तन हो जाता हैं क्योंकि अनंत जीव एक पुद्गल परावर्त्तन करते है इत्यादि अनेक बोल अजीव द्रव्य पर आगम प्रमाणसे लागू होते हैं यह आगम प्रमाण।

॥ ३ पुण्य तत्व ॥

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणसे—मनोज्ञ अच्छे वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मन, वचन, काया, पुण्यतत्के शातावेदनी दृष्टिमें आवे सो प्रत्यक्ष प्रमाण।

(२) अनुमान प्रमाणसे---ऋद्धी संपदा, बल, रूप, जाती ऐश्वर्यकी उत्तमत्ता देख अनुमानसे जाणेकी यह पुण्यवंत है, जैसे सुबाहू कुंवरकी संपदा देख गौतम स्वामी प्रमुख साधूजोने जाण्या की यह पुण्यवंत जीव है यह अनुमान प्रमाण।

(३) ओपमा प्रमाणसे---पुण्यवंतको पुण्य-वंतकी ओपमा देवे, जैसे---देवोदुगंदगोजहा अर्थात् पुण्यवंत जीव दुगंदक इन्द्रके गुरु स्थानीय देव जैसा सुख भोगता है, तथा चन्द्रोइवतराणं भरतोइव मणुष्याणां अर्थात्, जैसे ताराके समूहमें चन्द्रमा शोभता है तैसे मनुष्योंके वृन्दमें भरतनामा महाराजा शोभते हैं इत्यादि ओपमा प्रमाण जाणना।

(४) आगम प्रमाणसे---शुभ प्रकृति और शुभ योगसे पुण्य बंध होता है शास्त्रमें कहा है

सुचिन्नकर्म्म सुचिन्नफलाभवंति अच्छे कर्मके अच्छे फल होते हैं देवायु मनुष्यायुः शुभानुभाग इत्यादि पुण्य फल जाणना।

जितनी सक्कर डाले उतनाही मीठा होगा, ऐसे ही पुण्यके रसमें षड़गुण हानि वृद्धि होती। है पुण्यकी अनंतपर्याय और अनंत वर्गणा जैसे पुण्यके उदयसे देवताका आयुष्य बांधा, परन्तु कालके अपेक्षासे चउठाण वलिया है। जैसे---एक सेर भर पाणीको अग्नि पर उकालनेसे पाव पाणी रहे ऐसे कर्म्मके रसमें चउठाण वलिया पणा होता है सो जाणना। इस लिए जैसे जैसे शुभ योगकी वृद्धि तैसे तैसे पुण्यकी वृद्धि समझणा और भी पुण्यानु बंधो पुण्य, सो तीर्थंकर महाराजवत् पुण्यानु बंधो पाप, सो हरकेसी ऋषीवत्; पापानु बंधो पुण्य सो गोसालवत् तथा अनार्य राजावत् और पापानु बंधो पाप, सो नागश्रीवत् इत्यादि

आगम प्रमाणसे पुण्यके अनेक रुप होते हैं।

॥ ४ पाप-तत्व ॥

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणसे—पुण्यसे उलटा पाप समझना जैसे—वर्णादि पांच, तीन योग अमनोज्ञ मिले सो प्रत्यक्ष पाप।

(२) अनुमान प्रमाणसे—किसी को दुःखी देखकर कहे कि इसके पूर्व पापका उदय हुआ है, सो पापका अनुमान।

(३) ओपमा प्रमाणसे—यह विचारा नरक जैसे दुख भोगता है यह पापकी ओपमा।

(४) आगम प्रमाणसे—पापकी प्रकृति स्थिती अनुभाग प्रदेश इनका अशुभबंध सो आगम प्रमाण।

॥ ५ आश्रव-तत्व ॥

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणसे—योगके व्यापारका

प्रत्यक्ष पणा सो प्रत्यक्ष प्रमाण।

(२) अनुमान प्रमाणसे---अव्रतीपणा सो अनुमान प्रमाण।

(३) ओपमा प्रमाणसे--तालावके नालेका, सूइके नाकेका, घरके दरवाजेका इत्यादि दृष्टांतो से आश्रवका स्वरूप वतावे सो ओपमा प्रमाण।

(४) आगम प्रमाणसे---अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, इन कषायके प्रमाणु मिलकर दलरूप स्कन्ध आत्माके प्रदेशको वर्गणा चोंटे सो आगम प्रमाण जानो।

॥ ६ संवर तत्व ॥

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणसे---देश थोड़ेसे जोगके निरुन्धन करे सो देश संवर और सर्वसे निरुन्धन करे सो सर्व सम्वर।

(२) अनुमान प्रमाणसे---सावज जोगके त्यागीको संवर कहना।

(३) ओपमा प्रमाणसे---जैसे घरका दर-वाजा लगानेसे मनुष्यका आगमन बन्ध पड़ता है और नावका छेद्र रोकनेसे पानीका आणा वन्ध होता है, तैसे योगका निरून्धनत्याग प्रत्याख्यान करनेसे सम्वर होता है।

(४) आगम प्रमाणसे---आत्माका स्थिर-पणा, अकंप-पणा, जोगका निरून्धन, देशसे और सर्वसे आत्माका निश्चलपणा, आत्मा निज गुणसे संयुक्त होवेसो आगम प्रमाण जाणना।

॥ ७ निर्जरा तत्व ॥

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणसे---बारह प्रकारका तप कर्म्मका छेदन करता है सो प्रत्यक्ष प्रमाण।

(२) अनुमान प्रमाणसे---ज्ञान दर्शन चारित्रकी तथा क्षयोपशम सम्यक्तकी वृद्धी होती देखे और देवायुः प्रमुखकी प्राप्ति देख

कर निर्जराका अनुमान होवे यह अनुमान प्रमाण।

(३) ओपमा प्रमाणसे---जैसे खारसे धोनेसे तथा स्वागी टंकण खार प्रमुखके संयोगसे सुवर्ण, सूर्य्यको ढके हुवे वादल वायुके संयोगसे दूर होवे वैसेही चेतन पर कर्म-रूप मेल छाया हुआ तपस्यासे दूर होवे तब निज गुण प्रगटे यह निर्जराकी ओपमा।

(४) आगम प्रमाणसे---आशा वाञ्छा रहित तप, आत्माका उज्वल पणा सम्यक्त युक्त सकाम निर्जरा होवे सो आगम प्रमाण।

॥ ८ वन्ध तत्व ॥

प्रत्यक्ष प्रमाणसे---जीव और पुद्गल क्षीर नीरके जैसे लोलीभूत हो रहा है जिससे शरीरका संयोग प्रयोग पुद्गल-पणे प्रणमा हुआ दिखता है सो प्रत्यक्ष प्रमाण।

(२) अनुमान प्रमाणसे—तीर्थंकर भगवानका, केवली भगवानका, गणधरजीका, छद्मस्थ मुनिका, उपदेश श्रवण करे तो भी संशय वा मोह, अज्ञान, भ्रम इत्यादि जावे नहीं इस अनुमानसे जाण जाय के इसका कर्म प्रकृतियोंका कठिन बंधन है, जैसे चित्त-ऋषीजी ब्रह्मदत्त-चक्रवर्तीको कहा है कि नियाणंम सुहंकडं, पूर्व के किये हुवे नियाणके जोगसे हे राजा तेरेको सुखदाता उपदेश कैसे लगे तथा महा आरंभादिक १६ कारणसे चार गतिका आयुष्यका बंध होता है सो भी अनुमानसे जाण्या जावे और चौवीस (२४) लक्षणसे पहचाने कि यह अमुक गतिसे आया है जिस गतिसे आया उसके लक्षण बताते हैं।

नरक गतिसे आकर मनुष्य हुवा होय जिसके बहुलता ६ लक्षण जैसे---

(१) दीर्घकषाय, (२) महाकोपवंत (क्रोधी),

प्रमाणसे अनुभाग बंध जाणना और प्रदेश बन्ध एकेक जीवके प्रदेश ऊपर कर्मोंकी वर्गणा रही है ; जैसे---अवरख भोडलके पोडल (पुड़) देखनेमें एक दिखता है और निकालणेसे बहुत निकलते हैं वैसेही कर्म वर्गणा जीवके प्रदेशके साथ बन्धी है किसीको थोड़ी और किसीको बहुत।

(४) आगम प्रमाणसे---जीवके शुभाशुभ योग ध्यान लेश्या प्रणाम इत्यादि होवे उसको आगम प्रमाण कहना।

॥ ६ मोक्ष तत्व ॥

(१) प्रत्यक्ष प्रमाणसे देशसे उज्वल होकर सम्यक्त ज्ञान सम्यक्त दर्शन सम्यक्त चारित्र इत्यादि गुण प्रगटे और शुभ प्रकृतियोंके उदयसे अशुभ प्रकृतियोंका क्षय होनेसे शुभ गुण प्रगटे जिससे तिर्थंकरादिक उत्तम पदकी

प्राप्ति होवे सो प्रत्यक्ष मोक्ष तथा चार घन घातिक कर्मके नाश होनेसे केवल ज्ञान प्रगटे सो प्रत्यक्ष मोक्ष कहना।

(२) अनुमान प्रमाणसे—दर्शन मोहनी चारित्र मोहनीके क्षय होवे सो मोक्ष यह अनुमान प्रमाण।

(३) ओपमा प्रमाणसे—दग्ध जला हुआ बीजके अंकूर नहीं प्रगटे तैसे मोक्षके जीवको कर्म अंकूर नहीं प्रगटे तथा जैसे घृत सींचनेसे अग्नि तेज होवे तैसे वीतराग रागद्वेषके क्षय करनेसे हायमान प्रणाम न होवे इत्यादि अनेक ओपमा जाणना।

(४) आगम प्रमाणसे—मोक्षके जीवोंको अनन्त चतुष्टय, अनन्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र वीर्य, ज्यों ज्यों सूत्रोक्त प्रकृति क्षपावे त्यों त्यों जीवके निज गुण रूप लब्धि प्रगटे जैसे—

(१) पहली मिथ्यात्व गुण स्थानमें—प्रवर्त्त-

ता जीव वीतरागकी वाणीको अधिक कमी और विपरीत श्रद्धे परूपै फरसे यह जीव च्यार गति २४ दंडक ८४ लक्ष जीवा योनिमें अनन्त पुद्गल परावर्त्तन करे ।

(२) सासादन गुण स्थानमें—आवे तब जैसे किसीने खीर खांड का भोजन किया और उसकुं (पीछा) वमन होगई पीछे गुलचट्टा स्वाद रहगया तैसे उसकी आत्मामें स्वल्प धर्म रस आवे तथा वृक्षसे फल टूट पृथ्वी पर पड़ते वीचमें जितना काल रहे उतना धर्म फरसे यह जीव अनन्त संसारका अंतकर फकत् अर्ध पुद्गल परावर्त्तन संसार भोगणा बाकी रखे कृष्ण पक्षीका शुक्लपक्षी हुवें ।

(३) मिश्रगुणस्थानमें---प्रवर्त्तता जीव जैसे सीखण दही सक्कर मिलाकर खानेसे कुछ खट्टा कुछ मीठा स्वाद लगे तैसे खट्टे समान मिथ्यात्व और मीठे समान सम्यक्त यो मिश्र

पणा होवे यह जीव देश उणा (कुछ कमी) अर्ध पुद्गल परावर्त्तनमें संसारका अंत करे।

(४) अवृति सम्यक्त दृष्टी गुण स्थान— वर्त्ती जीव अनन्तानुवन्धी चोक और तीन मोहनी यह ७ प्रकृत्ति खपावे सुदेव, सुगुरु सुधर्म, परश्रद्धा प्रतीत आस्ता रखे वीतरागका धर्म सञ्चा श्रद्धे च्यार तीर्थकी भक्ति करे इस का जो पहिले आयुष्य वन्ध न पड़ा होवेतो नरक, तिर्यंच, भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, स्त्री, नपुंसक यह ७ ठिकाणे न जाय।

(५) देशवृति गुण स्थान---सात पहलेकी और प्रत्याख्यानीको चोक यह ११ प्रकृति खपावे यह श्रावकके वृत यथाशक्ति धारण करे नवकारसी आदि छवमासी तप करे यह जीव जघन्य तीन उत्कृष्टा पन्नरे भव कर मोक्ष जावे।

(६) प्रमादिगुण स्थान---आया हुआ जीव ईग्यारह पहलेकी और प्रत्याख्यानीको चोक यह

पहिलेकी और २८ मों संज्वलको लोभ यह २८ प्रकृति उपशमावे जैसे अग्नि राखमें दाटे याने अग्नि राख भसमसे ढांके वैसेही यथाख्यात चारित्र पणे प्रवृते और एहवामां मरे तो अनुत्तर विमानमें जावे अने सुक्षम लोभको उदय हुवे तो कषाय अग्नि प्रगटे पाछो पड़े याने नीचे जाय ।

(१२) खिण मोह गुणस्थान—पूर्वोक्त अठाइस प्रकृति सर्वथा प्रकारे क्षपावे तब २१ गुण प्रगटे क्षपक श्रेणी, क्षायिक, भाव, सम्यक्त क्षायिक, यथाक्षात चारित्र, करण सत्य, भाव सत्य, अमायी, अमकषायी, वीत-रागी, भाव निग्रंथ, संपूर्ण भवितात्मा, महा-तपस्वी, महासुसील, अमोही, अविकारी, महा-ज्ञानी, महाध्यानी, वर्द्धमान प्रनामी, अपड़िवाइ होकर अन्तर मुहूर्त्त रहकर तेरमे गुण ठाणे जाय इस गुणस्थानमें मरे नहीं इस गुणस्थानके

छेले समय ५ ज्ञानावरणीय ६ दर्शनावरणीय ५ अन्तराय यह तीन कर्मोंका क्षय होता है तब तेरेमे गुणस्थान पधारे ।

(१३) सयोगी केवली गुणस्थान---आवे तव १० बोल सहित रहै संयोगी सशरीर सलेसी शुक्ल लेशी यथाख्यात चारित्र क्षायिक सम्यक्त पंडितवीर्य शुक्ल ध्यान केवलज्ञान केवलदर्शन यह दश गुण होय इस गुणस्थान वरती जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट कोड पूर्व देश उणा ६ वर्ष कमी प्रवर्त्त कर चौदहवें गुण-स्थानक पधारे ।

(१४) अयोगी केवली गुणस्थान--आये हुये भगवान शुक्ल ध्यानके चौथे पाये युक्त समुछिन्न किया अनन्तर अप्रतिपाती पीछा पड़े नहीं अनिवृतिध्याता पहिले मन फिर वचन फिर काया यों तीनोंही योगका निरुन्धन कर फिर आणपाण श्वासो श्वासका निरुन्धन कर रूपा-

तीत सिद्धध्याता पहिले दश बोल कहा उसमेंसे सलेशी शुक्ल लेशी संयोगी यह तीन बोल रहित शेप सात बोल सहित मेरू जैसे अडोल अचल स्थिर अवस्थाको प्राप्त होवे वेदनी आयुष्य नाम गोत्र इन च्यार कर्मका क्षय कर उदारिक तेजस कार्मण शरीरको त्याग सम-श्रेणी ऋजुगति अन्य आकाश प्रदेशका अव-लंबन नहीं करते एक समयमें विग्रहगति रहित सिद्धस्थान मोक्षस्थानको प्राप्त होवे यों अनुक्रमें गुणस्थान न प्रगट हुवे यावत् मोक्ष पदको प्राप्त होवे सो आगम प्रमाण।

॥ इति प्रमाण स्वरूप संपूर्णम् ॥

॥ दसमो गुणने गुणी ॥

गुण तो ज्ञानादि, गुणी चेतन (जीव) गुण मिथ्यात्व, गुणी मिथ्यात्वी, गुण सुगंध, गुणी पुष्प।

॥ ग्यारहमो समान, विशेष ॥

समान तो एक द्रव्य ; विशेषमें दो प्रकार--- जीवद्रव्य, अजीव द्रव्य ; समान तो अजीव द्रव्य, विशेषमें दो प्रकार---रूपी अजीव ने अरूपी अजीव, समान तो जीव द्रव्य, विशेषमें दो प्रकार—सिद्ध ने संसारी, समान तो संसारी, विशेषमें दो प्रकार—त्रसने स्थावर, समान तो स्थावर, विशेषमें पांच प्रकार---

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनास्पतीकाय, समान तो त्रस, विशेषमें च्यार प्रकार---बेयंद्रिय, तेऊंद्रिय, चऊरंद्रिय, पचेंद्रिय,

---

॥ बारहमो गे, ज्ञान, ज्ञानी ॥

गे कहता—जगत का घटपटादिक पदार्थ।
ज्ञान कहता—जाणपणुं।
ज्ञानी कहता—चेतन (जीव)

तेरहमो उत्पात, व्यय ध्रुव ।

उत्पात्त कहता—उत्पन्न होणा।

व्यय कहता—नाश (विनाश) होणा।

ध्रुव कहता—सासतो (बराबर) जैसे सोनाका बाजु बंधकी बनानी चुड़ी तब चुड़ीका उत्पन्न होना, बाजुबंधका विनाश होना और सोनाका स्थिर रहना, दूसरा दृष्टांत लोटकी बनानी रोटी, तब रोटीका उत्पन्न होना लोटका विनाश होना, और परमाणुका स्थिर रहना, तीसरा दृष्टांत संसारी जीवकुं सिद्ध होना तो सिद्धको उत्पन्न होना; संसारका विनाश होना जीवका स्थिर रहना इत्यादिक।

॥ चौदहमो अधे, आधार ॥

अधे तो जीव पुद्गल, आधार आकाश; अधे तो घटपटादिक जगतकी वस्तु, आधार पृथ्वी,

अथे तो घी आधार वाटको, जैसे वाटकेरो आधार घी ने छे पण घीरो आधार वाटके ने नहीं ।

पन्द्रहमो अवीर भाव, त्रो भाव ।

अवीर भाव कहता—नजदीक.

त्रो भाव कहता—दूर

जेसे घासमें तो घी दूर है, और दूधमें घी नजदीक है, दूधमें घी दूर है दहीमें घी नजदीक है, दहीमें घी दूर है माखनमें घी नजदीक है, पाणीसुं फल दूर है और वृक्षसुं फल नजदीक है ।

सोलहमो मुक्ताने गमंता (मुख्य गौण)।

मुक्ता कहता—कोयल काली,
गमंता कहता—वर्ण पावे पांच।
मुक्ता कहता—सुओ हरो।
गमंता कहता—वर्ण पावे पांच।
मुक्ता कहता—जीव अज्ञानी।
गमंता कहता—जीव ज्ञानी।
मुक्ता कहता—सेन्यापति।
गमंता कहता—सेन्या।

मुक्ता लोकमें दीसती हुई वस्तु और गमंता उसी वस्तुको निज स्वरूप जैसे मुक्तासे बुगलो धोलो गमंतासे वर्ण पांच।

सत्तरहमो उतसर्गने अपवाद ।

उत्सर्ग कहता—तीन गुप्ति ।
अपवाद कहता—पांच सुमति ।

॥ पाठान्तर ॥

उछरंग मारगमें तो जिन कलपी साधरो आचार, एक पछेड़ी एक पात्रो राखणो श्री भगवन्त कह्यो ऊंचा नीचा वचन कहे तो खमें देवता, मनुष्य, तिर्यंचरा उपसर्ग सहे, ऊंची, नीची जागा मार्ग आवेतो टले नहीं, मरण रो भय आणे नहीं पण जेणा जीवरी दया निमित्त टल आवे, चेला करे नहीं ए मार्ग जिनकलपी साधरो छे, उपवाद मार्गसे थरकलपी साधरो आधार ३ पछेवड़ी ३ पातरा राखे, ऊंचा

नीचा वचन सुणी खमै अथवा नहीं खमै उपसर्ग ३ खमैं तथा न खमै सहणी आवे तो खमै सहणी न आवे तो ना खमै, कांटो भागो काढ़ै, चेला चेली करै ए मार्ग थीवर कल्पीरो छै।

॥ अठारहमो आत्मा तीन ॥

(१) स्वआत्मा (२) परआत्मा (३) परमात्मा।

(१) स्वआत्मा कहता—अपनी आत्माको दमन करै।

(२) परआत्मा कहता---दूसरेकी आत्माकी रक्षा करै।

(३) परमात्मा कहता---भजन करै।

॥ दोहा ॥

स्वआत्मको दमन कर, परआत्मको चीन।

परआत्मको भजन कर, सोही मत परवीन ॥
पुद्गलसे रातो रहै, जाणे ये निधान।
तस लाभे लोभ्यो रहै, वहरातम अविधान ॥
पुद्गल भाव रूचे नहीं, ताते रहे उदास।
स्वअंतर आत्म लहे, परमात्म प्रकाश ॥
वहरातम तज आत्मा, अन्तर आत्म रूप।
परमात्मने ध्यांवता, प्रगटे सिद्ध सरूप ॥

॥ उन्नीसमो ध्यान च्यार ॥

(१) पदस्थ ध्यान (२) पिंडस्थ ध्यान (३) रूपस्थ ध्यान (४) रूपातीत ध्यान।

(१) पदस्थ ध्यान कहता—अरिहंतादिक पांच पदोंका ध्यान करना।

(२) पिंडस्थ ध्यान कहता—शरीर रूपी

पिंडरूप है जिसमें रह्या हुआ चेतनका ध्यान करना।

(३) रूपस्थ ध्यान कहता--रूपध्याना शरीर में मेरा जीव रह्या हुआ अनन्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र में है ऐसा ध्यान करना ए तीन ध्यान धर्म ध्यानमें है।

(४) रूपातीत ध्यान कहता--निरंजन, निराकार, निष्कलंक, सच्चिदानन्द, सदानन्द, शुधानन्द, ऐसे जो सिद्ध भगवान है उसका ध्यान करना।

॥ वीसमो अनुयोग च्यार ॥

(१) द्रव्याणुयोग (२) गुणतानुयोग (३) चरणकरणानुयोग (४) धर्मकथानुयोग।

(१) द्रव्याणुयोग कहता—षट द्रव्यके व्याख्यान।

(२) गुणतानुयोग कहता—गंगीया आधार ना भांगा चितारे।

(३) चरणकरणानुयोग कहता—चारित्रकी विधीको व्याख्यान।

(४) धर्मकथानुयोग कहता—उत्तम पुरुषके चरित्रको व्याख्यान और साढ़े तीन करोड़ ज्ञीनाताको ज्ञान चिन्तवे और सित्तर बोल करण सुत्रीरा सित्तर बोल चरण सुत्रीरा चितारे।

इकीसमो जागरना तीन

(१) धर्म जागरना (२) अधर्म जागरना (३) कुटुम्ब जागरना।

धर्म जागरनाका तीन भेद—(१) बुद्ध-जागरना (२) अबुद्ध जागरना (३) सुदखु-जागरना ।

बुद्धजागरना कहता—केवली महाराज ।

अबुद्धजागरना कहता—छद्मस्थ मुनिराज।

सुदखुजागरना कहता—श्रावक ।

अधर्म जागरना कहता--छव-कायके आरंभा-दिकको विचार करै ।

कुटुम्ब जागरना कहता—परिवारको विचार करे ।

वली श्री त्रण जाग्रिकाने थोकड़ा मां धर्म जागरण ना चार भेद कहा छे ते लिख्ये छे।

॥ धर्म जागरण ना ४ भेद ॥

(१) प्रथम आचार धर्म, (२) दूजो क्रिया धर्म, (३) तीजो दया धर्म, (४) चौथो स्वभाव धर्म ।

प्रथम आचार धर्मना पांच भेद—

(१) ज्ञानाचार, (२) दर्शनाचार, (३) चारित्राचार, (४) तपाचार, (५) वीर्याचार, तेमां ज्ञानाचारना ८ भेद, दर्शनाचारना ८ भेद, चारित्राचारना ८ भेद, तपाचारना १२ भेद, वीर्याचारना ३ भेद, ए रीते ३६ थया, हवे तेनो विस्तार कहे छे ।

ज्ञानाचारना ८ भेदः—

(१) ज्ञान भणवाने वखते ज्ञान भणवुं, (२) ज्ञान लेतां विनय करवो, (३) ज्ञाननुं बहुमान करवुं, (४) ज्ञान भणतां यथाशक्ति तप करवो, (५) अर्थ तथा गुरुने गोपववा नहिं, (६) अक्षर शुद्ध, (७) अर्थ शुद्ध, (८) अक्षर अर्थ बे ने शुद्ध भणो ।

दर्शनाचारना ८ भेदः—

(१) जैन धर्ममां शंकारहितपणुं, (२) पाखंड

धर्मनी वांछा रहित, (३) करणीना फलनुं संदेहरहितपणुं, (४) पाखंडीना आडंबर देखो मूंझाय नहि, (५) स्वधर्मनी प्रशंसा करे, (६) धर्मथी पड़ताने स्थिर करे, (७) स्वधर्मनी भक्ति करे, (८) जैनधर्म ने अनेक रीते दीपावे---कृष्ण, श्रेणीकनी पेरे।

चारित्राचारना ८ भेद :—

(१) इर्यासुमति, (२) भाषासुमति, (३) एषणासुमति, (४) आयाणभंडमत निखेवणा सुमति, (५) उच्चारपासवणखेल, जल, संघाण परिठावणीआ सुमति, (६) मन गुप्ती, (७) वचन गुप्ती, (८) काय गुप्ती।

तपाचारना बार (१२) भेदः—

छ बाह्य, अने छ अभ्यंतर, ए बार।

छ बाह्य तपनां नाम कहे:---(१) अणसण (२) उनोदरी, (३) वृत्ति संक्षेप, (४) रस परि-

त्याग. (५) काय कलेश, (६) इन्द्रिय प्रतिसंलीनता, ए छ।

अभ्यंतर तपना छ भेदः—

(१) प्रायश्चित, (२) विनय, (३) वैयावच्च, (४) सज्झाय, (५) ध्यान, (६) कायोत्सर्ग एम कुल बार भेद तपाचारना जाणवां तेमां इहलोक परलोकना सुखनी वांछा रहित तप करे, अथवा आजीवीका रहित तप करे ए तपना बार आचार जाणवा।

वीर्याचारना त्रन भेदः—

(१) बल, वीर्य, धर्म काममां गोपवे नहि, (२) पूर्वोक्त ३६ बोलमां उद्यम करे, (३) शक्ति अनुसारे काम करे, एवं ३६ भेद आचार धर्मनां कह्या।

हवे बीजो क्रिया धर्म तेना सीत्तेर भेदना नामः—

चार प्रकारे पिंड विशुद्धि, पांच सुमति,

बार प्रकारनी भावना, साधुनी बार पड़ीमा, पांच इन्द्रिनो निरोध, पचीस प्रकारनी पडीलेहणा, त्रण गुप्ति, चार अभिग्रह, एवं ७० ।

हवे त्रीजा दया धर्म तेना आठ भेदना नाम कहे छे ।

(१) प्रथम स्वदया ते पोताना आत्माने पापथी बचावे ते, (२) पर दया ते बीज़ा जीवनी रक्षा करवी ते, (३) द्रव्य दया ते देखादेखी दया पाले ते, अथवा शरमथी जीवनी रक्षा करवी ते, अथवा कुल आचारे दया पाले ते, (४) भाव दयाते ज्ञानना जोगे करीने जीवने जीवात्मा जाणीने ते उपर अनुकंपा लावी तेनो जीव बचाववो ते, (५) वहेवार दयाते जेवी श्रावकने दया पालवानी कही छे ते साचवे ते घरनां अनेक कामकाज करतां जतना राखवी ते, (६) निश्चे दया ते आपणा आत्माने कर्म-

बंधथी छोडाववो तेनो खुलासो ए छे के पुद्गल परवस्तु छे तेना उपरथी ममता उतारीने तेनो परिचय छांडीने आपणा आत्माना गुणमां रमण करवुं, जीवनुं कर्म रहीत शुद्ध स्वरुप प्रगट करवुं ते निश्चे दया चौदमा गुणस्थानने अंते संपूर्ण लाभे, (७) स्वरूप दया ते कोई जीवने मारवाने भावे पहेलां ते जीवने सारो रीते खवरावे अने शरीरे मातो करे सारसंभाल ले ए दया उपरथी देखाव मात्र छे परंतु पाछलथी ते जीवने मारवाना परीणाम छे ते उत्तराध्ययन सूत्रना सातमा अध्ययने बोकडाना अधिकारथी समजवुं. (८) अनुबंध दया ते जीवने त्रास पमाडे पण अंतरथी तेने साता देवानो कामी छे ते, जेमके माता पुत्रने रोग मटाडवाने अर्थे कडवुं औषध पाय पण अंतरथी तेनुं भलुं चहाय छे तथा जेम पीता पुत्रने भली शीखा-मण आपवा माटे उपरथी तर्जना करे. मारे

पण अंतरथी तेना गुण वधारवा माटे भलुं चहाय छे ।

॥ चोथो स्वभाव धर्म कहे छे ॥

ते जे वस्तु जीव अथवा अजीव तेनी जे प्रणित छे तेना वे भेद:---

तेमां एक शुद्ध स्वभावथी अने बीजो कर्मना संयोगथी अशुद्ध प्रणती छे ते जीवने विषय कषायना संयोगथी विभावना थाय छे, हवे जीव अने पुद्गलने विभाव छे तेने दूर करीने जीव अपणा ज्ञानादिक गुणमां रमण करे ते स्वभाव धर्म अने पुद्गलनो एक वर्ण, एक गंध, एक रस वे फरसमां रमण थाय ते। पुद्गलनो शुद्ध स्वभाव धर्म जाणवो। ए सिवाय बीजां चार द्रव्यमां स्वभाव धर्म छे पण विभाव धर्म नथी ते, चलण गुण, स्थिर गुण, अवकाश गुण, वर्तना गुण ते, पोतपोताना स्वभावेने छोडता नथी ते, माटे शुद्ध स्वभाव धर्म छे, ए चार

बंधथी छोडाववो तेनो खुलासो ए छे के पुद्गल परवस्तु छे तेना उपरथी ममता उतारीने तेनो परिचय छांडीने आपणा आत्मानां गुणमां रमण करवुं, जीवनुं कर्म रहीत शुद्ध स्वरुप प्रगट करवुं ते निश्चे दया चौदमा गुणस्थानने अंते संपूर्ण लाभे, (७) स्वरूप दया ते कोई जीवने मारवाने भावे पहेलां ते जीवने सारी रीते खवरावे अने शरीरे मातो करे सारसंभाल ले ए दया उपरथी देखाव मात्र छे परंतु पाछलथी ते जीवने मारवाना परीणाम छे ते उत्तराध्ययन सूत्रना सातमा अध्ययने बोकडाना अधिकारथी समजवुं, (८) अनुबंध दया ते जीवने त्रास पमाडे पण अंतरथी तेने साता देवानो कामी छे ते, जेमके माता पुत्रने रोग मटाड़वाने अर्थे कड़वुं ओषध पाय पण अंतरथी तेनुं भलुं चहाय छे तथा जेम पीता पुत्रने भली शीखामण आपवा माटे उपरथी तर्जना करे, मारे

पण अंतरथी तेना गुण वधारवा माटे भलुं चहाय छे।

॥ चोथो स्वभाव धर्म कहे छे ॥

ते जे वस्तु जीव अथवा अजीव तेनी जे प्रणित छे तेना वे भेदः---

तेमां एक शुद्ध स्वभावथी अने बीजो कर्मना संयोगथी अशुद्ध प्रणती छे ते जीवने विषय कपायना संयोगथी विभावना थाय छे, हवे जीव अने पुद्गलने विभाव छे तेने दूर करीने जीव अपणा ज्ञानादिक गुणमां रमण करे ते स्वभाव धर्म अने पुद्गलनो एक वर्ण, एक गंध, एक रस वे फरसमां रमण थाय ते। पुद्गलनो शुद्ध स्वभाव धर्म जाणवो। ए सिवाय वीजां चार द्रव्यमां स्वभाव धर्म छे पण विभाव धर्म नथी ते, चलण गुण, स्थिर गुण, अवकाश गुण, वर्तना गुण ते, पोतपोताना स्वभावने छोडता नथी ते, माटे शुद्ध स्वभाव धर्म छे, ए चार

प्रकारनो धर्म जागरण कही ।

यह थोकड़ो टूटी भापामें लिख्यो गयो है सो विद्वानोंके पास विस्तार पूर्वक समझे और पंडित पुरुप शुद्ध करे और ओछो अधिको आगो पाछो अशुद्ध पण लिख्यो होय कुं विद्वान से धारकर सज्जन पुरुप सुधारे और सूत्र प्रमाण कण्ठ पाट करे यही म्हारी खास अर्ज है ।

॥ दोहा ॥

वारवार कर जोरिकें, गुणवंतसूं अरदास ।
अल्पबुद्धि मोहि जाणकें, मति कीज्यो कोई हास्य ।
थोकड़ो लिखी ऐसे करू, पंडित सु अरदास ।
अधिक हीण जो में, कह्यो सुध भांति प्रकाश ।

॥ ओछो अधिको लिख्यो होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं ॥

कलकत्ते में विक्रम सम्वत् १९७८ मगसर सुदी १३ मङ्गलवार तारीख १३ दिसम्बर सन् १९२१ ई० को लिख्यो।

❀ इति श्री नय निक्षेप प्रमाणको थोकड़ो समाप्त ❀

॥ सेवं भंते सेवं भंते तेमव सच्चम् ॥

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

११ द्वार जिसका नाम ।

(१) पहलो नाम द्वार (२) दुजो वर्ण द्वार (३) तीजो गंध द्वार (४) चौथो रस द्वार (५) पांचमो फरश द्वार (६) छठो प्रणाम द्वार (७) सातमो

लक्षण द्वार (८) आठमो स्थानक द्वार (९) नवमो स्थिति द्वार (१०) दसमो गति द्वार (११) एग्यारमो चवन द्वार।

॥ ए इग्यारे द्वारका नाम हुया ॥

---

(१) पहलो नाम द्वार।

(१) पहलो कृष्ण लेश्या (२) दुजो नील लेश्या (३) तीजो कापोत लेश्या (४) चौथो तेजु लेश्या (५) पांचमो पद्म लेश्या (६) छठो शुक्ल लेश्या।

॥ ए छव लेश्याका नाम हुया ॥

---

(२) दुजो वर्ण द्वार ।

कृष्ण लेश्या रो वर्ण—जैसा पाणी सहित आभो कालो, जैसा भैंसारा सिंग काला, जैसा अरिठाका बीज काला, जैसो गाडी रो खंजन कालो जैसी आंखरी टीकी ए थकी घणो अधिक कालो जाणनो ।

नील लेश्या रो वर्ण—जैसो नीलो अशोक वृक्ष, जैसी नील टांसकी पांख, जैसो बेडुरय रतन इणसें घणो अधिक नीलो जाणनो ।

कापोत लेश्या रो वर्ण—जैसो अलसीरो फुल, जैसी कोयलरी पांख, जैसी पारवेरी गरदन, इणसे घणो अधिक बेगणी वर्ण जाणनो।

तेजु लेश्या रो वर्ण—जैसो हींगलुरो वर्ण जैसो धाहड़ी रो फुल, जैसो उगते सूर्य रा वर्ण, जैसी सुवेरी चांच, जैसी दीयेरी लाय

इणसे घणो अधिक रातो वर्ण जाणनो ।

पद्म लेश्या रो वर्ण—जैसी हरताल,हलदी, जैसा सोणरा फुल इणसे घणो अधिक पीलो जाणनो ।

शुक्ल लेश्या रो वर्ण—जैसो शंख, जैसो अंकरतन, जैसो मोगरा रो फुल (मचकुंदरो फुल) जैसो दुधरो फैन, जैसा समुद्ररा फैन, जैसो रूपारो हार, जैसो मोती रो हार, इणसे घणो अधिक सफेद जाणनो।

---

(३) तीजो गंध द्वार ।

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या ए तीन लेश्या रो गंध अप्रसत याने भुंडो— जैसो गांय रो मड़ो, कुत्तरो मड़ो, उटरो मड़ो, सापरो मड़ो उणसे घणो अधिक नष्ट जाणनो ।

तेजु लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्ल लेश्या ए तीन लेश्यारी सुगंध प्रशस्त, नामे-भली-जैसे फुलरी सुगंध निकले इणसे घणी अधिक सुगंध जाणनी।

---

(४) चौथो रस द्वार।

कृष्ण लेश्यारो रस---जैसो कड़वे तुम्बेरो रस, जैसो नीमड़ा रो रस, जैसो कटुक रो रस, जैसो राहीणी नामे वनस्पति रो रस, इनसे घणो अधिक कड़वो।

नील लेश्या रो रस---जैसो सुंठ, पींपल, काली मीर्च, गज पीपलरो रस, इनसे घणो अधिक तीखो।

कापोत लेश्यारो रस---जैसो काचो केरी रो रस, कांचे कोठरो रस इनसे घणो अधिक खाटो रस।

तेजु लेश्यारो रस---जैसो पाके आंबरो रस, जैसो पाके कोठ (कउठ) रो रस इनसे घणो अधिक खटमीठो रस ।

पद्म लेश्यारो रस—जैसो प्रधान वारूणीरो रस, जैसे विविध प्रकारे आसव (आसप) रो रस, जैसो मधु (सहद) जैसो सेलड़ीरो रस, इनसे घणो अधिक मधुर रस ।

शुक्ल लेश्यारो रस---जैसो खजुर रो रस, जैसो द्राखरो रस, जैसो मिश्री रो रस इनसे घणो अधिक मीठो रस जाणनो ।

---

(५) पांचमो फरस (स्पर्श) द्वार ।

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्यारो फरस—जैसो कांतरी धार रो फरस, गायरी

जीभरो फरस, साग पत्रको (साग वृत्तका पत्ता) फरस जैसा बांस पत्तारो फरस इनसे घणो अधिक तीखो खड़खड़ो फरस (स्पर्श) जाणनो।

तेजु लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्ल लेश्या रो फरस—जैसो अकतुलके बुर नामे वनस्पतिको फरस, जैसो माखनरो फरस, जैसो सरसुरे फुलरो फरस, जैसो मखमलरो फरस, जैसो रेशमरा लच्छारो फरस, इनसे घणो अधिक सवालो स्पर्श जाणनो।

(६) छठो प्रणाम द्वार।

लेश्या ना प्रणाम कहे छै—(१) जघन्य (२) मजम (३) उतकृष्ट जगन ना तीन प्रकारे—जगन, मजम, उतकृष्ट ए तीन ने तीन गुणा करना ६ (नव) हुआ, अने नव ने तीन गुणा

करना जद सताइस हुआ, सताइस ने तीन गुणा करना (८१) इकियासी हुआ, इकियासी ने तीन गुणा करना २४३ (दोयसौ तेयालीस) हुआ इतना लेश्यारा प्रणाम जाणना।

---

* व लेश्या तिन प्रकारसे प्रणमें—जगन, मजम, उतकृष्ट ३×३=९ तिजे भाग, ९×३ =२७ तिजे भाग, २७×३=८१ तिजे भाग, ८१×३=२४३ तिजे भाग प्रणमें छेवट अन्तर मुहूर्तरे तिजे भाग तांई प्रणमें।

* आउसो तीजे भाग बंधे, छेवट अन्तर मुहूर्त रे तीजे भाग तांई (आउसो) बंधे *

---

(७) सातमो लक्षण द्वार।

॥ लेश्या स्वरूपं ॥

रुद्रोदुष्टः सदाक्रोधी कलही धर्म्मवर्जितः
निर्दयोवैरसंयुक्तः कृष्णलेश्यउदाहृतः ॥१॥

अलसोमन्दबुद्धिश्च स्त्रीलुब्धः परवञ्चकः
दीर्घरोषी सदामानी नील लेश्यउदाहृतः ॥२॥
चिन्तातुरो विषादी च परनिन्दात्मशंसकः
संग्राम मरणाशंशी प्रोक्तः कोपोत लेश्यकः ॥३॥
विद्यावान करुणासिन्धुः कार्याकार्य विचारकः
लाभालाभे सदा प्रीतिः तेजोलेश्यउदाहृतः ॥४॥
सक्तःक्षमा सदामानी देवार्चनपरायणः
सुशीलश्च सदानन्दः पद्म लेश्यउदाहृत ॥५॥
परात्म कार्य कृत् सुस्थो नाञ्छा शोक विवर्जितः
रागद्वेष परित्यक्तः शुक्ल लेश्यः प्रकीर्त्तितः ॥६॥

॥ इति लेश्या स्वरूपम् ॥

श्लोक--संक्षेपोक्तं मतिंहन्ति विस्तरोक्तं न शृण्वते
संक्षेपविस्तरोहित्वा वक्तव्यंयद्विचित्तं ॥१॥

॥ लक्षण ॥

कृष्ण लेश्याका लक्षण—(१) पांच आश्रव में प्रवर्ते, (२) गुप्तीको अगुप्ती, (३) छ कायांरो

अव्रती, (४) तव्र आरंभको प्रणामी, (५) द्रोही (६) पापरे विपे साहसिक, (७) निधंस प्रणामी, (८) पाप करतां सुग रहित, (९) निर्दयी, (१०) अजितेंद्री ।

नील लेश्याका लक्षण—(१) ईर्षावन्त, (२) अमृसवन्त, (३) सामलेरा गुण सह नहीं सके, (४) घणो कदाग्री, (५) तप रहीत, (६) भली विद्या रहित, (७) माया पापथकी लाजे-नहीं, (८) द्वेपी, (९) गिर्धी, (१०) धूर्त, (११) प्रमादी, (१२) रस रो लोलूपी, (१३) सातारो गवेखी, (१४) आरंभी अव्रती, (१५) द्रोही, लंपटी, (१६) पापरे विपे साहसिक ।

कापोत लेश्याका लक्षण---(१) वांको वांको प्रवर्ते, (२) निवढ माया सहित, (३) सरल पणे रहित (४) आपण दोप ढाके, (५) कटुक भाव सहित, (६) मिथ्या दृष्टि, (७) अनार्यकर्म करनेवालो, (८) अलीक (झुठो) वचन बोले,

(६) माथे चटको उपजे ईसो बोले, (१०) दुष्ट वचन बोले, (११) चोरी करनेवालो, (१२) पराई सम्पदा देख सके नहीं, (१३) पाप वेपार सहित होय ।

तेजु लेश्यारा लक्षण---(१) मन, (२) वचन, (३) काया ए तीनोरा योग नीचा प्रवर्तावे नहीं, (४) मानरहित, (५) चपलपणे रहित, (६) मायारहित, (७) कौतूहलपणे रहित, (८) विनीत, (६) विनय करनेमें सावधान (१०) इन्द्रियका दमनहार, (११) मन, वचन, कायारा योग भला प्रवर्तावे, (१२) सिद्धान्त भणे, उपादान तप करे, (१३) थोड़ो बोले, (१४) जितेन्द्री पीयेधर्मा, (१५) दृढ़ धर्मी (१६) पापसे डरे मुक्तिको वंछणहार ।

पद्म लेश्यारा लक्षण---(१) क्रोध, (२) मान, (३) माया, (४) लोभ ए च्यार (कषाय) पतली करे, (५) राग, (६) द्वेष ए दोय उप-

समावे, (७) प्रशान्त चित्त, (८) आत्माका दमणहार (९) मन, वचन, कायारा योग भला प्रवर्तावे, (१०) लज्जा (लज्जा) उपादान तपकरे, (११) थोड़ो बोले, (१२) जितेन्द्री, (१३) उपशांत आत्मा रो धणी होवे ।

शुक्ल लेश्यारा लक्षण---(१) आर्त-ध्यान, (२) रूद्र-ध्यान ए दोय ध्यान वर्जे, (३) धर्म-ध्यान शुक्ल-ध्यान ए दोय ध्यान ध्यावे (५) आर्त-ध्यान (६) रूद्र (रौद्र) ध्यान ए दोय सर्वथा रहित, (७) धर्म ध्यान, (८) शुक्ल-ध्यान ए दोय सर्वथा ध्यावे, (९) आतमा रो दमणहार, (१०) पांच सुमति सहित, (११) तीन गुप्ती सहित, (१२) सरागी, (१३) वीतरागी, (१४) मन, वचन, कायारा योग भला प्रवर्तावे ।

॥ पाठान्तर ॥

कृष्ण लेश्या रा लक्षण—पांच आश्रवको सेवणहार मन,वचन, काया रा योग ठिकाणे

नहीं राखे, छव कायारी हिंसा करे, आरंभ रे विषे तिव्र प्रणाम हुवै, द्रोही, पापरे विषै साहसिक निधंस प्रणामी, सुग रहित, अजितेन्द्री इसा योग प्रवर्ते सो कृष्ण लेश्या रा लक्षण जाणना।

नील लेश्यारा लक्षण—इर्षा करे अमर्ष आणे, अतपस्वी, मायाविया, तपस्या करे सो सुहावे नहीं, पाप करतो लाजे नहीं, गिरधी, द्वेषी, धूर्त, प्रमादी, रसरो लोलूपी, मायागवेषी, आरंभरो अव्रती, द्रोही, पापरे विषे साहसिक ऐसा जोग प्रवर्ते सो नील लेश्या रा लक्षण जाणना।

कापोत लेश्यारा लक्षण—वांको वहे (वाको चले) निवढ माया करे, सरलपणा रहित मिथ्यात्वी, अनार्य दुष्ट वचन बोले, मच्छर भाव आणे इसा जोग प्रवर्ते सो कापोत लेश्या रा लक्षण जाणना।

लोलूपी होवें, निन्दाको कर्णहार, चोरी करें, आरम्भ घणो करे, सत्तरो गवेषी, अब्रह्मचारी अव्रती, (अपचखाणी), अजितेन्द्री होवें ऐसा योग समाचरे सो नील लेश्याका लक्षण जाणिये ।

कापोत लेश्याका लक्षण (प्रणाम)—वांको चाले, वांकी करतुत समाचरे, निवड माया करें, अविवेकी होवें, प्रपंच करे, माया कपटाई करें, मिथ्यात्व के विषे रातो, अनार्य कर्म करें, तिव्र प्रणामें रीस करें, दुष्ट वचन वोले, चोरी करें, माठा लक्षण सेवें, मच्छर घणो करे ऐसा योग समाचरे सो कापोत लेश्याका लक्षण कह्या ।

तेजु लेश्याका लक्षणरा प्रणाम—न्ययवादी होवें, चपलाइ रहित होवें, कपट माया रहित होवें, कौतूहल रहित होवें, विनयवंत आत्मा होवें, विनय सहित इन्द्री दमें, मन वचन काया का योग ठिकाणे रावें, योगहीण न पाडे

सभ्यके विषे, प्रिय धर्मी होवे, दृढ़ धर्मी होवे, पाप करतो डरै (बीहै) हितको वंछण हार होवे, ऐसा योगसें संयुक्त होवे सो तेजु लेश्याका लक्षण जाणना।

पद्म लेश्याका लक्षण—क्रोध-मान-माया-लोभ पतलो, (क्रोधादिक उपसम) निर्म्मलचित्त इन्द्रीका दमणहार, योग या तप क्रियाका करण हार, उवहांण या उपधान तपको कर्णहार, थोड़ो बोले उपसंत, मन जितेन्द्री ऐसा योग करी संयुक्त होवे सो पद्म लेश्याका लक्षण जाणो।

शुक्ल लेश्याका लक्षण—आर्त्त-रूद्र-ध्यान वर्जे धर्म ध्यान-शुक्ल ध्यान धावे, प्रशन्नचित्त आत्मारो दमणहार, पांच सुमते सुमता, तीन गुप्ते गुप्ता, सरागी तथा वीतरागी, उवसंत-जितेन्द्री, ऐसा लक्षण करी सहित होवे सो शुक्ल लेश्याका लक्षण जाणीजो।

---

(८) आठमो स्थानक द्वार।

स्थानक (ठीकाणा) असंख्याती उत्सरपणी, उपसरपणीरा जितना समय होवें तथा जितना असंख्याता लोक आकाश प्रदेश होवें इतना एक एक लेश्यारा स्थानक जाणना ।

अल्पाबहुत ।

कापोत लेश्यारा स्थानक सबसु थोड़ा।

नील लेश्यारा स्थानक कापोत लेश्या सें असंख्यात गुणाघणा ।

कृष्ण लेश्यारा स्थानक नील लेश्यासें असंख्यात गुणाघणा ।

तेजु लेश्यारा स्थानक कृष्ण लेश्यासें असंख्यात गुणाघणा ।

पद्म लेश्यारा स्थानक तेजु लेश्यासें असंख्यात गुणाघणा ।

शुक्ल लेश्यारा स्थानक पद्म लेश्यासें असंख्यात गुणाघणा ।

---

(९) नवमो स्थिति [थिति] द्वार ।

कृष्ण लेश्यारी स्थिति—जगन अन्तर-मुहूर्त उतकृष्टी ३३ सागर पल्योपम अने अन्तर मुहूर्त अधिक ।

नील लेश्यारी स्थिति---जगन अन्तर मुहूर्त उतकृष्टी १० सागर पल्योपम अने पल्योपम (पल) रे असंख्याता भाग अधिक ।

कापोत लेश्यारी स्थिति—जगन अन्तर मुहूर्त उतकृष्टी ३ सागर पल्योपम अने पल्यो-पम रे असंख्याता भाग अधिक ।

तेजु लेश्या री स्थिति---जगन अन्तर मुहूर्त उतकृष्टी २ सागर पल्योपम अने पल (पल्योपम) रे असंख्याता भाग अधिक ।

पद्म लेश्या री स्थिति---जगन अन्तर मुहूर्त उतकृष्टी १० सागर पल्योपम अने अन्तर मुहूर्त अधिक ।

शुक्ल लेश्या री स्थिति---जगन अन्तर मुहूर्त उतकृष्टी ३३ सागर पल्योपम अने अन्तर मुहूर्त अधिक ।

ए समुच्चय लेश्याकी स्थिति कही ।

॥ हवे च्यार गतिके लेश्याकी स्थिति ॥

नारकी री लेश्या री स्थिति---कापोत लेश्या री स्थिति---जगन १० हजार वर्ष उतकृष्टी ३ सागर पल्योपम, पल्योपम रे असंख्यातमें भाग अधिक ।

नील लेश्यारी स्थिति---जगन ३ सागर

जाफेरी उतकृष्टी १० सागर, पल्योपमरे असं-ख्यातमें भाग अधिक ।

कृष्ण लेश्यारी स्थिति—जगन १० सागर उतकृष्टी ३३ सागर पल्योपम, अन्तर मुहूर्त अधिक ।

छद्मस्थ मनुष्य तथा तीर्यचरी लेश्यारी स्थिति—पेहलड़ी पांच लेश्यारी स्थिति--जगन तथा उतकृष्टी अन्तर मुहूर्त शुक्ल लेश्यारी स्थिति केवली आश्री जगन अन्तर मुहूर्त उत-कृष्टी नव वर्ष उणी कोड़ पूर्वरी ।

देवतारी लेश्यारी स्थिति--भवनपति, वाण-व्यंतर ए दोयमें कृष्ण लेश्यारी स्थिति—जगन १० हजार वर्ष री उतकृष्टी पलरे असंख्यातमें भाग, नील लेश्यारी स्थिति जगन कृष्ण लेश्याकी उतकृष्टी स्थितिसें एक समय अधिक अने उतकृष्टी पलरे असंख्यातमें भाग, कापोत लेश्यारी स्थिति जगन नील लेश्यारी उतकृष्टी

स्थितिसें एक समय अधिक, उतकृष्टी पलरे असंख्यातमें भाग, तेजु लेश्यारी स्थिति जगन १० (दस) हजार वर्षरी उतकृष्टी २ सागर पल्योपम अने पलरे असंख्यातमें भाग अधिक, वैमाणिक देवतारी स्थिति—पद्म लेश्यारी—जगन, तेजु लेश्यारी उतकृष्टी स्थितिसें एक समय अधिक उतकृष्टो १० सागर अने अन्तर मुहूर्त अधिक, (वैमाणिक देवतारी स्थिति) शुक्ल लेश्यारी—जगन, पद्म लेश्यारी उतकृष्टी स्थितिसें एक समय अधिक उतकृष्टी ३३ सागर ओपम अन्तर मुहूर्त अधिक ।

---

(१०) दसमो गति द्वार ।

लेश्यारे पहले समय और छेले समय जीव न मरे और न उपजे विचमें (मज्झम

हरकोई समय मरे उपजे) जो समय होवै उसमें जीव मरै तथा उपजै ।

॥ विशेष ॥

(१) कृष्ण लेश्या (२) नील लेश्या (३) कापोत लेश्या ए तीन लेश्या अधर्मी ते कारण दुर्गति कही।

(४) तेजु लेश्या (५) पद्म लेश्या (६) शुक्ल लेश्या ए तीन लेश्या धर्मी ते कारण सुगति कही।

लेश्याका नाम		६ लेश्यारी जघनगति	६ लेश्यारी मध्यगति	६ लेश्यारी उत्कृष्ट गति
कृष्ण लेश्या	..	भवनपति, वाणव्यंतर, अनार्य मनुष्य ।	स्थावर, विकलेन्द्री, तिर्यंच पंचेन्द्री ।	पांचमी, छठी, सातमी, नर्क ।
नील लेश्या	..	भवनपति, वाणव्यंतर, कर्मभूमि मनुष्य ।	स्थावर विकलेन्द्री तिर्यंच पंचेन्द्री ।	तीसरी, चौथी नर्क ।
कापोत लेश्या	...	भवनपति, वाणव्यंतर, मनुष्य अन्तरद्विपा ।	स्थावर, विकलेन्द्री, तिर्यंच पंचेन्द्री ।	पहली, दूसरी, तीसरी नर्क
तेजू लेश्या	...	पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, मनुष्य-जुगलिया ।	भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, तिर्यंच पंचेन्द्री	पहला, दूसरा स्वर्ग
पद्म लेश्या	...	तीसरा स्वर्ग	चौथा स्वर्ग	पांचवां स्वर्ग ।
शुक्ल लेश्या	...	छठे स्वर्गसे बारहवें स्वर्ग तक ।	नवग्रैवेयक च्यार अनुत्तर विमान ।	सर्वार्थ सिद्ध विमान

यह आगम प्रमाण अनुमानसे जाणा जावे ।

(११) इग्यारहमो चवण द्वार

चवण—जो गति जीव जाय उसी गतिरी मरते तथा उपजते वखत लेश्या आवे तथा इण भवरी जैसी मरती वखत लेश्या होवे वैसी लेश्यामें उपजणा होवै ।

लेश्या प्रणमती वखत पहले समय तथा लेश्यारे छहले समय चवै तथा उपजै नहीं वीचमें असंख्याता समा चवै तथा उपजै ।

श्रीउत्तराध्ययन अध्यायन ३४ मो लेश्या—द्वार चाल्यो है।

॥ लेश्या लाभे याने पावे सो कहे छै ॥

पेहली, दुजी नारकीमें लेश्या लाभे (पावे), एक कापोत तीजी नारकीमें कापोतरा थोड़ा, नीलरा घणा, चौथी नारकीमें लेश्या सिर्फ एक नील लाभे, पांचमी नारकीमें नीलरा थोड़ा,

कृष्णरा घणा, छठी नारकीमें लेश्या पावे एक कृष्ण, सातमी नारकी में लेश्या एक महा कृष्ण ।

१० भवनपतिमें लेश्या पावे ४ (कृष्ण, नील, तेजु, कापोत) ।

पृथ्वी कायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३ पेहलड़ी ।

पृथ्वी कायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे ४ पेहलड़ी ।

अपकायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३ पेहलड़ी ।

अपकायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे ४ पेहलड़ी ।

वनस्पति कायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३ पेहलड़ी ।

वनस्पति कायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे ४ पेहलड़ी ।

तेउकायमें, वाउकायमें, ३ विकल इन्द्रियमें लेश्या पावे ३ पेहलड़ी ।

गर्भज तिर्यंच पंच इन्द्रीमें तथा गर्भज मनुष्यमें लेश्या पावे छव ।

छमोछम तिर्यंच पंच इन्द्री तथा छमोछम मनुष्यमें लेश्या पावे ३ पेहलड़ी ।

वाणव्यंतर देवतामें लेश्या पावे ४ पेहलड़ी।

जोतिषी तथा पहले, दुजे देवलोकमें लेश्या पावे एक, तेजु तीजे, चौथे, पांचमें देव-लोकमें लेश्या पावे एक पद्म, छठेसे लगायकर जाव स्वार्थ सिद्ध ताइ लेश्या एक शुक्ल सिद्ध अलेसी होवे ।

इति लेश्याको थोकड़ो समाप्त ।

॥ कलकत्ता पौष वदी १० शनिवार सं० १९७८,
ताः २४ दिसम्बर सन् १९२१ ई० ॥

—·—

चाणक्यनीतिसार दोहावलि ।

शास्त्र पठन से होत है,
कीरति इस जग मान ।
सुखी होत परलोक में,
शास्त्र गुरुगम जान ॥१॥

शास्त्र के पढ़ने से इस लोक में कीर्ति होती है और जिस का इस लोक में यश है वह परलोक में भी सुखी होता है, इस लिये शास्त्र गुरु के द्वारा अवश्य पढ़ना चाहिये ॥ १ ॥

इल्म पढ़न उद्यम करो,
वृद्ध काय पर्यन्त ।
इल्म पढ़े पहुँचे जहां,
नहिं पहुँचे धनवन्त ॥२॥

बुढ़ापा आ जावे तब भी विद्या पढ़ने का यत्न करते ही रहना चाहिये, देखो! जिस जगह धनवान् नहीं जा सकता उस जगह विद्यावान् पहुँच सकता है ॥ २ ॥

सत्य शास्त्र के श्रवण से,
चीन्हैं धर्म सुजान ।
कुमति दूर व्है ज्ञान हो,
मुक्ति ज्ञान से मान ॥३॥

सच्चे शास्त्र के सुनने से बुद्धिमान् जन धर्म को अच्छी तरह पहिचानते हैं, शास्त्र के श्रवण से खराब बुद्धि दूर होकर ज्ञान होता है और ज्ञान से मुक्ति अर्थात् अक्षय सुख मिलता है ॥३॥

नहिं होवै जिस शास्त्र से,
धर्म प्रीति वैराग ।
निकम्मा श्रम तहँ क्यों करो,
वृथा लवै ज्यों काग ॥४॥

जिस शास्त्र के सुनने से न तो वैराग्य हो और न धर्म में ही प्रीति हो. ऐसे शास्त्र में व्यर्थ परिश्रम नहीं करना चाहिये, क्योंकि इस का पढ़ना काकभाषा के समान है ॥४॥

चरण एक वा अर्द्ध पद,
नित्य सुभाषित सीख ।
मूरख हू पण्डित हुवै,
नदियन सागर दीख ॥५॥

एक पद अथवा आधा पद भी प्रतिदिन सुभाषित का सीखे

से मूर्ख भी पण्डित हो सकता है, जैसे देखो! बहुत सी नदियों के इकट्ठे होने पर सागर भर जाता है ॥५॥

महा वृक्ष को सेविये,
फल छाया युत जोय ।
दैव कोप करि फल हरें,
रुके न छाया कोय ॥६॥

बड़े वृक्ष का सेवन करना चाहिये जो कि फल और छाया से युक्त हो, यदि दैव के कोप से फल न मिले तो भी छाया को कौन रोक सकता है ॥६॥

गुरु छाया अरु तात की,
बड़े भ्रात की छांह ।
राजमान छाया गहिर,
दुर्लभ है जहँ तँह ॥७॥

गुरु की छाया, बाप की छाया, बड़े भाई की छाया और राजा से आदर मिलनेका छाया (ये छाया मिलने से जगत में सब प्रकार से मनुष्य सुख रहता है परन्तु) ये छाया हर जगह मिलनी कठिन हैं ॥७॥

अतिहिं दान तें बलि बँध्यो,
दुर्योधन अति गर्व ।

अति छवि सीता हरण भो,
अति तजिये थल सर्व ॥८॥

बहुत दान के कारण बलिराजा (विष्णुकुमार मुनि के हाथ से) बांधा गया, बहुत अहंकार के करने से दुर्योधन का नाश हुआ और बहुत छवि के कारण सीता हरी गई, इस लिये अति को सब जगह छोड़ना चाहिये ॥८॥

क्षमा खड्ग जिन कर गह्यो,
कहा करै खल कोय।
विन ईंधन महि अग्नि परि,
आपहि शीतल होय ॥९॥

क्षमारूपी तलवार जिस के हाथ में है उस का कोई दुष्ट क्या कर सकता है, जैसे ईंधनरहित पृथिवी पर पड़ी हुई अग्नि आपही बुझ जाती है ॥९॥ ॥ इतिशुभम् ॥

॥ दोहा ॥

निवासी बीकानेरका जैन श्वेताम्बर जाण।
औसवंशमें सेठीया, श्रावक भैरोदान ॥
बहु ग्रंथे संचै कियो, अल्पबुद्धि अनुसार।
भूल चूक दृष्टि पड़े, लीजे विद्वान सुधार ॥

ॐ

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

सेवंभंते सेवंभंते गौतम बोले सही, श्री महावीरके वचनमें कुछ सन्देह नहीं। जैसा लिखा हुआ देख्या, वांच्या या सुणया वैसा ही अल्प बुद्धिके अनुसार लिखा है, तत्व केवली गम्य अक्षर, पद, ह्रस्व, दीर्घ, कानो, मात, मिंडी, ओछो अधिको, आगो पाछो, अशुद्ध पण लिख्यो होय अथवा कोई तरहको छपानेमें ज्ञानादिक की विराधना कीनी होय, जाणते अजाणते कोई दोष लाग्यो होय तो सकल श्री संघके साखसें मन वचन काया करी मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति [illegible] ॥

पत्र व्यवहार नीचे लिखे हुये पतेसे करें और पता नागरी व अंग्रेजीमें साफ हरफोंमें पूरा लिखें।

पुस्तक मिलनेका पता—

बीकानेर

श्री जैन भाइयोंकी विद्यालय,

मोहल्ला—मरोटियोंका

पाठशाला अगरचन्द भैरोदान सेठियाकी कोटड़ीमें

बीकानेर राजपुताना।

(मारवाड़, जोधपुर-बीकानेर रेलवे)
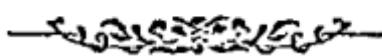
The Jain National Seminary

SCHOOL

SETHIA BUILDINGS

MOHALLA MAROTIAN.

Bikaner Rajputana (J. B. Ry)